

❀ श्री कृष्णःशरणम् ❀

दयासागर प्रभू श्री गोवर्द्धननाथजी हम यह ग्यारहवें
पुष्पाञ्जलि चरणारविन्द में समर्पण करने लाये हैं
श्री गोवर्द्धन ग्रंथमाला रूपी इस बाटिका में सदैव
नवीन नवीन पुष्प विकसित होते रहें, हम
सेवकों की यह ही भावना है

❀ हम हैं आपके दासानुदास ❀

सुरेन्द्र कुमार
बी. ए. प्रभाकर
संरक्षक



निरंजनदेव शर्मा
व्यवस्थापक

❀ श्री गोवर्द्धन ग्रन्थ माला समिति ❀

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है ।
याद रत्निये—समस्त पुष्टि मार्गीय एवं बुजभाषा साहित्य
तथा धार्मिक पुस्तकें मिलाने का एक मात्र स्थान

पुष्टि मार्गीय पुस्तकों का केन्द्र

श्री बजरंग पुस्तकालय, दाऊजीघाट, मथुरा ।

व्यवस्थापक—निरंजनदेव शर्मा का सादर भगवद् स्मरण ।

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने :-

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने

॥ श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने ॥

(संस्कृतस्योद्दिष्टवने)

वि० सं० १६३७ की संस्कृतस्योद्दिष्टवने

★

संस्कृतस्योद्दिष्टवने

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने



प्रकाशक

पुस्तकालय का केन्द्र-

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने पुस्तकालय, दाऊजी-घाट,

मथुरा ।

प्रथम आवृत्ति
१९००

वसन्त पंचमी सं० २०१५

श्रीगोवर्धनस्योद्दिष्टवने
दो रुपया

याद रखिये

हमारा मुख्य सिद्धान्त पुष्टिमार्गीय साहित्य का प्रचार करना है १६ वर्षों तक सतत प्रयत्न करके हमने समस्त पुष्टिमार्गीय साहित्यप्रकाशन संस्थानों से सम्पर्क स्थापित कर लिया है वर्तमान समय में संस्कृत, वृजभाषा, हिन्दी, गुजराती, इंगलिश में जो भी पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं वह समस्त ग्रन्थ पर्याप्त संख्या में हमारे यहाँ मिलते हैं, और इसके अलावा हमारे यहाँ भी पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं। अन्य पुष्टिमार्गीय प्रकाशक यदि अपने यहाँ के प्रकाशित ग्रन्थ ही अपने यहाँ रखने हैं परन्तु हमारे यहाँ सभी प्रकाशकों के प्रकाशित ग्रन्थ उपरोक्त भाषा में उनी न्यौछावर में मिलते हैं, इसके अतिरिक्त वृजभाषा साहित्य एवं सभी प्रकार की धार्मिक पुस्तकें भी हमारे यहाँ मिलती हैं, अलग २ स्थानों में पुस्तकें मंगाने के बजाय एक ही स्थान में मंगाने में समर्थता और पैसों की काफी बचत होती है। अतः हमारी समस्त संस्थाओं में जनों से नानुगोष प्रार्थना है कि पुष्टिमार्गीय, वृजभाषा साहित्य एवं धार्मिक पुस्तकें मंगाने समय हमें याद रखते हुए एक बार अपनी तथा अपने सम्बन्ध मंडलों की सेवा करने का सुअवसर अवश्य प्रदान करें। विशेष जानकारी के लिए वृजभाषा मन्त्रालय मुफ्त मंगावे १००

255080

चिनीत

निरञ्जनदेव शर्मा

व्यवस्थापक:—पुष्टिमार्गीय पुस्तकों का केन्द्र

श्रीवज्रंग पुस्तकालय, दाऊजीघाट भथु

प्रस्तावना

प्रस्तुत ग्रन्थ वि० सं० १६६७ की प्रतिलिपी है । इसका मिलान कांकरौली की वि० सं० १६६७ की लिखी ८४ वार्ता से किया गया है जिसमें निज वार्ता और श्री गुसाईं जी के अष्ट द्वापी चार सेवकों की वार्ताएँ भी सम्मिलित हैं । अतः इसकी प्राचीनता में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता । यह प्रति मुझे अपनी शोध में मिली है ।

बहुत दिन से मेरा विचार था कि इस प्रति को मैं प्रकाशित कर बम्बई आदि से प्रकाशित निजवार्ता घरुवार्ता की प्रति की अप्रामाणिकता को इतिहास-प्रिय जनता के समक्ष स्पष्ट करूँ । किंतु अनेक कार्यावशात् मैं इसे प्रकाशित नहीं करा सका । जब श्रीबजरङ्ग पुस्तकालय के व्यवस्थापक श्री निरञ्जनदेव शर्मा ने जो कि कुछ समय से प्रतिवर्ष छोटी, मोटी दो-तीन सांप्रदायिक पुस्तकें प्रकाशित करते हैं मुझ से कहा कि इस वर्ष आप कोई पुस्तक हीजिये जिसको मैं प्रकाशित करा सकूँ । मुझे उसी समय यह पुस्तक याद आई जो न तो बकी ही है न मिलकुल छोटी ही । उन्होंने शीघ्र ही इस पुस्तक को छपाना शुरु किया । मैंने इस पुस्तक में चलती लिपि में आये 'भाषप्रकाश' को अलग छांट दिया और प्रूफ देखने आदि की सारी ज़ुम्मेवारी श्री शर्मा जी के ऊपर छोड़ दी । क्योंकि मैं जादातर बाहर लम्बता रहता हूँ इसलिये प्रूफ आदि देखने का कार्य नियमित रूप से मैं नहीं कर पाता हूँ । -

पुस्तक छपी हुई देख कर मुझे यह सन्तोष हुआ कि इसमें प्रूफ की उतनी गलतियाँ नहीं पथी गईं जितनी 'श्री विद्वलेश चरित्रामृत' में पूर्व पाई गई थीं । अस्तु

प्रस्तुत पुस्तक जो 'निज वार्ता घरु वार्ता' के नाम से प्रसिद्ध है इससे आचार्य जी के चरित्र और सामर्थ्य पर काफी प्रकाश पड़ता है । यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि 'निजवार्ता—घरुवार्ता' की

रचना ८४ वैष्णव की वार्ता के अनन्तर ही हुई है, क्योंकि इसमें ८४ वार्ता के उल्लेख कई स्थानों पर मिलते हैं। इसमें जो 'भावप्रकाश' है वह भाषा और लेखन शैली की दृष्टि से ८४ वार्ता के 'भावप्रकाश' से बहुत कुछ मिलता है। अतः इसके संकलन और रचना का सारा श्रेय गो० श्रीहरिरायजी को ही दिया जा सकता है।

इससे आचार्य-चरित्र पर इस प्रकार प्रकाश पड़ता है—

जन्म सम्बन्ध—

१—इसमें महाप्रभू वल्लभाचार्यजी का प्राकट्यकाल वि० सं० १५३५ जिन पंक्तिओं से सिद्ध होता है वे इस प्रकार हैं—

“सो श्रीवलदेवजी श्रीगोपीनाथजी होइकें अडेल में सं० १५६७ आश्विन कृष्ण १२ के दिन प्रगट भये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तीस वर्ष की वय कों अङ्गीकार किये हते ।” श्रीगोपीनाथजी के प्राकट्य का उक्त समय चैत्री सम्बत् है । अतः दक्षिण-गुजरात में प्रचलित कालिकी सम्बत् १५६६ होता है । इस समय श्रीआचार्यजी तीस वर्ष को पूर्ण कर चुके थे । इस हिसाब से आचार्यजी के प्राकट्य का सम्बत् १५३५ सिद्ध होता है । जो सम्प्रदाय के श्रीनाथजी प्रभृति सभी चरों में एकमत से स्वीकृत है, और ज्योतिष एवं आचार्यजी के अतरंग सेवक विष्णुदास प्रभृति सेवकों के पदों से भी निश्चित है ।

इस प्रसङ्ग का उल्लेख बम्बई से प्रकाशित 'निजवार्ता-परुवार्ता' में नहीं मिलता है । उसमें जहाँ प्रायः ४० प्रसङ्ग बनाये गये हैं वहाँ बसन्त सम्बत्ता की भरमार भी दिखाई गई है, जो किसी भी हस्त-लिखित प्राचीन ग्रन्थ में वे प्रसङ्ग और सम्बत्ते नहीं मिल रही है । उस प्रकाशित प्रति में खास ध्यान देने योग्य तो वह प्रसंग है जिसमें श्रीआचार्यजी के प्राकट्य का सं० १५२६ ज्योतिष चक्र से श्रीगोकुलनाथजी (चतुर्थ पुत्र) के मुख द्वारा कालनाथा है । ऐसे झूठे और

कल्पित प्रसंगों की अप्रामाणिकता इस प्राचीन हस्त प्रति से स्पष्ट हो जाती है। इस प्रति में श्रीगोपीनाथजी और श्रीविठ्ठलनाथजी के प्राकट्य संवत्तों के सिवाय अन्य कोई घटना के संवत्तों का उल्लेख ही नहीं है। इससे हीर नीर न्याय वाले विवेकी पाठक उन संवत्तों की कल्पितता को जान सकते हैं। अस्तु

२—श्रीगोपीनाथ जी के प्राकट्य वाले उक्त उल्लेख में श्रीगोपीनाथजी का प्राकट्य समय वि० सं० १५६७ के आश्विन (गुजराती भादों) कृष्ण १२ बताया गया है, जो कि सम्प्रदाय के श्रीनाथजी प्रभृति सभी चरों में उस दिन आज प्रायः ४५० वर्षों से माना जा रहा है। जो लोग बहुचर्चित के श्रीगोपालदासजी द्वारा वाले के सं० १५७० और भादों वदी १० वाले कथन को पुष्ट करने के लिये यहाँ तक लिखते हैं कि सर्वत्र खोज करने पर भी कृष्ण १२का प्राचीन उल्लेख कहीं नहीं मिलता है वे सत्य से कितने दूर हैं वह इससे जाना सकता है, कृष्णदास अष्टह्राप वाले के पद भी श्रीगोपीनाथजी के उक्त समय की स्पष्ट रूप में पुष्टि करते हैं।

३—श्रीगुसाईजी का प्राकट्य समय वि० सं० १५७२ के पौष कृष्ण नौमी का उल्लेख गोविन्द स्वामी आदि अनेक समकालीन सेवकों के पदों में बहुलता से मिलता है।

इस प्रकार इस प्रति से तीन प्राकट्य संवत्त प्रामाणिक रूप में उपलब्ध होते हैं।

सामर्थ्य—

पुष्टिमार्ग अर्थात् भगवद् अनुग्रह मार्ग के प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी के निजी चरित्र में यदि भगवद् अनुग्रह की सामर्थ्य व्यक्त न हो तो पुष्टिमार्ग की विशेषता कैसे जानी जा सकती है? अनुग्रह का स्वरूप सुर ने सामान्यरूप में इस प्रकार गाया है—

बंदों श्रीहरि पद सुखदाई ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंबे, अंधे कों सब कछु दरसाई ॥

बहिरो सुने गूंग पुनि बोले, रंक चले सिर छत्र धराई ।

‘धूरदास’ स्वामी करुणामय, बार-बार बंदों तिहि पाँई ॥

इससे यह स्पष्ट है कि भगवद् अनुग्रह की सामर्थ्य अघटित घटना को भी घटा सकती है । इसके प्रत्यक्ष दृष्टान्त रूप में पंगु किरौरी थाई (२५२ की वार्ता) जन्म से अन्धे सूरदास (८४ वार्ता) गूंगे गोपालदास और रंक नरहरिदास (८४ वार्ता) आदि के चरित्र हैं, जिनमें पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी एवं उनके सुपुत्र श्रीविद्वत्नाथजी के अनुग्रह बल का स्पष्टीकरण हुआ है । जो दूसरों के ऊपर अनुग्रह करके अघटित घटना को घटा सकता है वह क्या मामान्य मनुष्यों की तरह आधि, व्याधि और उपाधियों के बंधन में रह सकता है ? शास्त्रोक्त प्रमाणों से भी जो सम्पूर्ण शास्त्रों का जानकार हो जाता है वह ‘स्वयं प्रकाश’ एवं ‘सर्वज्ञ’ होता है । इस अवस्था में वेद पारंगत, सर्व शास्त्रविद, अनुग्रह मार्ग के प्रकटकर्ता, परमेश्वर श्रीकृष्ण को इसी जीवन में साक्षात् करने वाले और दूसरों को भी कराने वाले आचार्य चरण के निजी चरित्रों की अलौकिकता में क्या सन्देह रह जाता है ? और वह भी उस समय जब कि इन अलौकिक चरित्रों की पुष्टि स्वयं आचार्य चरण ही अपने मन्त्रों में इस प्रकार करते हैं—

(१) वैश्वानर एवं वाक्पतित्व रूप की उक्ति—

“अथ तस्यविवेचितुं न हि विमु वैश्वानराद् वाक्पते”

—सुबोधिनी

(२) भगवत्साक्षात्कार की उक्ति—

भावयन्स्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशिः ।

साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ॥ सिद्धान्त रहस्य

(३) भगवदाज्ञा की स्पष्टोक्ति—

आज्ञा पूर्व तु या जावा गंगासागर संगमे ।

यापि परचान्मधुवने न कृतं तद्द्वयं मया ॥

वेद देश परित्याग स्तृतीयो लोक गोचरः । अन्तःकरण प्रबोध

शास्त्र और विज्ञान से भी यह सिद्ध है कि जिन्होंने अपने चंचल और पवन से भी अतिवेग वाले अजेय मन को जीत लिया है और उसको कृष्ण में निरुद्ध कर लिया है वह न केवल विश्व को ही किन्तु कृष्ण को भी अपने अधीन कर लेता है। जो ब्रह्म किसी के भी बंधन में नहीं आता है वह इस निरुद्ध गति वाले भक्त के हृदय में बंध जाता है—आचार्यजी ऐसे ही निरुद्ध गति को प्राप्त हुए थे। इस बात को वे स्वयं इस प्रकार कहते हैं—

“अहं निरुद्धोरोधेन निरोध पदवी गतः” — ‘निरोध लक्षण’

आपके हृदय में निगम प्रतिपादित ‘रसो वै स’ परब्रह्म कृष्ण अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित विराजमान हैं इस बात को भी आप इस प्रकार कहते हैं—

‘नभामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धिशायिनम् ।

लक्ष्मीसहस्र लोका भीः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥

आचार्यजी की वक्त स्पष्टोक्तियाँ गीता के श्रीकृष्ण की दीसवाई हुई ‘अतोऽस्मि लोक वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः’ इस आर्य-मणाली का निर्वाह करती है। जब तक आचार्यजी अपने स्वरूप को लोगों के समझ बाखी और चरित्रों से स्पष्ट न करें तब तक वे दूसरों के बद्धार

में समर्थ है या नहीं यह किस प्रकार जाना जा सकता है ? इसी लिये सभी आचार्यों ने भारतीय आर्य-प्रणाली के अनुसार अपने-अपने स्वरूपों का वर्णन किया है और अपने चरित्रों से तदनुरूप सामर्थ्य को भी स्पष्ट की है ।

इस आचार्य प्रवृत्त प्रामाणिक दृष्टि से ही यदि उनके चरित्रों का अवलोकन किया जाय तभी हम उनके यथार्थ स्वरूप और सामर्थ्य को जानने में सफल हो सकते हैं । केवल आंग्ल विद्या विशारद, पारचात्य जड़घादी मानस के ही विद्वान् हो सकते हैं वेदोक्त आध्यात्मिक विज्ञान के वे विद्वान् नहीं होते हैं । इसी लिये वे लोग विभिन्न आचार्य एवं भक्तों के चरित्रों की अलौकिक घटनाओं पर विश्वास नहीं करते हैं । किन्तु इससे आध्यात्मिक विज्ञान असत्य नहीं ठहर सकता है । आज भी इस विज्ञान को खोजने वाले व्यक्ति निराश नहीं होते हैं तो उस समय जब कि सर्वत्र भक्ति का साम्राज्य था तब तो उस विज्ञान के दिव्य प्रकाश को ऐसा कौनसा साहित्यिक पुरुष था जो देख न सका हो । क्या पूर्व और क्या पश्चिम सभी देशों के उस समय के साहित्य में भक्ति के चमत्कारों का बोलबाला रहा है । भले उसको आज के भौतिक बुद्धिवादी विद्वान् न माने । अस्तु

इस दृष्टि से हम आचार्यजी के इस निजी और घरू चरित्रों का अध्ययन करेंगे तो हमें यह स्पष्ट प्रतिभासित होगा कि आचार्य चरण साधारण मानव न थे, किन्तु उनमें कृष्ण के मुखारविंद की आध्यात्मिक वैश्वानर अग्नि, वेद की सर्वज्ञता, आचार्य की दिव्य प्रतिभा और सन्मनुष्य के सभी लक्षण विद्यमान थे । कृष्ण मुख की आध्यात्मिक वैश्वानर अग्नि की हृदय में स्थिति होने के कारण वे जहाँ कृष्ण को साक्षात् बुलवा सकते थे वहाँ अपने स्वरूप का दिव्य और प्रकाशमय रूप भी लोक में प्रकट कर सकते थे । इसी प्रकार वेद में पारंगत होने के नाते वे जहाँ त्रिकालज्ञ बन जाते थे वहाँ सर्व मंत्र-तंत्रों को अधीन

भी कर लेते थे, आचार्यों की दिव्य प्रतिभा के कारण 'आचार्यों मां विज्ञानियात्' आदि भगवद् वाक्यों के अनुसार वे जहाँ भगवत्स्वरूप के दर्शन दे सकते थे वहाँ वेद से विरुद्ध सभी वादों को निरास भी कर सकते थे, ऐसे ही सन्मनुष्याकृति रूप में सदाचार सद् विचार और सद् व्यवहारों को प्रकट कर सार्विक जन-समूह के अवलम्बन-आश्रय रूप बनते थे। इस सन्मनुष्याकृति रूप से आपने कृष्ण को विद्युद्ध प्रेममयी भक्ति को भूमि में प्रकट कर उसको अपने जीवन में आचार, विचार और व्यवहारों द्वारा व्यक्त किया। यही आपके चतुर्विध स्वरूपों की निजी अरू घरुवार्ताओं के प्रसंग रूप प्रस्तुत चरित्र है।

इन स्वरूपों का अनुसंधान रखते हुए यदि इस ग्रन्थ का अध्ययन होगा तो अध्ययनकर्ता को लौकिक और अलौकिक उभय प्रकार का वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त होगा इसमें कोई सन्देह नहीं। सर्व-शक्तिवृक्-ईश्वर की कृति और सामर्थ्य में ऐसा कोई तथ्य एवं तत्त्व नहीं जिसका अभाव वा असंभाव अनुभूत हो। इस विश्व में ईश्वर ही सर्व रूपों से सर्वविध क्रीडाकर्ता है इस लिये भारतीय विचारश्रेणी में असंभावना और विपरीत भावना को कोई स्थान प्राप्त है ही नहीं। यह दो भावना तो जडवादी मानस में ही प्रतीत होगी। अस्तु

माघ शु० ५
वसन्त पंचमी
सं० २०१५ वि०
मथुरा.

श्रीवल्लभ-वल्लभीय चरणरत्न
आकांचित
—द्वारकादास परीख

* आमुख *

श्रीगोवर्द्धन ग्रन्थमाला की स्थापना शुभ सम्बत् २०११ में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा श्रीगोवर्द्धन पूजा के दिवस हुई थी इस ग्रन्थमाला का मुख्य उद्देश्य केवल पुष्टिमार्गिय ग्रन्थ प्रकाशन करना ही है। वर्तमान समय तक इस ग्रन्थमाला ने अपने शौरावकाल के ४ वर्ष समाप्त करके पाँचवें वर्ष में प्रदार्पण कर लिया है। इस ग्रन्थमाला की ओर से प्रति वर्ष ३ पुष्प प्रकाशित होते हैं श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा से चतुर्थ वर्ष का ११ वां पुष्प हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं प्रस्तुत ग्रन्थ सम्प्रदाय के स्तम्भ ब्रजभाषा साहित्य एवं वार्ता साहित्य के मर्मज्ञ श्री द्वारकादासजी परीख के सौजन्य से हमें प्राप्त हुआ है हम आपके अत्यन्त आभारी हैं कि आप अपनी पूर्ण कृपा हम पर एवं इस ग्रन्थमाला पर रखते हुए अपने तीन अमूल्य ग्रन्थ अब तक इस ग्रन्थमाला को प्रकाशनार्थ प्रदान कर चुके हैं। प्रथम ग्रन्थ इस ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प श्रीषिट्ठेश्वर चरितामृत था, द्वितीय ग्रन्थ इसका दसवां पुष्प खटञ्जतु वार्ता था, एवं तृतीय ग्रन्थ यह निजवार्ता, घरूवार्ता है हम पूर्ण आशावादी हैं कि भविष्य में भी श्रीपरिखजी हम पर पूर्ण कृपा रखते हुए इसी प्रकार ग्रन्थमाला को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में मैंने प्र फ अबलोकन में यथा संभव पूर्ण सावधानी बरती है, परन्तु फिर भी प्रेस की भूल से यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा करते हुए सुविज्ञ पाठक उसे कृपा कर सुधार लें।

प्रार्थी:

निरंजनदेव शर्मा

व्यवस्थापक:

श्रीगोवर्द्धन ग्रन्थमाला कार्यालय, दाऊजीघाट

मथुरा.

भाष्य शुक्ल ५

वसन्त पंचमी सं० २०१५

ॐ श्रीकृष्णाय नमः श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॐ

श्रीआचार्यजी महाप्रभून की निजवार्ता

चिन्ता संतानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः ।

स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ १ ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रगट भये । दैवी जीवन के उद्धारार्थ । सो दैवी जीवन को भगवान ते विछुरें बहुत दिन काल भये हैं । सो गद्य श्लोक में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप कहे हैं । 'सहस्रपरिवत्सर' सो श्री ठाकुरजी को लीला में दया उपजी । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून को आज्ञा दीनी । जो तुम भूतल में पधारो । और दैवी जीवन को उद्धार करो । वे दैवी जीव बहुत काल के भटकत हैं । सो वे सब मार्ग में पेठत हैं । परि कहुँ उनको स्वास्थ नांही ।

भावप्रकाश—कहेतें स्वास्थ नांही जो—जा वस्तु के वे अधिकारी हैं । सो सो कहुँ वे देखत नांही । तातें परिभ्रमण करत हैं । परि कहुँ स्वास्थ होत नांही ।

सो तिन जीवन के लीयें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप पधारे । सो साक्षात् पुरुषोत्तम को धाम हैं । सो तेजोमय हैं । सो ताको आधार अग्नि हैं । सो अग्नि कुण्ड में तें श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रगट भये । तातें सब कोऊ इनको अग्नि रूप कहत हैं ।

उलटो इनको सेवक करत हैं ? तार्ते जो तोकों अपनी कार्य सिद्ध करनो होइ तो तू इनकी सरनि आइ । एतो साक्षात् मेरो स्वरूप हैं । ए भक्तिमार्ग स्थापन के लिये प्रगट भये हैं । सो महापुरुष वह तत्काल जागि परयो । सो उठिके श्री आचार्यजी महाप्रभूनको आइके साष्टांग दंडवत् कीये । और कस्यो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो । मैं कालि आपको अनुचित बचन कस्यो । मैं आपुको स्वरूप नहीं जान्यो । आपु तो साक्षात् पुरुषोत्तम हों । मेरे उद्धार के लिये आप पधारि हो । सो मेरो अंगीकार करोगे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो— हां हां तेरो उद्धार करेगे । कहा भयो जो तैं कइ कस्यो तो तब सबारे श्री आचार्यजी महाप्रभू वा महापुरुष को नाम दियो । बाको अंगीकार किये । पाछे आप श्री आचार्यजी महाप्रभू उहाँते आगे पधारें ।

सो आगे एक बडो नगर आयो । सो वा ठोर बडो नगर-सेठ हतो । सो बाकी देह छूटी । बाके चारि बेटा हुते । और सबते छोटे दामोदरदास हते । सो उन बड़े भाईन विचार कियो जो होइ तो यह द्रव्य अपुनो अपुनो हम चारों भाई बाँटिलेहि । काहेते जो द्रव्य है सो क्लेश को मूल है । पाछे हमारो आपुस में हित न रहेगो । तब दामोदरदास जी तो छोटे हुते सो इनसों कहे-क्यों बाबा ! तू अपने बाँटे को द्रव्य लेहिगो! तब दामोदरदास कहे जो—मैं तो कइ समुझत नाहीं । तुम बड़े हो आछो जानो सो करो । तब इन द्रव्य सगरो घर

मेंते काढि वाके चारि बट किये । सो चारयो चिठी लिखिकें
 वाके उपर डारी । सो जा जाके नाम की चिठी आई । सो सो
 वानें लीयो । तब दामोदरदास सो कहे जो तुम्हारे द्रव्य
 जहां तुम कहो तहां धरें । ता समें दामोदरदास गोख में बैठे
 हुते । सो गोख के नीचें राज मारग हुतो । सो ता समें श्री
 आचार्यजी महाप्रभू वा मारग होइकें निकसे । सो उपरतें
 दामोदरदास की दृष्टि परी । सो तत्काल उहांतें उठि दोरे ।
 न कछू द्रव्य की सुधि रही न कछू घर की सुधि रही । सो
 आवत ही श्री आचार्यजी महाप्रभून को साष्टांग दंडवत
 कीयो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री मुखतें कहे जो ।
 दमला तू आयो ? तब इन कही जो महाराज मैं कब को मार्ग
 देखूं हूँ । सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके चरणारविंद के संग
 पाछें पाछें दामोदरदास चले । सो पाछें भाई कहन लागे जो
 दामोदरदास कहां गये तब काहूने कही जो या मारग में एक
 लरिका जात हुतो तिनके पाछें पाछें दामोदरदास जात हैं
 तब ये तीनों भाई उहांतें चले । सो आगे वा नगर के बाहर
 एक स्थल हुतो । तहां श्री महाप्रभुजी के आगे दामोदरदास
 बैठे हैं । तब इह देखत ही तीनों भाई चक्रित होइ गये ।
 सो इनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शनसाक्षात् तेजको पुंज
 भयो । सो इनतें कछू बोल्यो न गयो । अपने मनमें विचारे जो
 कदाचित कछू बोल्गे तो यह अग्नि हमको भस्म करि डारेगी ।
 तब दामोदरदास भाईनको देखिकें कहे जो जाऊ । सो उन

माईननें दामोदरदास को स्वरूप ता समें तेजोमय देखे । सो मय खाइकें पीछें फिरि आये ।

भावप्रकाश—सो दैवी जीव होते तो सरन आवते । श्री आचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो ' दैवोद्धार प्रयत्नात्मा ' ।

तब दामोदरदास को संग लेके श्री आचार्यजी महाप्रभू आगे पधारे । दामोदरदास कहु ब्याहे तो हते नहीं । जो इनको स्त्री खाइकें प्रतिबंध करे । बहुत दिना के विछुरे हते सो आइ मिले । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग दामोदर दास चले ।

सो आगे विद्या नगर में कृष्णदेव राजा । तहां श्री आचार्यजी महाप्रभूमके मामा को घर हुतो सो तहां श्रीआचार्य जी महाप्रभू पधारे । सो वे देखिके बहुत प्रसन्न भये । बहुत आदर सनमान किये । तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों कहे जो उठो आप भोजन करो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो मैं तो कहु भोजन करत नाहीं । अणुने हाथ करिके लेत हों । तब यह बात सुनिके मामा को रिस चढी । बहुत बुरो लाग्यो । तब कुटिके कस्यो जो हमारे घर भोजन नाहीं करत तो राजासों देखे जो कैसे मिलोये राजाके इहां दानाभक्ष तो हम हैं । देनों दिवावनों तो हमारे हाथ है । यह सुनिके श्री आचार्यजी महाप्रभू बोले नाहीं ।

भावप्रकाश—क्यों जो आप तो ईश्वर हैं ; आप जो काहु के बराबर होइ तो कहु सों बोलें ।

सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप उहां रात्रिकों पोडे । इतने में श्री गोवर्द्धननाथजी आप पधारे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप निद्रा में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने श्री आचार्यजी महाप्रभूनके केश दावे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू तत्काल जागि परे । देखें तो श्री गोवर्द्धननाथजी आगे ठाढे हैं । तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप उठिके श्रीहस्त जोरिके ठाढे भरे । तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहे जो ऐसो गर्बित बचन याको सुनिके वाके-घर में आप क्यों रहे ? मैं तो तिहारे पाछे पाछे लाग्यो डोलतई हों । एक झिनहूँ नहीं छोडत । यह तुमको राजासों कहा मिलावेगो । एसो तो कोटि राजा तुम्हारे चरणारविंद की अभिलाषा करत हैं । और करेगो । आप उठो वाके घर मति रहो । सो तत्काल में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप उहांते उठि चले । सो उहां नगर के बाहर जलासय हुतो । तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्नान सन्ध्या करिके कृष्णदेव राजाकी सभा को पधारे ।

सो कृष्णदेव राजा के इहां आये । तहां वैष्णव सम्प्रदायको और स्मार्त सम्प्रदाय को आपुसमें झगरो होत हुतो । सो वैष्णव सम्प्रदाय के बड़े बड़े आचार्य महन्त । बहुत भेले भये हते सो शुक्ति सों स्मार्त जीते । सो वा दिना यह झगरो चुकत हुतो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू के मामा ने राजा कृष्णदेव सों कहे जो आज झगरो चुकवे उपर है । सो झारपाल सों कहि राखो जो आज कोई नयो ब्राह्मण न आवन पावे ।

तब राजा कृष्णदेव के इहां सब ब्राह्मण आये । सब सभा भेली भई, इतने में श्री आचार्यजी महाप्रभू पधारे । सो द्वारपाल और सब मनुष्य श्री आचार्यजी महाप्रभून को देखत ही चकित भये । जो मानों आकास ते सूर्य पधारे एसे तेज को पुंज देख्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भीतर पधारे राजा कृष्णदेव की सभा में पधारे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को देखत ही राजा कृष्णदेव सब सभा सहित उठि ठढ़ा भयो ता समें की कहा उपमां दीजिये । जो मानो राजा बलि की सभा में श्री वामनजी पधारे हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें, राजाकृष्णदेव बहुत प्रसन्न भयो । जो आज मेरो बडो भाग्य है । जो साक्षात् भजुवान मेरे घर पधारे हैं । ऐसो राजा कृष्णदेव को दर्सन भयो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सो कृष्णदेव राजा नें विज्ञप्ति कीनी जो महाराज बिराजिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे । राजा कृष्णदेव सो श्री आचार्यजी महाप्रभू पूछे जो तुम्हारे इहां ए ब्राह्मण को कहा ऋगरो है ? तब राजा कृष्णदेव नें कही जो महाराज यह वैष्णव सम्प्रदाय और स्मार्त इनको आपुस में ऋगरो है । सो वैष्णवसम्प्रदाय वारे तो निरुचर भए हैं । और स्मार्त जीते हैं । तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो एसो कौन है जो वैष्णवसम्प्रदाय को जीतेगो ? वैष्णव सम्प्रदाय तो हमारी है । हमसो चरचा करो । वे कौन हैं ऐसे जीतन हारे ? तब यह सुनिकें वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य

बड़े बड़े महंत बैठे हुते । सो बहुत प्रसन्न भरे । तब राजा कृष्णदेव उन मायावादीनसों कहे जो आओ । जो तुम्हारे चरचा करनी होइ सो करो । तब उनमें बड़े बड़े पंडित हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों चरचा करवे लागे । सो श्री आचार्यजी महाप्रभून तो आप साक्षात् ईश्वर । च्यारो वेद पुराण सास्त्र सब महाप्रभून के जिभ्याग्र ताते उनका कितनीक सामर्थ । सो वे मायावादी तत्काल निरुत्तर भये । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून कों साष्टांग दंडवत किये । और कहे जो महाराज कोई मनुष्य होइतो तासों हमारी चले । और आपतो साक्षात् ईश्वर हो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून को महात्म्य देखिके राजाकृष्णदेव बहुत प्रसन्न भयो । सब वैष्णवसंप्रदायके आचार्य महन्त हुते । ते सहस्रावधि एकठोरे भये हुते । सो सबनने यह कही जो हम सब श्री आचार्यजी महाप्रभून कों तिलक करेंगे । जो हमारे ए वैष्णव सम्प्रदायके, ब्राह्मणनके, सबनके राजा भये । और आचार्य पदवी दीनी सो हमारे सबनके सिरोमनि हैं । जिनने हमारी वैष्णवता और वैष्णव मार्ग राख्यो । यह सुनिके राजाकृष्णदेव कहे जो बहुत आछो । तुम सबन एसे विचारे हैं तो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों । कनकाभिषेक कराउंगो । तब सब वैष्णव सम्प्रदायके आचार्य महन्त प्रसन्न भये । तब राजाकृष्णदेवने आछो महर्त्त देखिके कनकाभिषेक करवायो । ब्राह्मण सब तिलक किये । सब कोठ श्री वल्लभाचार्यजी कहे । एसो नाम प्रसिद्ध भयो । मायामत

को खण्डन किये । भक्तिमार्ग स्थापन किये । तब राजा कृष्णदेवने विनती करी जो महाराज मेरो अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अनुग्रह करिके राजाकृष्णदेव को नाम सुनायो । तब राजाकृष्णदेवने द्रव्य को थार भरिके आगे भेट धरयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वामेंते आप सात मोहोर काढि लिये । तब राजाकृष्णदेवने कही जो महाराज । सब द्रव्य आप अंगीकार करिये । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून आप श्रीमुखते कहे जो हमारो इतनों ही है । हमारें अधिक नांही चाहियत । तब राजा कृष्णदेवने विनती करी जो महाराज यह स्नान को सुवर्ण हैं । सो आपको है । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कही जो यह हमारो कहा काम को है । यह तो उच्छिष्ट जलबत हैं । ताते तुम ब्राह्मणनको बांटे देऊ । तहांते श्रीआचार्यजी महाप्रभू दक्षिण दिग्विजय करिके आप आगे पधारे । वार्ता प्रथम ॥ १ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो सब देशांतर में दैवी जीव हैं । ताते आपनको तो सब ठौर जानों । परि होइतो प्रथम ब्रज में चलें । ब्रज है सो हमारो धाम है, श्रीगोकुल, इन्दावन, श्रीगोवर्द्धन, यमुना, प्रथम तो ऐ देखीए । सो दामोदरदासको संग लेके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ब्रज में पधारे । सो आवत आवत मार्ग में भारखंड में आए । तब भारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको आज्ञा दीने जो आप वेग पधारो । हम श्रीगोवर्द्धन पर्वत में तीनिदमन हैं ।

नागदमन । इन्द्रदमन । देवदमन । सो मध्य में देवदमन । सो हम प्रगट भए हैं सो आप बेगि पधारिके हमारी सेवा को प्रकार प्रगट करो । सो यह बचन सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दमला सों कहे जो दमला श्रीठाकुरजी हमको एसी आज्ञा दीनी । ताते आपुन बेगि ब्रज में चलो । सो झारखंडते श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ब्रज को चले । सो केतेक दिन में आप ब्रज में पाउधारे ।

सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगोकुल पधारे । सो ता दिना श्रावण शुदि ११ हुती । ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू उपवास किए हुते । सो रात्रि को गोविन्द घाट उपर एक चोतरा हुतो । ता ठोर श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पोडे । ओर थोड़े से दूरि । दामोदरदास सोये । इतने में श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको चिंता बहुत उपजी ।

भावप्रकाश—कहा चिंता जो श्री ठाकुरजी तो आज्ञा दीनी हैं । जो भूतल में दैवी जीवन को अङ्गीकार करो तो उनको मेरो सम्बन्ध होइ । और इहां तो जीव सब संसार में पड़े हैं । सो समुद्र में पड़े हैं । अपुनो हूँ स्वरूप भूलि गये हैं । और श्री ठाकुरजी कोहू स्वरूप भूलि गए हैं । और संसार में मग्न है सो दोष बहुत बढ़ि गयो है । और ठाकुरजी तो पूर्ण गुण विग्रह हैं । इनको प्रभू को सम्बन्ध कौन रीति सों हांइ । ऐसी चिंता होत भई ।

तब अर्द्धरात्रि समें । साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्य । पूर्ण पुरुषोत्तम श्री गोवर्द्धनधर प्रगट भए । तब श्री ठाकुरजी श्रीमुखते कहे जो तुम चिंता क्यों करत हो । जिनको तुम नाम

देऊगे। तिनके सकल दोष दूर होइ जाइंगे और मेरी प्राप्ति होयगी और ब्रह्मसंबन्ध की आज्ञा दीनी जो जीवको ब्रह्मसंबन्ध करवाओ।

भावप्रकाश—ब्रह्मसंबन्ध को कारण कहा जो ब्रह्मसंबन्ध बिना प्रेम लक्षणा न होई। भक्ति न होइ। और प्रेम लक्षणा भक्ति बिना पुष्टि-मार्ग में अङ्गीकार न होइ। पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार होइ तो भगवत्सेवा को अधिकार होइ। और जीव तो कृतार्थ भगवत् नाम सो होइ जाइ। ताही तैं श्री गुसाईंजी आप श्री सर्वोत्तम में कहे हैं। श्री आचार्यजी महाप्रभूत को नाम।

“ भक्तिमार्ग सर्वमार्गो वैलक्षण्यानुभूतिकृत् ”

भावप्रकाश—तातैं भक्तिमार्ग हु प्रथम हुतो औरहु सब भगवान की प्राप्त के मार्ग हुते परि ब्रजभक्तनके सनेह को मार्ग न हुतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किये। बिना सनेह पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार न होइ और बिना सनेह सेवा है सो सेवा नाही। वे पूजा है। पूजा है सो मन्त्र के आधीन हैं और सेवा है सो भावात्मक हैं। ताईये सूरदास जी गाए हैं।

✽ रागकेदारो ✽

भजि सखी भाव भाविक देव ।

कोटि साधन करो कोउ तउ न मानत सेव ॥ १ ॥

धूमकेतु-कुमार माग्यो कौन मार्ग प्रीत ।

पुरुषतैं सखी भाव उपभ्यो सबै उलटी रीति ॥ २ ॥

बसन भूषन पलटि पदरे भावसों संजोय ।

छलटि मुद्रा दई अङ्गुनि बरन सूखे होइ ॥ ३ ॥

वेद विधि, को नैम नाहिन प्रीति की पहिचान ।

ब्रज बधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥४॥

ऐसो मार्ग प्रगट करिवे की श्री ठाकुरजी की इच्छा हती । तातें श्री आचार्यजी महाप्रभूनों ब्रह्मसम्बन्ध की आज्ञा दीनी ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पवित्रा उपरना मिथी सवारे श्रावण सुदि द्वादसी के लिये सिद्ध करि राखे हुते । सो बाही समें श्री ठाकुरजी कों पवित्रा पहराये । उपरना उढाये और मिथी भोग घरी । ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो दमला तें कडू सुनो ! तब दामोदरदासजी कहे जो श्री ठाकुरजी के वचन मैं सुने तो सही परि समुभयो नांही । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो मोकों श्री ठाकुरजी नें आज्ञा दीनी है जो जीवन कों ब्रह्मसम्बन्ध करावो । तिनके सकल दोष दूरि होइगे और मैं अङ्गीकार करोंगे । तातें ब्रह्मसम्बन्ध अवश्य करना । तब ए जो श्री आचार्यजी महाप्रभू की श्री ठाकुरजी सों जितनी आज्ञा भई ताको एक श्रीआचार्यजी महाप्रभू ग्रन्थ किये । ताको नाम 'सिद्धान्त रहस्य' ।

श्लोक—“श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महा निशि”

भावप्रकाश—यह वार्ता एकादशी की अर्द्धरात्रि कों भई । ताते अर्द्धरात्रि कों ही मिथी पवित्रा धराये । तातें श्रीनाथ जी कों और सातों स्वरूपनकों पवित्रा एकादशी के दिन ही धरयो जात है और उत्सव श्रीनाथजी के इहां एकादशी कों मानें हैं और श्री आचार्यजी महाप्रभू के घर सातों स्वरूपन के इहां एकादशी द्वादशी दोउ उत्सव माने हैं ।

तब श्रावण सुदी द्वादसी के दिना श्री आचार्यजी महाप्रभू

प्रथम ब्रह्मसम्बन्ध दामोदरदासको करवाए और । दामोदरदासजी श्री ठाकुरजी के वचन सुने परि समुझे नांही ।

भावप्रकार—ताको हेतु यह जो समुझे तो स्वामी सेवक भाव न रहे और फेरि श्री आचार्यजी महाप्रभु इनको ब्रह्मसम्बन्ध काहे को करावें । कैसें जो गोविन्द हुवे श्री रणछोडजी सों बातें करन लागे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभु कथा श्रीअबोधनी जी कहत हुते सो पोषी बांधो । जो सोसों श्री ठाकुरजी बातें करत हैं । तो अब हम तुमसों कथा काहेको कहें । तातें स्वामी सेवक भाव राखिवे के लिये दामोदर दासजी वचन सुनें परि समुझे नहीं । याको कारण आगें श्रीगुसाईंजी दामोदरदास सों पूछेंगे जो तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको कहा करि जानत हो । तब दामोदरदासजी कहे जो श्री ठाकुरजी तें अधिक जानत हों । तब श्री गुसाईंजी कहे जो श्री ठाकुरजी तें अधिक काहे को कहत हो । तब दामोदरदासजी कहे जो महाराज दान बडो के दाता बडो । यामें यह सिद्ध भयो जो श्री ठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके बस हैं ।

तब ब्रज में श्री आचार्यजी महाप्रभुनको महात्म्य देखिके बहुत सेवक भये ।

और कृष्णदासमेधन चत्री सो सोरम में रहते । सो एक महन्त के सेवक हते सो कृष्णदासमेधन ब्रज में आये । सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शन करिके यह मन में आई जो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सेवक ही होऊ ।

भावप्रकार—काहेतें जो इनको श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके दर्शन साक्षात्पूर्ण पुरुषोत्तम के भये और प्रभूदास जलोटा चत्री और

रामदास ये सब सेवक भये । सवनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मसंदेह करवाये ।

तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सब सेवकन कों संग लेके आप श्रीवृन्दावन परासोली होइ आन्यौर में सधू पांडे के घर के आगे एक बड़ो चोतरा हुतो ता ठोर श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजे । इतने में सब ब्रजवासी देखे और कहन लागे जो ये तो कोऊ बड़े महापुरुष हैं । ऐसो तेज तो काहू मनुष्य के तो मोहडे पे न होइ । कहा जानिये यह कौन स्वरूप हैं । ऐसैं सब कोउ कहें तब सधू पांडे आये । हाथ जोरिकें कहे स्वामी कछू खाउगे ? तब कृष्णदासमेघन बोले जो आप तो सेवक विना काहू की लेत नांही हैं ।

और सधू पांडे के एक बेटी हती । बाकौ नाम नरो हुतो सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पर बहुत कृपा करते । सो बे दोउ बिरियां सांभ सवारें दूध प्याइवे जाती । जब यह घर के काम काज में होइ तब न जाइ सके । तब ऊपरतें श्रीनाथजी याकूँ पुकारें । तबउ न जाइ तो श्रीनाथजी याके घर जाइकें दूध दही अरोगें मांगिलें । जैसे कोउ घर को बालक होइ तैसें श्रीनाथजी यासों हिले हैं ।

सो जा समें कृष्णदासमेघन सधूपांडे सों नांही करी । ताही समें श्रीगोवर्द्धननाथजी उपरतें पुकारिकें कहे । अरी नरो दूध न्याउ । तब नरो ने कही जो आजु तो हमारें पाऊने

आए हैं । तब श्रीनाथजी कहे पाऊने आए हैं तो आछी भली भई, परि मोकों तो दूध ल्याउ । तब नरो नें कही जो हां वारी लाल लाई । सो नरो दूध को कटोरा भरिके ऊपर पर्वत पर ले गई । ता समे श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी सों कहे जो दमला तू यह शब्द सुन्यो । तब दामोदरदास नें कखो जो हाँ महाराज सुन्यो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो यह शब्द और म्हारखंड को शब्द एक मिन्यो । ताते यही प्रगट भये हैं । ऐसो जान्यो परत है । ताते सवारें ऊपर चलेंगे । ऐसे श्रीमुखते श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदास सों कहे । इतने ही में नरो श्रीनाथजी कों दूध प्याइ के आई । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो अरी यामे कखू है । तब नरो बोली और कखो जो महाराज रंचक है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखते कहे जो यह हमकों देहि । तब नरो ने कही जो महाराज और घर में बहुत है । जितनों चहिये तितनो लेऊ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो और तो हमारें नांही चहिये । हमारें तो यही चहिये ।

और सधू पांडे तो परम भगवदी हैं । श्रीगोवर्द्धननाथजी के परम कृपापात्र हैं । साक्षात् इनसों बातें करे हैं । चहिये सो मांगि लेत हैं । ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के साक्षात् पुरुषोत्तम के दर्शन भये सधूपांडे कों । तब सधू पांडे नें कही जो महाराज हमकों कृपा करके नाम दीजिये । हम हारे और

आप जीते । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिके अपुने कीये । तब सब कछू उनको अंगीकार किये । तब रात्रिकों सधू पांडे और इनके बड़े भाई माणिकचंद और इनकी बेटी नरो और इनकी बहू भवानी और नजवासी बहुत बड़े बड़े हुते सो सब रात्रिकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के चोतरा के पास आइके सब बैठे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सधू पांडे सों कहे जो कहो पांडे ऊपर देवदमन प्रगट भये हैं सो कौन रीतिसों प्रगट भये हैं ? इनकी सब वार्ता हमसों कहो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों सधूपांडे श्रीगोबर्द्धननाथजी को प्रागत्य जा भांतिसों भयो ता भांतिसों कहति भये ।

जो-महाराज हमारी गाइन को एक ग्वाल हुतो सो वह सगरे गाम की गाइ चराइवे जातो । सो एक ब्राह्मण की गाइ बड़ी हुती । सो बेऊ चरिवे जाती सो चरिकें जब घर आवे तब वे ब्राह्मण दुहिवे बैठे । तब दूध रंचक हू न देइ और सवारे की बेर दुहिवे बैठे तो तब कछू थोरो सो देइ और सब चढाय राखे । सो वे ब्राह्मण बहुत कुटे । जो मेरी ऐसी बड़ी गाइ और दूध काहेतें नांही देत ? तब यह मन में निझीर कियो जो गाइ को ग्वाल दुहि लेत हैं । होइ तो ग्वाल सों कहूँ । तब सांभ समें घर आयो ग्वाल । तब वे ब्राह्मण ग्वाल को जाइके खीज्यो । क्यों रे भैया ! तू मेरी गाइ दुहिकें पी जात है ? सो काहेतें ? तब वाने कही जो भैया हौं तो या बात को जानतहु नांही । तू बृथा बिन देखें मेरो नाम लेत है सो आछो नांही । जो तें

रु कहें ? तो मैं काल्हि ठीक राखूंगो । तब सवारे' ज
 कराइवे कों गयो । तब सगरी गाइ तो वन में छोडि दीन
 राके पीछे पीछे डोले । बाको नजरि में राखे जो याको
 गेऊ और तो दुहिके' न पी जात होइ । तब इतने में वह
 बाल की दृष्टि बचाइ के' पर्वत ऊपर चढी । तब वे
 हू पर्वत ऊपर चढ्यो सो देखे' दूरिते' तो वह गाइ
 न के ऊपर एक बड़ी सिला हुती । वामे' एक छेद
 तो बाके ऊपर ठाढी होइके' आपते' श्रवे । सो सगरो दूष
 र डारिके' नीचे' उतरि आई । सो ग्वाल ने' यह सब
 देख्यो । तब वा ठौर गयो देखे' तो एक सिला में छेद
 यह देखिके' ग्वाल हू नीचे' उतरि आयो । सगरो दिन
 वरायो । जब घर आयवे को समे' भयो तब वह गाइ दृष्टि
 के' जैसे ही पर्वत ऊपर चढी । वह ग्वाल हू ऊपर चढ्यो
 वे' तो जैसे' सवारे' आवते' श्रवत हुती तैसे' हूँ श्रवह
 है । फेरि गाइ पर्वत ऊपरते' उतरि आई तब वा ग्वालने'
 ब्रह्म के घर जाइके' सब समाचार कहे जो भैया ऐसे' तेरी
 गेऊ विरियां पर्वत ऊपर जाइके' आपते' श्रवत है जो तू
 ते तो सवारे' मेरे संग चलि । हौं तोहि दिखाइ देऊंगो ।
 । ब्राह्मण कों सुनिके' आश्चर्य भयो । सो सवारो भयो
 तब वन कों चली तब बोड गाइ गई । तब वह ब्राह्मण हू
 पाछे' चलयो । सो आगे' जाइके' पर्वत ऊपर गाइ चढी ।
 ग्वाल और ब्राह्मण दोऊ पर्वत ऊपर चढे सो दूरिते' देखे'

तो गाइ दूध आपते ठाढी ठाढी श्रवत है । सो वा ब्राह्मण के मन में जब सांच आयो तब विचारयो जो या बात को अब कहा करनो ? तब वा ब्राह्मणनें आइके यह सब बात हमसो कही । सो हमको हूँ सुनिके आश्चर्य भयो । तब हम सब ब्राह्मण गाम के मुकदम और हू बड़े बड़े भेले भये और विचार कियो जो कहो भैया यह कहा कारण है । तब एक बृद्ध ब्राह्मण हुतो बाने कही जो भैया मैं तो ऐसे सुन्यो हूँ जो जहां कछु धन होइ । तहां गाइ श्रवत हैं । तब हम यह निश्चय करिके सब पर्वत ऊपर जाइके देखें तो वा सिला में एक छेद है । तब विचारे जो या सिलाको उठावें । तब हम सबनने मिलिके । यह बड़ी सिला हुती सो उठाई । तब नीचे तो एक सुन्दर लरिका बरस सात को ठाढो है । और वह सिला को छेद हुतो । सो मुख के उपर हुतो । सो बह दूध पीवत हुतो । तब हम सबनने कही जो धन याके नीचे है सो सांचो है । ता पाछे हम दूध दही को भोग धरे । सो सब अरोगे । आप इहाँ सब लरिकान में खेलें । और हम नाम पूछ्यो । तब अपनी नाम देवदमन बताए । और हम ऐसे जाने जो यह पर्वत को देवता है । ऐसी रीतिसो ये प्रगट भये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप ईश्वर हैं । सब जानत हैं । अपनी बात आप पूछत हैं ।

भावप्रकाश—सो काहेते जो सब जगत में अपनी महात्म्य प्रगट न करें । तो भगवदी कहा गुन गान करें, ताहीते गोपलदासजी गाए हैं ।

“आपनी स्त्रीला वदन पोतें कही लच्छार आनन्द तें अकि दीधो” ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सवारे उठि स्नान करिकें स वैष्णवनकों संग ले आप गिरिराज ऊपर पधारे । तब श्री गोवर्द्धननाथजी श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों देखिकें आप साम्हें पधारे । मिलवेकों अति हरखित भये । सो गोपालदासजी गाए हैं ।

“हरखेते सामा आवियां श्री गोवर्द्धनउद्धरण” ।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों मिले । बहुत प्रसन्न भये ।

श्रीगोवर्द्धननाथजी आप श्रीआचार्यजी महाप्रभून के लिये प्रगट भये हैं ।

भावप्रकार—याकों हेतु यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आप आज्ञा दीनी जो तुम भूतल में प्रगट भये हैं । दैवी जीवन को अङ्गीकार करो । दैवी जीव बहुत दिनन के मोते बिल्लुरे हैं । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी की आज्ञा तें भूतल में मनुष्य देह कं अङ्गीकार करिकें पधारे । और दैवी जीवन को तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नन्दराय कुमार ऐसे दर्शन देत हैं । सो सबको ऐसे दर्शन देखि तो सब कृतार्थ होइ जाइ । तारें मनुष्य देहको नाट्य कीये । श्रीगुसांईर्ष आप श्री वल्लभाष्टक में कहे हैं जो—

“वस्तुतः कृष्णएव”

ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप हे जिनको परम भाव होइगो । सो पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार होइगो । तिनके हृदय में । श्री आचार्यजी महाप्रभून को ऐसो स्वरूप आवेगो ।

श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनों आज्ञा दीनी जो तुम भूतल में पधारो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में प्रगट भये । सो श्रीठाकुरजी को श्रीआचार्यजी महाप्रभूनों सबो स्नेह है । ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनों नाम श्रीवल्लभ हैं । यमुनाष्टक के श्लोक में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपही अपनों स्वरूप प्रगट किये हैं जो—

“वदति वल्लभ श्रीहरे”

तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनों विरह श्री ठाकुरजी ते न सङ्गो गयो । तातें आपहू तत्काल भूतल में पधारो । ताते भगवत लीला अनन्त हैं । श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहैं । भगवत्स्वरूपहू अनन्त हैं । और पूतना ते आदि देकें । सब लीला अनन्त हैं ।

श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धनधर प्रगट किये । सो ताको कारण यह जो श्री गोवर्द्धन परम कृपाल हैं । ईन्द्रने इतनों इतनों आइकें अपकार कीयो । और घापर अनुग्रह किये ईन्द्रने गाइनको ब्रज भक्तन को ब्रज हो श्री गोवर्द्धनको सब भगवदीनोंको द्रोह कीयो परि श्रीगोवर्द्धननाथजी कछू मनमें न स्याये । वाके ऊपर अनुग्रह करिकें फेरि वाकों अपने लोक पठाये । और वानें अपराध कीनों । सो आप सेवा करि माने जो ब्रजवासी हो सब सामग्री मोकों भोग धरे । और ईन्द्रने जल की सेवा करी यह जानिकें अनुग्रह किये । याहीतें श्रीगोवर्द्धननाथजी परम दयाल हैं । जीव तो अपराध भयो है । सो प्रभू परम कृपाल हैं । ऐसी दया बिना जीवको अङ्गीकार न होइ ।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनों आज्ञा दीनी मेरी सेवा को प्रकार करो । मोकों पाट बैठायो । सेवा बिना दैवी जीवनको पुष्टिमार्ग विषे अङ्गीकार न होइ याहीतें मैं प्रगट भयो हूँ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी को तत्काल एक छोटी सो मन्दिर सिद्ध करवायो । वामें श्री

गोवर्द्धननाथजी को पधराए । और अपहरा कुण्ड के ऊपर एक गुफा है । सो वामें रामदासजी भगवदी रहते । सो सदां भजन करते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको पधारे सुनिकें । आन्यौर में आये । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन कीये । और कहे महाराज मेरो अंगीकार करो । मैं आपके लिए बहुत दिना को श्रीगोवर्द्धन की कंदरा में तप करत हुतो । सो मेरो तप आजु सुफल भयो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू रामदास को अंगीकार कीयो । और श्री आचार्यजी महाप्रभू आप रामदास को आज्ञा दीनी जो श्रीगोवर्द्धन पर्वत में श्री गोवर्द्धननाथजी प्रगट भये हैं । सो तुम इनकी सेवा करो । तब रामदासजी कहे जो महाराज मैं तो कभू कछू सेवा कीनी नांही । सो मैं कैसे करूँ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो तोको सब सेवा श्री गोवर्द्धननाथजी आप सिखावेंगे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरछी चन्द्रकान को मुकट सिद्ध करवायो । और पीतांबर काछनी सिद्ध करवाए । और सिद्ध करवाइके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगोवर्द्धन नाथजी को सिंगार किये । सो श्रीठाकुरजी बहुत सुन्दर दर्सन दिये । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू रामदास सो कहे जो नित्य सवारे तुम गोविन्द कुण्ड में स्नान करिकें एक जल को पात्र भरिलाइयो और श्रीठाकुरजी को स्नान कराईयो । पाछे अंग वस्त्र करिकें यह सिंगार जो हमने कियो है सो धरियो । ऐसे नित्य करियो । और जो कछू भगवद इछाते तो को प्राप्त होइ

सो नित्य भोग धरियो । तानें तू निर्वाह करियो । और दूध दही माखन तो सब ब्रजवासी भोग धरत ही हैं । और श्री आचार्यजी महाप्रभू सधूपांडे मानिकचंद पांडे और आन्यौर में जो सब सेवक भए हते तिन सबन सों कही जो हमारो यह सर्वस्व हैं । इनकी तुम सब नीकी भांतिमें सेवा करनी । चौकी पहरा कोऊ उपद्रव होइ तो सब भांतिमें सावधान रहनों । ऐसैं आज्ञा देकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ब्रजयात्रा को पधारे । सो संकेत बट के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है । सो प्रसिद्ध है । सब कोऊ वैष्णव भोग धरत हैं ।

सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो या समें दही होइ तो श्रीठाकुरजी को समर्प्ये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मनकी । प्रभूदास जलोटा चत्री ने जानी । सो तत्काल उठे । सो गाम में गये । उहांतें दही लेकें बाको मुक्ति दीनी । सो वार्ता में प्रसिद्ध हैं ।

भावप्रकाश—सो मुक्ति दीनी ताको कारण यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मनमें इह इच्छा भई जो मेरे सेवकन को महात्म्य जगत में प्रगट करूं । यामें यह सिद्ध भयो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू के सेवक में यह सामर्थ्य हैं । जो मुक्ति देत हैं । जो ब्रह्मादिकनसों न दीनी जाइ । और आगे भगवदीनकी सामर्थ्य प्रगट करेगे जो भगवदी भक्तिहू देत हैं । सो गदाधरदासजी नें माधवदास को दीनी । ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने सेवकन को महात्म्य प्रगट कियो ।

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी

में गोवर्द्धन पूजा की ठौर उहां एक छोंकर को बृच है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू की बैठक है तहां एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप पोडे हुते । तहां और दामोदरदासजी बैठे हुते । तिनकी गोद में श्रीमस्तक हुतो । इतने में श्री गोवर्द्धननाथजी आप पर्वत ऊपरतें पधारे । तब दामोदरदासजी दूरितें हाथसों बरजे । तब श्री गोवर्द्धननाथजी उहांई ठाडे हो रहे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू जागि परे । और उठिकें कही जो आप पधारो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो तुम्हारो सेवक बरजे हैं जो आगें मति आओ । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे दमला क्यों बरजत है ? तब दामोदरदासजी कहे जो महाराज आप जागि परो ? ताके लिये मैं बरज्यो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सों खीजे । तब श्री गोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होइकें कहे जो इनसों कछू मति कहो । इनकों ऐसे ही चहिऐ । सेवक को धर्म ऐसे ही हैं । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भए । दामोदरदासजी ऐसे भगवदी कृपा पात्र हुतो ।

तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो मोकों नूपुर बनवाइ देऊ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बेग सुवर्ण देकें एक वैष्णव कों मथुरा पठायो । जो याके बेगि नूपुर बनवाइ कें लेआव । तब वह वैष्णव नूपुर बनवाइ कें सिद्ध कराइकें ले आए । सो नूपुर श्रीआचार्यजी महाप्रभू लेकें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्प्ये । सो वे नूपुर बहुत सुन्दर बार्जे

श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत प्रसन्न भए । तेसो तो मुकट काछिनी को सिंगार । और तैसोई नूपुर को सब्द । जो दर्सन करे ताको मन हरिजे । और ब्रजवासीन के लरिकान सों खेने । जैसे वे लरिका खेने । तैसें उनके संग अनेक क्रीडा श्री गोवर्द्धननाथजी हू करे ।

सो सधूपांडे के पास एक ब्रजवासी हुतो । वाके घर में समृद्धि बहुत हुती । भेंस बहुत गाइ बहुत । वाके कुटुम्ब बोहोत बेटा नाती बहुये । सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सरनि आये । सो वे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह तें कैसे भगवदी भए ? जिनके घर श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे ।

सो वाके घर में एक डोकरी हुती । सो बहुत वृद्ध हुती । सो सवारें वाकी बहू सब बिलौना करे । सो सगरो माखन भेलो करिके वा डोकरी के आगे लाइ धरे । तब डोकरी जितने वाके घर में लरिका बहू हे तिन सबनको वो डोकरी सवारें कलेउ देहि । रोटी ऊपर माखन धरिके और दही और वा डोकरी को दृष्टि बल थोरो हुतो । सो जो लरिका आवे ताको नाम पूछि पूछि के देहि तब उन लरिकान में श्री गोवर्द्धननाथजी हू जाई । सो कहें अरी मोहू को देरी तब वह डोकरी माखन रोटी दही देहि । और पूछे जो अरे तेरो नाम कहा है ? तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहें जो मेरो नाम देवदमन है । वो डोकरी तब कहे जो अरे तू पर्वत ऊपर रहत है । सोई है ? तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहें हां ! तब वो डोकरी कहे जो देवदमन तू

मेरे घर नित्य आइके कलेट करि जैयो । वो डोकरी श्री-
आचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते । ऐसी भान्यशील भई । जिन पे
श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसो अनुग्रह करें ।

भावप्रकारा—अनुग्रह काहेतें करे जो वे सूधी बहुत । कछु
प्रपंच में समनें नहीं । और भक्तिमार्ग की तो यह रीति है जो
प्रपंच की विस्मृति होइ तो श्री ठाकुरजी अनुग्रह करें । और उनके तो
प्रपंच स्वप्न ही में नहीं । ताते वे परम उत्तमाधिकारी हैं । ताते
श्रीगोवर्द्धननाथजी उनसों साक्षात् बार्ते करें ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी सों आज्ञा
मांगिकें आप श्री गोकुल पधारे । सब वैष्णव संग है । आपके
परम कृपा पात्र सेवक दामोदरदासजी प्रभृति सो श्रीआचार्यजी
महाप्रभू आप मन में विचारें जो पृथ्वी पावन कों चलें
तो आछो ।

भावप्रकारा—क्यों जो दैवी जीव तो शकटौर हैं नाहीं । सर्वत्र
देशान्तरन में हैं ।

ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी सों कहे ।
वार्ता द्वितीया ॥ २ ॥

तब श्री आचार्यजी महाप्रभू । एक समें श्री गोकुल में
गोविन्द घाट के ऊपर एक चोतरा है । ताके ऊपर छोंकर को
बुच है । ताके नीचे श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजे हैं ।
सब सेवक गस छडे हैं । इतने में एक बैरागी आयो । सो
आइके वानें छोंकर की डारसों अपने सालिग्राम को बढवा हुतो

तो लटकाइ दीयो । और कपड़ा उतारिके श्रीजमुनाजी के तीरपे धरयो । और आप स्नान करिबे पेटबो इतने में स्नान करिके जब आयो तब देखे तो उहां सालिग्राम को बटुवा नांही । तब वा वैरागी ने श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो महाराज मेरो इहां बटुवा हुतो सो इहां नांही । काहू आपके सेवक ने लीयो होइ तो मेरो ले दीजिये । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो हमारे सेवक तेरो बटुवा काहे को लेइंगे । तू जहां धरयो होइ तहांई देखि । सो इतने में देखे तो सगरो छोंकर बटुवानसों भरयो है । तब वा वैरागी ने । श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कहे जो महाराज यह तो सगरो छोंकर बटुवान सों ही भरयो है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो तेरो एक उतारिले । सो इनमें तें उतारिबे लग्यो । तब देखे तो एक ही है । सो वानें उतारि लीयो । वा वैरागी को श्री-आचार्यजी महाप्रभू ऐसे महात्म्य दिखाए परि वह दैवी जीव तो हुतो नहीं जो सरन आवे । जो दैवी जीव होतो तो सरन आवतो । इतनों श्रीआचार्यजी महाप्रभू धपनों महात्म्य अपने सेवकन को दिखाए । और छोंकर को स्वरूप प्रगट किये जो इह छोंकर ऐसा है ।

और जहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है । तहां छोंकर की रुख है । और श्री गोकुल की बैठक ऊपर जो छोंकर है । ताको नाम ब्रह्म छोंकर है । या छोंकर के पात-पात भगवदरूप हैं । तहां तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह

विचारे जो होइ तो प्रथम कासी चलें । कासी में मायावादी बहुत हैं । और सिवकी पुरी है । सो सब जीव भगवान तें बहिमुख हैं । तारें कासी चलिक्के मायावादीन कों जीतें और मायावाद को खंडन करें । तब सब वैष्णव संग लेके श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप कासी पधारे । सो मणिकर्णिका ऊपर श्रीगङ्गाजी के तीर आप स्नान करिकें तीर पे विगजे । ता समें उहां बड़े बड़े पण्डित स्नान करिबे कों आए हुते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्सन उनकों भये सो वे जानें जो ए बड़े पण्डित हैं । तब वे चरचा करन लागे सो चरचा में सवनकों निरुचर किये मायामत को खंडन किये । भक्ति-मार्ग स्थापन कीये ।

ता समें पुरुषोत्तमदास सेठ चत्री हुते सो उहां के नगर सेठ-हुते सो ये मणिकर्णिका पे स्नान करन आए । तब उहां इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन भये । सो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्सन भये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों माष्टांग दंडवत कीये । ओर विनती करी जो महाराज मो पर अनुग्रह करिकें मोकों अपनो करिये ! तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनकों नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो । तब सेठ पुरुषोत्तम दास विनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये । मेरो गृह पावन करिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अनुग्रह करिकें सब भगवदी संग लेके सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे । तब पुरुषोत्तमदास सेठ के घर के सब सेवक भये । सवनकों आप

श्रंगीकार किये और श्री मदनमोहनजी ठाकुर सेठ पुरुषोत्तम दास के माथे पधराए । और वही समें सेठ पुरुषोत्तमदास को सेवा की सब रीति सिखाई । सेठ पुरुषोत्तमदास सपन्न बहुत हुते । सब पात्र सामग्री सब सिद्ध करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पाक करिके श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्ये । पाछे आप भोजन करिके सेठ पुरुषोत्तमदास के घर विराजे उहां ही आप रहे । सो पुरुषोत्तमदास सेठ के घर में श्रीआचार्यजी महाप्रभू की बैठक है गई । सो सब पण्डित उहां ही चरचा करिवे को आवें । सो बड़े बड़े स्मार्त । मायावादी । उहां बहुत सो नित्य आइके भगरो करे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबनको निरुचर करिदेहि । तब एक दिन श्री आचार्यजी महाप्रभू विचारे जो यह नित्य उठिके मायावादी आइके दुःख देत हैं सो ऐतो बहुत, कौन कौन सो माथो पचाइये । तब एक पत्राबलंबन । श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ग्रन्थ किये । सो ग्रन्थ एक पत्रा पर लिखिके एक वैष्णव को दिये । जो यह पत्र जाइके विश्वेस्वर महादेव के मन्दिर की भीत सो लगाइयो । सो श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप वा पत्र के नीचे लिखे जो या पत्रको बांचिके ता पीछे कोऊ हमसो वाद करिवे आईयो । सो विश्वेस्वर के दर्शन को तो यहां सब मायावादी आवें । सो पत्र देखे जो जो उनके मन में चिंता सन्देह होइ । तो ताही को वामें उत्तर मिले सो गोपालदासजी गाए हैं बल्लभारुगानमें ।

“पत्राबलंबे पण्डित जीत्या मायिक मत मांतग” ।

सो वे पत्रा बांचिकें पाछें कोउ मायावादी श्रीआचार्यजी महा-
 प्रभूनके पास जाई ही नहीं । कैसे जैसे श्रीआचार्यजी महाप्रभून
 के सेवक विष्णुदास । सो विष्णुदास यह विचारे जो सब माया-
 वादी आइके श्रीगुसाईंजी को श्रम करिवावें हैं । सो विष्णु-
 दास को आछो न लाग्यो । सो जो मायावादी आवे कौसोई
 परिडत होइ । तासों पूछे जो तू क्यों आयो है । तब वे कहे
 मैं श्रीगुसाईंजी सों चरिचा करिवे को आयो हूँ । ये बड़े पंडित
 सुने हैं । तब विष्णुदासजी कहे । तुम कहा पड़े हो । जो वे
 बतावे ताही को श्रीआचार्यजी महाप्रभून की कृपा बल सों
 दूसनि देहि । तब वे परिडत निरुत्तर होइके जात रहैं । ऐसो
 पत्रावलंबन ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभू कीये । जो जासों
 बहिरमुखन सों संभाषण ही करनों न पड़े ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तमदास के घर में ।
 अपनी बैठक में विराजे । सो सेठ पुरुषोत्तमदास के बहुत
 समृद्धि सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सेवा भली भांति सों
 करी । जैसे श्रीमदनमोहनजी की सेवा करें । तैसे श्रीआचार्यजी
 महाप्रभूजी की करें । तैसी ही रीति सों जे श्रीआचार्यजी
 महाप्रभून के संग भगवदी हैं दामोदरदासजी कृष्णदासजी
 मेघन प्रभृति । बहुत भगवदी सङ्ग हुते । तिनहूँ की सेवा आछी
 भांति सों करें । सेठ पुरुषोत्तमदास के ऊपर श्रीआचार्यजी
 महाप्रभून को बहुत अनुग्रह । जो तीन वस्तु चाहियें सो तीनों
 वस्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभून को दीनी भगवत्सेवा, गुरुसेवा

और भगवदीन की सेवा । सो कासी में जे दैवी जीव हुते ते सब श्रीआचार्यजी महाप्रभू की सरनि आये ।

सो कासी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कितनेक दिन विराजे । ऐसे में जन्माष्टमी को उत्सव आयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मन में विचारे जो अवतार तो श्रीठाकुरजी के समी हैं । परि कृष्णावतार सब अवतारन को मूल है । सब अवतार इनसों भये हैं । श्रीभागवत् में कहे हैं ।

“एतेचांशकलापुंशः कृष्णस्तु भगवान्स्वयं”

सो कृष्णावतार हमारो सर्वस्व है । और हमारे तेव्य हैं । और पुष्टिमार्ग इहां ही तें प्रगट भयो है । सो पुष्टिमार्ग कहा जो । ब्रजभक्तन को स्नेह सो सब स्नेह को मूल है । सो नन्द-महोत्सव है । श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप प्रगट करिबे की इच्छा कीनी ।

भावप्रकाश—काहेतें जो नन्द महोत्सव आप प्रगट करें तो दैवी जीव जाने जो नन्दरायजी के घर ऐसो उत्सव प्रगट भयो । सो शुक्रदेवजी तो राजा परीक्षितसों कहिके बताये और श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो अपुने दैवी जीवन को साक्षात् नन्द महोत्सव के दर्शन करावाये । कैसें ? श्री ठाकुरजी तो आप पालन भूलें । श्री रानीजी मुलाबे ब्रजभक्त श्रीनन्दरायजी तथा गोप सब नृत्य करें । सो ऐसो उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदास के घर श्री आचार्यजी महाप्रभू आप प्रथम ही प्रागट्य करनो विचारे । काहेतें जो बहुत समृद्धि विना । यह उत्सव बनि न आवे । सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर जो वस्तु चाहियें । सो सब सिद्ध हैं ।

सो श्री मदनमोहनजी के आगें नन्द महोत्सव प्रथम ही

भयों । सो यह उत्सव श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तमदास के घर प्रगट किये । सेठ पुरुषोत्तमदास के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को ऐसो अनुग्रह है । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तमदास को नाम देवे की आज्ञा दीनी जो हम तो फेरि जब भगवत इच्छा होइगी तब इहां आवेंगे । और दैवी जीव तो बहुत तिन सबन को अंगीकार करनो । तारें सेठ पुरुषोत्तमदास को नाम देवे की आज्ञा दीनी आज्ञा देकें श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप श्री जगन्नाथजी पधारे । वार्ता वृतीय ॥ ३ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दैवी जीवन को उद्धार करनो । और पृथ्वी को पावन करनी । तीर्थन को सनाथ करनो । मायामत को खंडन करनो । ताके लिये आप श्रीजगन्नाथरायजी पधारे सो श्रीजगन्नाथरायजी बड़ी पुरी है । पुरुषोत्तम क्षेत्र है सब पृथ्वी में प्रसिद्ध है और पूजा को बड़ो प्रकार है । ये मायावादीन सो सब देश आछादित हुतो । सो आप श्री-आचार्यजी महाप्रभू पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे । ता दिना एकादशी को दिन हुतो । सो आप जब पुरी में पधारे मन्दिर के निकट । तब एक कोउ महाप्रसाद ले आयो । सो उहां महा-प्रसाद को महात्म अधिक है । श्रीठाकुरजी के दर्शन तो पाछें और महाप्रसाद प्रथम । श्रीआचार्यजी महाप्रभून की तो यह प्रतिज्ञा है जो एकादसी के दिन तो जलहू न लेनो । और वानें तो आदकें महाप्रसाद दियो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपु

श्रीहस्त में लिए सो आप तो साक्षात् ईश्वर । वेद में पुराण में जहां जहां महाप्रसाद को महात्म्य हुतो । सो वा समें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप महात्म्य के श्लोक श्रीमुखते कहिवे लागे । सो कहते कहते एकादसी को दिन और रात्रि सब व्यतीत होइ गई । जब सवारो भयो । तब स्नान सन्ध्या की कछू मन में बाधा न राखी । और महाप्रसाद लिये । ता पाछें श्री जगन्नाथरायजी के दर्शन कीये । जो पुरुषोत्तमपुरी में श्री आचार्यजी महाप्रभून को ऐसो महात्म्य देखिकें सब कोउ कहे जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं । मनुष्य में तो यह विद्या न कहुँ देखी न सुनी । ब्यारो वेद पुरान सब सास्त्र जिनके जिह्वाग्र । ऐसैं सब कोउ कहे । सो यह समाचार उहां के राजानें सुनें । सो सुनिकें राजा श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आयो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करिकें राजा बहुत प्रसन्न भयो । और कखो जो मेरो बडो भाग्य है जो में यह दर्शन पायो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून की विद्या और इनको सौन्दर्य तेज प्रताप देखिकें राजानें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो महाराज इहां हमारे देश में ब्राह्मणन को सदा आपस में क्लेश चन्पो जात है । सो ये मायावादी तो अपुनी खेंच करे हैं । सो ये नित्य लरे हैं । सो आप साक्षात् ईश्वर हो । यह ब्रह्म क्लेश आप मिटाय देऊ । आप बिना ऐसी काहू की सामर्थ नाहीं । जो और काहू सों यह भूमरो निबडे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हां । जैसे तुम्हारे मनोर्थ है

सो श्रीआचार्यजी तब सिद्ध करेंगे । प्रभू सर्व सामर्थ्य सहित हैं । और भक्त मनोरथ पूरक हैं । तब यह बात सुनिकें राजा बहुत प्रसन्न भयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो जितने हैं तुम्हारे इहां ब्राह्मण तिन सबनको एकत्र करो । और उनमें जो बड़े बड़े परिडत होइ सो आइकें हम सों घरचा करें । तब राजा सब ब्राह्मणन को बुलवायो । सो सब आइकें श्रीजगन्नाथरायजी के मन्दिर में भेले भये । वैष्णव स्मार्त और बड़े बड़े मायावादी । सो राजाहू आइकें बैठ्यो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप मन्दिर में पधारे । सो सबन को ऐसैं दर्शन भये जो साक्षात् सूर्य के अग्नि हैं । ऐसैं तेजोमय दर्शन भयो । उन ब्राह्मणन में जे बड़े बड़े परिडत हुते ते श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों वाद करन लागे । सो जों जो बे युक्ति लावें । सो श्री आचार्यजी महाप्रभू उनकी सब युक्ति को खंडन करें । सो सब निरुत्तर होइ जाइ । सो बे ब्राह्मण बहुत हुते । सो सवारे बे बैठे । सो तीनि पहर ताई श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विराजे । और राजाहू बैठ्यो रख्यो । परि भगरो चुके नाहीं । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू ब्राह्मणन सों कहे जो तुम्हारे जो वाद है । ताको जो श्रीजगन्नाथरायजी कहे । सो प्रमाण । तब राजा और ब्राह्मण कहे जो महाराज श्रीजगन्नाथरायजी कैसे कहेंगे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे । जो श्रीजगन्नाथरायजी आरोगत कैसे हैं तुम तो भोग घरत हो । तैसें ही श्री जगन्नाथरायजी के आगे कागद कोरो और लेखन द्याइ

धरो । जो मार्ग सांचो होइगो सो श्री जगन्नाथरायजी लिखि-
 देंगे । सो यह बात सुनिकें बड़ो आश्चर्य भयो । और कागद
 लेखनि द्वात मंगवाए । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप राजासों
 कहे जो मन्दिर में जे श्रीठाकुरजी के सेवक हैं । पंढ्या जे होइ
 तिन सबन कों बाहिर काढो । और यह कागद लेखन द्वात
 तुम जाइकें श्री ठाकुरजी के आगें धरि आओ । और किवार
 दे देऊ । और तुम उहां किवार के आगें बैठो । जब हम कहें
 तब किवार खोलियो । सो जा भांति श्री आचार्यजी महाप्रभू
 कहे ताही भांति सों राजा ने कीयो । और राजा आप किवार
 के आगें बैठ्यो । जब श्रीजगन्नाथरायजी लिखि चुके तब श्री
 आचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो अब किवार खोलो । तब
 राजा किवार खोलिकें देखे तो श्री जगन्नाथरायजी के आगें
 कागद लिख्यो धरयो है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा
 सों कहे जो कागद ले आवो । तब राजा कागद ले आयो ।
 तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो सब ब्राह्मणन कों दिखावो ।
 तब सब ब्राह्मण कागद बांचे । सो श्री जगन्नाथरायजी के
 हस्ताक्षर देखिकें सब प्रसन्न भये । सब कहे जो श्रीजगन्नाथ
 रायजी लिखे सो सांच । सो वचन हमारे माथे पर । तब श्री
 आचार्यजी महाप्रभून की सब कोउ स्तुति करन लागे । और
 कहे जो धन्य ये जिनकी आज्ञा में श्रीठाकुरजी ऐसैं हैं । जो
 ये कहें सो करें । वैष्णव मारग सत्य भयो । और मायामत को
 रूंदन भयो । और कह्यो जो महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो ।

यह ब्रह्म ब्रह्मस्य आप विना और काहू सों न मिटतो ।

तब इतने में एक ब्राह्मण बड़ो मायावादी हुतो । सों बोन्यो जो हमकों तो यह लिख्यो प्रमान नांही । हम तो जो परंपरा करत हैं सो करेंगे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो सास्त्र की मर्यादा ऐसे हैं जो जाको भगवद वाक्य पे बिस्वास न होइ ताकों म्लेच्छ जानिए । सो ताकों तुम राजा हो निश्चें करो । याकी माता सों पूछो जो यह कौन को वीर्य है । ब्रह्मवीर्य तो यह न होइ । तब राजा कों हैं बुरो बहुत लाग्यो । सो बाकी माता कों बुलायो । और एकांत में पूछे जो सांच कहू । यह तेरो बेटा कौनते उत्पन्न भयो है । नांतर तेरे प्राण जाइंगे । ऐसो बाकों भय दिखायो । तब जो हुतो सो बाने वृतांत कस्यो । तब राजा और सब ब्राह्मण एही कहे जो साचात ईश्वर हैं । और श्रीजगन्नाथरायजी आप लिखे सो श्लोक—

“एकं शास्त्रं देवकी पुत्रगीतमेंकोदेवोदेवकी पुत्रएव । मंत्रो-
प्येकंतस्यनामानियानिकर्मोप्येकंतस्यदेवस्य सेवा” ॥ १ ॥

यह श्लोक श्रीजगन्नाथरायजी आप श्रीहस्त सों लिखे । सो याको अर्थ श्रीठाकुरजी कें श्रीमुख के वचन जो भगवद्गीता है सो प्रमाण । सब देवन में जो मुख्य श्री कृष्ण । सब देवतान के अनेक मंत्र हैं । परि जीव तो कृतार्थ । एक भगवन्नाम तें ही होय । और जीव तो अनेक देवतान की पूजा करे हैं । परि आवागमन काहू कौ न मिटे । सब संसार में ही भटके । और जीव कों भगवत्प्राप्ति तो एक भगवत्सेवा ही तें होइ । ऐसं

वैष्णव मारग श्रीजगन्नाथरायजी स्थापन किये । जो श्रीकृष्ण के भजन ही सों यह जीव कृतार्थ होइ । और काहू भांति सों न होइ । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भक्ति मार्ग स्थापन किये । मायामत को खंडन किये । सो ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को महात्म्य देखिकें जे दैवी जीव हुते ते शरण आये । जिनके लिए श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं । सो कछुक दिन उहां रहिकें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पुरुषोत्तम क्षेत्र तें आगे । पृथ्वी पावन करिवे को पधारे । वार्ता चतुर्थ ॥ ४ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दक्षिण देश को पधारे । सो सब भगवदीय दामोदरदासजी, कृष्णदासजी मेघन, प्रभृति और सब वैष्णव संग हे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं । सो एक दिवस में मार्ग में जात देखे तो एक बड़ो अजगर मरयो परयो है । और बाकें लचावधि चेंटा लगे हैं । श्री आचार्यजी महाप्रभू सो देखे । सो देखिकें आप कछू बोले नांही । सो और दिना तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप मार्ग में पधारते कथा वार्ता करत चलते । सो वा दिना श्रीआचार्यजी महाप्रभू कछू बोले नांही । जहां उतारो हुतो तहां आप पधारे । सो तहां स्नान करिकें पाक सिद्ध किये । श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्ये । पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप भोजन किये । परि काहू सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू बोले नांही । तब दामोदरदासजी बिनती करी जो महाराज आपके चरखारविंद सों ऐ सब सेवक लगे हैं । ऐ सब अपुनों घर बार कुटुम्ब छोडिकें महाराज के

साथ आये हैं। तो ए अब आपके बचनामृतनसों सीचे बिना कैसे जीवेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो दमला ते सवारे वह अजगर देख्यो ? तब दामोदरदास कहे जो हां महाराज में देख्यो, मरयो हुतो। और बाकों चेंटा लगे हुते। तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो यह अजगर पिछले जन्म में महन्त हुतो। और याने सेवक बहुत ही किये हे सो उदरार्थ जो मेरी जीवका चले। और उनके कृतार्थ करिबे की तो सामर्थ्य न भई। काहेते जो भगवत्सेवा। भगवन्नाम पराधर्य होइ। तो जीव कृतार्थ होइ। सो यह तो उदर भरिबे के लिए महन्त भयो सो मरे पाछे आप तो अजगर भयो। और वे सब चेंटा भये हैं। सो याकों खात हैं। और कहत हैं जो अरे पापी। तामें उद्धार करिबे की सामर्थ्य नाही हुती तो हमकों सेवक काहेकों कीयो ? हमारो जनमारो बृथा काहेकों खोयो ? सो बाकों देखिके मोकों मनमें बहुत ग्लानि आई। तब दामोदरदासजी विनती कीये जो महाराज ऐसे आप कहा विचारत हो। आप तो साक्षात् पूर्य पुरुषोत्तम हो। आपके नाम को जो जीव एक बेरह स्मरण करेगो ताको सब पाप भस्म होइ जाइगो। आप तो साक्षात् अग्निरूप हो। अग्निके संबंध ते कछू दोष रहत है ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह वार्ता ताहेके लिये प्रगट करी जो जीव सरख जाइ। सेवक होइ सो बेचारके होइ। ताते गुरु एक वल्लभाधीशजी हैं।

श्रीगुसाईजी सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभू का नाम कहे हैं जो ।

“श्रीकृष्ण ज्ञान दो गुरु”

सो ऐसो सिद्धान्त प्रगट करिकें ? श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप आगें पधारे ।

सो श्रीद्वारिका श्रीरणछोडजी के दर्शन कों पधारे । सो मार्ग में गुजरात पधारे । सो वैष्णव को समाज साथ बहुत हतो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपनो महात्म्य प्रगट करिवे के लिये, अपनों ऐश्वर्य दिखाइवे के लिये, श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चकडोल में विराजे । सो गुजरात के देसाधिपति के गोख नीचे बहैकें आप पधारे । सो वह गुजरात को देसाधिपति महादुष्ट हुतो । धर्म को द्रोषी हुतो । सो वा देसाधिपति के आगें असवारी बैठिकें निकस न सके । सो ऊपरतें खोजा की दृष्टि परी । तब वाने कही जो देखिये साहिब ! देखिये तो कैसी असवारी जाइ है ? तब वा देसाधिपतिनैं कखो जो अरे मूरिस्व ! तू मोहि आगि ते लरावत है ? तेरें मौंसों कछू बैर है कहा ? यह तो अग्नि है । मोकों भस्म करि डारे । तोकों दीसत नाही ? ता समें देसाधिपति कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू के दर्शन साक्षात् अग्नि को पुंज । तेजोमय से भये । सो देखिकें इरप्यो ।

पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू उहां ते द्वारिका कों पधारे । सो मारग में गोविंददुबे सेवक भये । सो वे गोविंददुबे बहुत

परिडत हुते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कह कइं । तब गोविंददुबे श्रोता होइ बैठे । और नवरत्न ग्रन्थ श्री आचार्यजी महाप्रभू इनही के लिये किये । काहेते जो गोविंददुबे एक समे विज्ञप्ति कीनी जो । महाराज मेरो मन सेवा में नाई लगे हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेवा में मन लगिवे बं लिये । नवरत्न ग्रन्थ लिखिके दिये । और आप श्रीमुखते कहे जो यह ग्रन्थ को पाठ करो । तुम्हारो मन सेवा में लगोगो । गोविंददुबे को जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अंगीकार किये हैं । सो श्रीरखछोडजी साक्षात् गोविंददुबे सों बातें करे हैं । सो गोविंददुबे तो सब वैष्णवन के ऊपर अनुग्रह करिवे के लिये । श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो । वैष्णव नवरत्न को पाठ करेगो ? ताकी सर्व चिंता निवर्त होइगी । चिंता है सो महा दोष है । चिंता सो भगवन्नामको, भगवत् सेवाको, वा जीव को अधिकार ही नहीं । ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने सेवकन की चिंता दूरि करिवे के लिये नवरत्न ग्रन्थ प्रगट किये । गोविंददुबे के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को हेसो अनुग्रह । ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू उहांते द्वारिका पधारे । तब गोविंददुबेहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून के साथ द्वारिका आए । सो एक दिवस श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिका में आप क्या कहत हुते । सो सब सेवक पास बैठे हुते । दामोदरदासजी हरसानी कृष्णदासजी मेघन । गोविंददुबे । रामान्यास । रामदासजी । औरहू बहुत भगवदी हुते । और

श्रीरखड्योडजी के सेवक बहुत । सो ता समें कथा में सब रसा-
विष्ट भये । जैसे चन्द्रमा को चकोर देखे । तैसें सब कोई श्री-
आचार्यजी महाप्रभून को श्रीमुख देखें । ऐसो श्रीआचार्यजी
महाप्रभून को नाम है जो ।

“श्रीभागवत्पीयूष समुद्रमथनक्षमः”

सो श्रीभागवतरूपी अमृतके समुद्र में सब भगवदीन को
श्रीआचार्यजी महाप्रभू मग्न करि दिये । काहूको कछू देहा-
ध्यास न रह्यो । ऐसी रीतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कथा
कहत हुते । सो ऐसे में एक घटा उठी सो सब आकास घटा
सों छाड़ गयो । सो जब बूँद आइवे लगी, तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभू श्रीहस्त सों बरजे । ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू
विराजे हुते । और जहाँ लों सब वैष्णव बैठे हुते तिनकी
दूरि दूरि ज्यारो आडी मेइ बरसे । और बीच में एक चक्र सो
रहि गयो । तहाँ एक बूँदहू न परी । ऐसें वर्षा बहुत भई । सो
गोविंददुबे श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो ?
महाराज हमतो आपको साबात पूर्णपुरुषोत्तम जानें हैं ।
आपकी माया ऐसी है । जो एक छिन में अनेक ब्रह्मड को
रचे हैं । और नाश करे हैं । सो आप हमको ऐसो काहे को
दिखावत हो । हम तो आपको स्वरूप आछें जानत हैं ! काहेतें
जो आप अनुग्रह करिकें दिखाए हो । तातें नाहीं तो आपको
स्वरूप तों ऐसो है जो वेदहू नेति नेति कहे हैं । तातें जीव
कहा जो जानें ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो

मैं कलू वर्षा याके लिये तो नांही बरज राखी जो तुम मेरो महात्म्य जानों । कथा कहत में उठनों परतो । ताके लिये ऐसे किये । उठे पाछें फेरि ऐसो रसावेश होइ के न होइ । तब भगवदी सब बहुत प्रसन्न भये । सो द्वारिका में श्रीआचार्यजी महाप्रभू के सेवक बहुत बहुत भये । पृथ्वी में औरहू बड़े बड़े भगवद्दाम हैं । श्रीजगन्नाथरायजी, श्रीरङ्गनाथजी, श्रीलक्ष्मणजी, श्रीबद्रीनाथजी, परि तामें श्रीद्वारिकाजी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुनी सत्ता राखी । तवतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू के ही सेवक श्रीरणछोडजी की सेवा करे हैं । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू की सत्ता जानिकें श्रीगुसाईंजी छै बेर श्रीद्वारिका पधारे ।

ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिका तें नारायणसर पधारे । सो मारग में मोरबी में दोइ भाई पुष्करणां ब्राह्मण रहते । सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरबी पधारे । तब वे दोउ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभू के सरण आये सो वे दोउ भाई दैवी जीव हुते । तिनके लिये श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हुते । सो एक को नाम तो बाला हुतो । और दूसरे को बाद हुतो । सो बाला को नाम तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बालकृष्ण धरे । और बाद को नाम बादरायण धरे । ता पाछें उन दोउ भाई नें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सों विनती कीनी जो महाराज अब हमारो निवाह कैसें करे ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे । जो तुम भगवत्सेवा करो । तब उननें कहे जो

महाराज सेवा हमको पधराइ दीजे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो तुम एक वस्त्र लेआवो । तब वे वस्त्र ले आये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चरखारविंद सों कुंकुम लगाइके । वा वस्त्र ऊपर दोऊ चरखारविंद धरे । सो उनको अनुग्रह करिके अपने चरखारविंद की सेवा दीने । सो वे दोउ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभून की कृपाते बड़े भगवदी भये । पाछे उहांते श्रीआचार्यजी महाप्रभू सब वैष्णवन को संग लेके फेरि आप ब्रजको पधारे । वार्ता षष्टम् ॥ ६ ॥

एक समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रजको चले । ता समे श्रीगोवर्द्धननाथजी विचारे जो मन्दिर तो छोटी । और समृद्धि तो बहुत भई । बड़े मन्दिर बिना सेवा को मंडान कैसे होइ । तब एक पूरणमल्ल क्षत्री जवल अंवालय में रहते । सो पूरणमल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो । सो वह पूरणमल्ल दैवी जीव हुतो । उनको द्रव्यहू दैवी हुतो । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वाके घर पधारे । सो वासों श्रीगोवर्द्धननाथजी स्वप्न में कहे जो हम श्रीगोवर्द्धन पर्वत में ते प्रगट भये हैं । देवदमन हमारो नाम हैं । सो तू आइके हमारो मन्दिर श्रीगोवर्द्धन पर्वत ऊपर बनवाइ । सो स्वप्न में पूरणमल्ल को साक्षात् दर्शन भये । सो कोटिकंदर्पलावण्य सौंदर्य वाको दर्शन भये । सो सबारे भये पूरणमल्ल को चटपटी लगी । सो सब काम काज छोडिके पूरणमल्ल श्रीगोवर्द्धन आये । तब उहां आइके पूछे जो इहां देवदमन ठाकुर सुने हैं सो कहाँ हैं ? तब कोउ ब्रजवासी हुतो ।

तानें बताए जो पर्वत ऊपर हैं । तब पूर्यमन्ल पर्वत ऊपर आइके दर्सन किये । दर्सन करत ही पूर्यमन्ल बहुत प्रसन्न भयो । और मन में कहे जो अनुग्रह करिके मेरे घर पधारे मोको दर्सन दिये । सो ऐही हैं । श्रीगोवर्द्धननाथजी को दंडवत करि पूर्यमन्ल रामदासजी चौहान सेवा करत हुते । तिनसों पूछे जो इहां सेवा तुम ही करत हो । के कोउ और ही सेवक है ? तब रामदासजी कहे जो इनके सेवक तो बहुत हैं । ऐ नीचे आन्यौर गाम है । इहां जो जो रहत हैं ते सब सेवक ही हैं । सब सेवा करत हैं । दूध दही माखन जो चहिये सो ऐ सब कछू लावत हैं । इनको श्रीआचार्यजी महाप्रभून की आज्ञा है । इनको सोंपिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे हैं । तब पूर्यमन्ल ने पूछी जो वे कौन हैं । तब रामदासजी कही । जो जिनके ऐ देवदमन ठाकुर हैं । जिनके लिये ऐ प्रगट भये हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा को पधारे हैं । तब पूर्यमन्ल ने रामदास सों कही जो मोको इनने आज्ञा दिये हैं जो तू मेरो मन्दिर बनवाइ । सो में इनको मन्दिर बनवाइवे के लिये आयोहूँ । तारे तुम मन्दिर बनवाइवे को उद्यम करो । तब रामदासजी कहे जो या गाम के मुकद्दम सधूपांडे हैं । तुम उनसों कहो । तब पूर्यमन्ल सब समाचार सधूपांडे सों कहे । तब सधूपांडे ने उचर दियो । अरे भैया ! यह मन्दिर तो मेरो और तेरो बनवायो बने नाहीं । जिनके ऐ ठाकुर हैं । सो पृथ्वी परिक्रमा को गए हैं सो अब वे आवेंगे तब जो वे आज्ञा देंगे

तो मन्दिर बनेगो । तब यह बात सुनिके पूरुषमन्त्र विचारयो जो श्रीठाकुरजी आप मोकों बुलवायो है ताते धर तो न जानों । यह निर्दार करिके पूरुषमन्त्र आन्यौर में रहे । श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मार्ग देखे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वभाव है जो । भक्त विरह कांतर करुणामय डोलत पाछे लागें । और श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा भई मन्दिर बनवाइवे की । ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू वेगि ब्रजमें पाउघारे । सो आइके श्रीगोवर्द्धननाथजी को दर्शन कीये । और सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करिके बहुत प्रसन्न भये । पूरुषमन्त्रहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करिके बहुत प्रसन्न भये । यों जाने जो एतो साक्षात ईश्वर हैं इनमें और श्रीठाकुरजी में कछू भेद नांही । तब पूरुषमन्त्र ने श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों बिनती कीनी जो महाराज । मोकों नाम दीजिये । मोकों अपुनों करिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिके अंगीकार किये । तब पूरुषमन्त्र ने श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों बिनती कीनी और सब वृतांत कथ्यो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे हां हम पूछे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पूछे । तब आज्ञा भई जो मन्दिर सिद्ध करो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरुषमन्त्र को आज्ञा दीनी जो मन्दिर सिद्ध कराओ । तब पूरुषमन्त्र आगरे ते कारीगर बुलवाये । जां भांति सों मन्दिर सिद्ध भयो । सो पूरुषमन्त्र की वार्ता में प्रसिद्ध है ।

सो मन्दिर सिद्ध भयो । मन्दिर बहुत बढो भयो श्रीगोव-
 र्द्धननाथजी मन्दिर में विराजे । मन्दिर के ऊपर ध्वजा
 फहराये । अक्षयतृतिया के दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोव-
 र्द्धननाथजी को पाट बैठाये । सो दर्शन करिके पूरखमल्ल बहुत
 प्रसन्न भये और कबो घन्य यह दिन जो श्रीठाकुरजी जैसे
 मोको अनुग्रह करिके आज्ञा दीनी जैसे मेरो मनोर्थ सिद्ध भयो ।
 तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरखमल्ल ऊपर बहुत प्रसन्न भये ।
 और श्रीमुखते कहे जो पूरखमल्ल कछू मांगि । जो मांगे सोई
 देऊं । तब पूरखमल्ल ने कही जो महाराज ! मेरो मनोर्थ यह
 है । जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को अरगजा में समर्पू । तब
 श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिके कहे । जो हां समर्पिं ।
 जो तुम्हारो मनोर्थ होइ सो पूर्ण करो । तब पूरखमल्ल श्री-
 गोवर्द्धननाथजी को अरगजा समर्प्ये । सो अरगजा समर्पिके
 पूरखमल्ल बहुत प्रसन्न भये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरख-
 मल्ल ऊपर बहुत प्रसन्न होइके अपनो ओखो उपरना प्रसादी
 पूरखमल्ल को दीये । तब पूरखमल्ल श्रीआचार्यजी महाप्रभू
 को साष्टांग दंडवत करि आज्ञा मांगिके अपने घर अंवालय
 को गये ।

पाछे रामदासजी की देह छुटी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू
 सधूपांडे को बुलवाये । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू सधूपांडे को
 आज्ञा दीनी जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मन्दिर तो बढो सिद्ध
 भयो । सो ऐसे बड़े मन्दिर में सेवक हू बहुत चाहिये । ताते तुम

ब्राह्मण हो । और यह मर्यादा है जो भगवत्सेवा ब्राह्मण करें तो आछो । तब सधूपांडे नें कहे जो महाराज हमारी जातिके तो कछू आचार विचार जानत नाहीं तातें महाराज सेवा में तो कोई समझत होइ । ताकों राखिए । तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू विचारे जो श्रीकुरुड (राधाकुरुड) में ब्राह्मण हैं । सो वैष्णव हैं । कृष्णचैतन्य के सेवक हैं । इनकों राखिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू उन बंगाली ब्राह्मणन कों बुलाये सेवा की आज्ञा दीनी । सेवा की रीति भांति बताई सिखाई सब और श्रीगोवर्द्धननाथजी को नित्य को नेग बांध्यो । इतनी सामग्री श्रीठाकुरजी नित्य अरोगें और श्रीआचार्यजी महाप्रभू बंगालीन सों कहे जो इतनों नेग तो तुमकों नित्य सधूपांडे पहुँचाइ देहिगे । और अधिक आवे तो अधिक उठाईयों और या नेग में ते तो मति घटाइयो और या महा-प्रसाद सों तुम निर्वाह करियो । और ऐसैं श्रीआचार्यजी महा-प्रभू सेवा की आज्ञा दीनी और कहे । जो इनको समें तुम कबहू मति चूकियो । भोग जो भगवद् इच्छतें आइ प्राप्ति होइ सो धरियो । परि ठाकुरजी कों अवार न होइ ।

एक समें श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो मोकों गाइ न्याइ देऊ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे हां सिद्ध हैं । तब सधूपांडे कों बुलाइके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसैं आज्ञा दिए हैं जो मोकों गाइ लाइ देऊ । सो यह सुवर्ण को वेढा है । सो

याकी गाइ आवे । सो आनि देऊ । तब सधूपंडे ने कही जो महाराज घर में इतनों गौधन हैं । सो कौन को है ये गाइ भेस सब आपकी हैं हम तो तन मन धन सब आपको सौंप्यो है । हमारो रखो कहा है तातें जितनी गाइ आप आज्ञा करो । तितनो गाइ में ले आऊं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सधूपंडे सो कहे जो तुम न्यावो ताकी तो हम नाही नांही करत । तुम्हारी इच्छा परि मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने आज्ञा दीनी जो है । ताके लिए तुम प्रथम तो हमारे या सुवर्ष की तो गाइ ले आवो । तब सधूपंडे प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभून के या सुवर्ष की गाइ ले आये ।

सो गाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगें लाइ ठाढी कीनी तब सधूपंडे तथा और सब ब्रजवासी अपने अपने घरतें कोउ एक कोऊ द्वे गाइ लाइके श्रीगोवर्द्धननाथजी को भेट कीये । औरहूँ गाइ वैष्णवन के यहां ते बहुत आई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी को नाम गोपाल धरे । और श्रीगुसाईजी गोपाल नाम सों गोपालपुर बसाये । और भगवदी गाए हैं ।

* रागपूरवी *

आगें गाइ पाछें गाइ इत गाइ उत गाइ गोविंदा को गाइन में बसिबोई भावे । गायन के संग धावे गाइन में सुचिपावे गायन की खुररेंनु हियें लगावे ॥ १ ॥

गाइन सों ब्रज आयो वैकुण्ठ विसरायो गाइन के हेत

गिर कर ले उठावे । श्रुतस्वामी गिरिधारी विठ्ठलेश वपुधारी ग्वालन को भेष किये गाइन में आवे ॥ २ ॥

सो गाइन की बहुत समृद्ध बढी । ग्वाल बहुत राखे । सो वे ग्वाल गाइ चरावन को जाँइ । तब श्रीगोवर्द्धननाथजीहू गाइ चरावन को जाँइ । वन में सो उहां ही छ्याक आवे । सो श्रीबल्लदेवजी सब ग्वालन को बाँटे । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी सब ग्वालन की मंडली में बैठिके । आपहू छ्याक खाँइ । श्रीगुसाईंजी छ्याक वनमें ले पधारे । सो वार्ता में प्रसिद्ध है । गाइन को दूध बहुत होइ । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी दूध दही माखन बहुत अरोगे । ऐसी रीतियों सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा होइ ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू । एक दिवस श्रीगोकुल पधारे । सो गोविंदघाट ऊपर स्नान करिके अपुनी बैठक में विराजे । सब भगवदी आगे ठाढे हैं ता समे उहां एक ब्राह्मण आयो । सो वह ब्राह्मण पूजा मारगीय हुतो । सो वह ब्राह्मणउ उहां न्हायो । न्हाइके अपनी पूजा वाने खोली सो पूजा को साज सब मांग्यो । सो बाके पास एक बंटी हुती तामें एक ठाकुर को स्वरूप हुतो । और एक सालिग्राम हुते सो वह ब्राह्मण पूजा करिवे को बैठ्यो । घूप दीप नैवेद्य करिके पाल्ले वाने फेरि बंटी में ठाकुरजी को पोढाए । और तिनकी छाती ऊपर सालिग्राम धरे । और बंटी को ढकना दियो ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभून की दृष्टि परी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सो कही जो या ब्राह्मण सो कहो जो तेरे सालिग्राम न्यारे धरि ।

ठाकुर के उदर पर मति बैठावे । तब दामोदरदासजी वा ब्राह्मण सों कही तब वानें कही जो महाराज अब तो कछू ए ठाकुर हैं नहीं ठाकुर तो में विसर्जन करि दीयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो अरे भगवत्स्वरूप तो है । परि वा ब्राह्मण नें मानी नहीं तब वो अपनो पूजा को साज बांधिकें उठि चल्यो । तब फेरि दूसरे दिन आयो । स्नान करिकें जैसे पूजा करत हुते । तैसे फेरि करिवे लग्यो ।

ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्ध्या वंदन करत हुते । सब भगवदी पास ठाढे हुते तब ब्राह्मणनें वंटी खोल्यी । देखे तो ठाकुर तो पोढे हैं । और सालिग्राम के टूक टूक व्हैगये । सो देखिकें ब्राह्मणनें बहुत दुःख पायो ? और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो महाराज में कान्हि आपकी आज्ञा न मान्यो । सो मेरे सालिग्राम के टूक टूक व्हैगये बहुत भीकवे लग्यो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो । तू जो फेरि ऐसे न करे तो सालिग्राम आछे होइ जाइ । तब वानें कही जो महाराज । अब में फेरि ऐसे कभू न करूंगो ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू इनके सब टूक टूक जोरि । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू इनके ऊपर जमुना जल डारि । सो वानें जमुना जल उनके ऊपर डारयो । सो वे सालिग्राम जैसे हुते तैसेई होइ गये । ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने सेवकन के ऊपर अनुग्रह करिकें अपनो महात्म्य अनेक रीतिसों दिखाये । बार्तासप्तम ॥ ७ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विचारे जो । हमकों श्रीठाकुरजी आज्ञा दीनी हैं जो । तुम भूतल में प्रगट होइ केँ दैवी जीवन को उद्धार करो ।

भावप्रकाश—सो दैवी जीवन को उद्धार तो दोइ वस्तु सों ही होइ एक तो भगवद् रूप सों । एक तो भगवन्नाम सों तामें भगवद् रूप तो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट भये । अब भगवन्नाम प्रगट करयो चाहिये । नाम सों कहा । श्रीमद्भागवत् की टीका श्रीसुबोधनी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप लिखे हैं जो जैसेँ व्यासजी को श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी है जो तुम श्रीभागवत् प्रगट करो । जैसेँ श्रीठाकुरजी ने हमकों आज्ञा दीनी है । जो तुम श्रीभागवत की टीका करो ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू विचारे जो । कोउ लिखनवारो होइ तो टीका होइ । आप ऐसेँ विचारे । ऐसेँ में एक कारमीर में बडो पंडित हुतो । केशवभट्ट वाको नाम । सो वानें अपने देस में सुनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट भये हैं । सो वे बहुत पंडित हैं सगरी दिग्विजे कीनी हैं । सगरी पृथ्वी के पंडित जाते हैं । चलो होइ तो उनसों मिलिये सो वे केशवभट्ट काहेकों आए जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो सरस्वती उलंघन न करें । तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास केशवभट्ट आयो । केशवभट्ट के संग सिष्य बहुत हुते तिनमें एक माधवभट्ट हुते । ते दैवी जीव हुते तिनके लिये केशवभट्ट आयो । सो आइकेँ श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती करी जो । महाराज आप दिग्विजे किये हो सब पंडित जाते हो । भक्त मारग स्थापन किये हो । और आपको श्रीआचार्य पदवी है । और

श्रीभागवत् एकादस्कंध में श्रीठाकुरजी उद्धव सों कहे हैं जो आचार्य मेरो स्वरूप है । आचार्य कों कोई मनुष्य मति जानियो तातें आप साक्षात् भगवत्स्वरूप हो । मोकों अनुग्रह करिकें आप कछू पढायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा केसवभट्ट के आगे कथा कहें तब सब भगवदी सुनें । और माधवभट्ट केशवभट्ट के संग हुतो । सो उनहू सुनी । सो माधवभट्ट कों तो । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीमुखतें कथा सुनेते भक्ति उत्पन्न भई । काहेतें जो दैवी जीव हुते और केशवभट्ट तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की विद्या देखन कों आयो हुतो । सो वाकें कछू बोध न भयो ता पाछें केशवभट्ट अपने स्थल में जाइकें अपने सेवकन सों कथा कहे । सो माधवभट्ट उहां न जाइ । और माधवभट्ट केशवभट्ट सों उदास भयो रहे और माधवभट्ट अपने मन में यह विचारे जो मेरे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के चरणारविंद छोडिकें कहूँ न जानों तब एक दिन केशवभट्ट नें माधवभट्ट सों कहे जो तू हमारी कथा छोडिकें उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवकन में बैठ्यो बैठ्यो बातें हाँसी करत है । तब माधवभट्ट नें कही जो तुम्हारी कथा सों मोकों उनकी हाँसी आछी लगे है । तब केशवभट्ट मनमें बहुत कुढ्यो जो । यह मेरे काम ते गयो । और माधवभट्ट ऐसो वचन काहेते कह्यो जो काहू भाँतिसों मेरो यह गोहन छोडे तब केशवभट्ट कितनेक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभून पास रह्यो । ता पाछें सीख मांगी और कहे जो महाराज में आपके श्रीमुखतें कथा सुनी परि

मोको कलू बोध न भयो सो थाको कारण कहा । तब श्री-
आचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू निराभिमानी होइके कथा नही
सुन्यो ताते तोको बोध न भयो । और या बात को उचर हुतो
सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू गोप्य राखे । उचर कहा हुतो जो
तू दैवी जीव होतो तो तोकूँ बोध होतो । सो यह बात कहिबे
की न हुती ताते और उचर दे दिऐ । तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभून सों केशवभट्ट ने कही जो महाराज यह माधवभट्ट मेरो
सेवक है । सो मैं आपकी भेट करत हूँ । तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभू कहे जो बहुत अच्छो । यह तो हमारे चहिये सो
माधवभट्ट बड़े भगवदी भऐ प्रथम तो बड़े पंडित तो हते ही ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधवभट्ट सों कहे जो हमारे ।
श्रीभागवत् की टीका करनी है । सो तुम लिखो सो श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहत जाइ सो माधवभट्ट लिखत
जाइ । जहां माधवभट्ट न समुझे तहां लिखनो छोडि देहि । तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभू समुझाइ के कहें । तब माधवभट्ट फेरि
लिखे । ऐसे माधवभट्ट कृपापात्र भऐ ।

भावप्रकारा—श्रीसुबोधनीजी प्रगट भई । दोठ वस्तु सिद्ध भई ।
श्रीगौवर्द्धननाथजी । श्रीगोवर्द्धन में ते प्रगट भये । और श्रीसुबोधनी ।
श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किए । और माधवभट्ट लिखे । सो दैवी
जीवन के भागिसों भगवद्रूपहूँ प्रगट भयो । और भगवन्नामहूँ प्रगट
भयो । सो निबन्ध में श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रथम ही आप लिखे जो—

“रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडतियोयत्:”

वार्ताअष्टम ॥ ८ ॥

एक समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू ओरछा देश है तहां पधारे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो अन्तर्यामी ईस्वर । सो उहां आगे मायावादीन सों और वैष्णवन सों भगडा होत हुतो । सो वे मायावादी कैसे हुते । जो साचात् देवी सरस्वती उनने पूजा करिके बस में करि राखी-हुती । सो वो मायावादी जा देश में जाइ तहां एक घट धरें ताके ऊपर एक बस्त्र उढार्ये । और सबन सों भगडा करें और कहें जो यह साचात् सरस्वती हैं । जाको ऐ सांचे करें सो सांचो । सो वो मायावादी जहां जाइ तहां जीते । उनसों कोउ चरचा न करि सके सो उहां ओरछा के राजा । रामभद्र नारायण के इहां ब्राह्मणन की सभा इकठोरी भई । सो वो मायावादी सबन कों जीते । सो यह समाचार उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें सुनें सो सुनिके श्री-आचार्यजी महाप्रभू । राजा की सभा में पधारे ।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन राजा करिके बहुत प्रसन्न भयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा सों पूछी जो । तुम्हारे इहां ब्राह्मणन को कहा भगरो है । तब राजा नें कही जो महाराज वैष्णव तो सब हारे हैं । और ऐ साकत जीते हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूछे जो मायावादी कैसे जीते हैं । तब राजाने कही जो महाराज साचात् देवी इनसों बोलत हैं । और इनको मार्ग कों सत्य कहत हैं तासों ए जीते हैं तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम देखें देवी कैसे बोलत है । तब राजा उन मायावादीन सों कहे जो बाबा अब तुम इनसों चरचा

करो, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों चरचा करन लागे । तब उनन कही जो महाराज साक्षात् सरम्बती हैं जो ये कहें सो सांच है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हाँ कहो सो वह कञ्चु बोले नांही बहुतेरो ब्राह्मण बुलावे परि वह घट में तें सन्द निकसैं नहीं ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो ये सब पाखंडी हैं । वैष्णव मार्ग तो साक्षात् श्रीकृष्ण श्री-भागवत् एकादस्कंध में उद्धवजी सों कहे हैं जो वैष्णव है । सो मेरो अंग है मेरो ही स्वरूप वैष्णव को जानियो । वैष्णव विषे ज्ञाति बुद्धि राखे सो महा अपराधी है ठौर ठौर वैष्णव को महात्म्य वेद में पुराण में सास्त्र में कहे हैं । सो ये मायावादी वैष्णव मार्ग ते कैसे जीतेंगे । तब वो मायावादी निरुत्तर होइके देवी के ऊपर मरिचे को बैठे जो । तें हमारो सभा में मान भंग क्यों कीयो । तुम बोली क्यों नहीं तब देवी ने कही जो अरे अपराधी वो तो साक्षात् मेरे पति हैं, मैं उनके आगे लज्जा छोड़िके कैसे बोलूँ । सो सारखी तो इनके कोटिक दासी हैं । कोई मनुष्य होइ ताके आगे में बोलूँ एतो साक्षात् पुरुषोत्तम हैं । सो यह सब समाचार । राजा ने सुने तब राजा मन में विचारे जो घन्य मेरो भाग्य जो । मेरे घर में साक्षात् ठाकुर पधारे हैं तब राजाहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून को सेवक भयो । और बहुत देवी जीव सरण आये । और वैष्णव मारगी जो ब्राह्मण हुते । तब सब प्रसन्न भये जो हमारो धर्म श्रीआचार्यजी महाप्रभू राखे ।

तब वह राजा श्रीआचार्यजी महाप्रभून को कनकामिषेण करायो । मायामति को खंडन भयो । भक्तिमार्ग को स्थापन कियो । पार्ले श्रीआचार्यजी महाप्रभू आगे पृथ्वी पावन को पधारे ।

सो एक सभे कृष्णचैतन्य । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करिके कृष्णचैतन्य बहुत प्रसन्न भये । और कहे जो महाराज मेरो बडो भाग्य है जो मैं महाराज के दर्शन पायो । तब कृष्णचैतन्य श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे भगवन्नाम को महात्म्य कहे जो ये श्रीठाकुरजी के चरखारबिंद में जो मन लगावे तो । यह जीव कृतार्थ होइ जाइ ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हमारो मार्ग तो ऐसो नाही हमारे मार्ग में तो चण एकहु जो श्रीठाकुरजी के चरखारबिंद में ते । मन काटे तो आसुरवेश होइ । ताही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप नवरत्न में कहे हैं जो ।

“तस्मात्सर्वात्मनानित्यं श्रीकृष्णःशरणंमम”

ऐसे जीव को अहर्निश कहनों पुष्टिमार्ग को ऐसो स्वरूप है यह वार्ता सब भगवदी श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीमुख सों सुने इनको सन्देह भयो जो । तब कृष्णदास मेघन मन में विचारे जो ऐसेहु भगवदी कोउ होइगे जो अहर्निश भगवन्नाम लेव हैं तब कृष्णदास मेघन को सन्देह आयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून में कृष्णदास मेघन के मन की जानी जो इनको सन्देह भयो है जो । कृष्णदास मेघन कछू पूछे होते तो

श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी उचर देते श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप मारग में पधारत हुते । सो मारग में एक सरोवर सुन्दर देखें । सो वा सरोवर के ऊपर वृक्ष बहुत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सों कहे जो आज तो हम इहांही पाक करेंगे यह स्थल बहुत सुन्दर है ।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप उहांही उतरे । सो आप जान करिकें पाक सिद्ध कीये । कृष्णदास मेघन पतोवा लेन गये । तब देखे तो सरोवर के तीर पर एक बडो जानवर बैठ्यो है । सो कृष्णदास मेघन अकस्मात वा जानवर के पास ही गाड़ ठाढे भये । परि देखत भय लग्यो । तब विचारे जो भगवत् इच्छा है सो होइगी तब तारें भगवन्नाम लीजिये । तब कृष्णदास मेघन वा जनावर सों श्रीकृष्ण सुमिरण कीये । तब वा जनावरनें जल में डुबकी मरिकें जल पीयो । तब दूसरी बेर फेरि श्रीकृष्ण सुमिरण कीये तब फेरि वा जनावरनें जल पीयो, तब तीसरी बेर फेरि श्रीकृष्ण सुमिरण कीये । तब फेरि वा जनावरनें । डुबकी मारिकें जल पीयो । तब कृष्णदास उहांति प्रागें जाइकें पतोवा लीने । परि मनमें विस्मे बहुत । जो कछू श्रुभू परी नहीं जो यह कहा में तीन बेर श्रीकृष्ण सुमिरन लीयो । और बानें तीनों बेर जल पीयो । कछू याको आसय गान्यों नहीं । तब पतोवा लैकें कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी महाप्रभू के निकट आये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कृष्णदास सों पूछे जो क्यों कृष्णदास तेरो सन्देह गयो । तब

कृष्णदाम मेघन कहे जो महाराज सन्देह तो आप जब अनुग्रह करिकें दूर करोगे तब दूर होइगो जीव तो सन्देह भरयो ही है । जीव की बुद्धि तो अलिप । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो वो जो तें जीव देख्यो सो बहुत दिना को प्यासो हुतो । और जल के तीर ऊपर बैठ्यो हुतो और जल न पीये । जो जल पीऊँगो तो मेरो भगवन्नाम छूटि जाइगो । ऐसी भगवन्नाम पे आसक्ति है सो तुमनें भगवन्नाम वाक्यों सुनायो, सो वानें तीन वेर जल पीयो । जीव को ऐसी भगवद नाम पे आसक्ति चाहिये । तब कृष्णदास मेघन मुनिकें बहुत प्रसन्न भये । मनको सन्देह गयो । वार्ता नवम् ॥ ६ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू पादुरंग विठ्ठलनाथ पधारे । जो उहां जाइकें बिराजे उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है । फेरि श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों मिले, और कहे आप श्रीमुखतें जो आप विवाह करो । सो पादुरंग विठ्ठलनाथजी काहे कों कहे जो तुम विवाह करो ।

भावप्रकाश—ताको कारण यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के मार्ग की तो बहुत दिन ताँई स्थित हैं दैवी जीवन को अङ्गीकार बहुत दिना ताँई करने हैं । और जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विवाह न करें तो । सिष्य द्वारा हू दैवी जीवन को अङ्गीकार होइ जैसें सेठ पुरुषोत्तमदास नाम देते । गोपालदास नाम देते । चाचा हरिवंशहू नाम देते । ऐसें औरहू सेवकन को नाम देने की आज्ञा श्रीआचार्यजी महाप्रभून की हुती । सो श्रीठाकुरजी विचारे जो । ये जो भगवदी इनकी आज्ञा तें

राम देव हैं । सो तो ये श्रीआचार्यजी महाप्रभू के कृपापात्र हैं । और ब्रह्म है ताते इनको जीव कृतार्थ करिबे की सामर्थ्य है । जैसे गदाधरदास भक्ति दीनी । प्रभूदास सुक्ति दीनी । परि आगे तो काहू की ऐसी समर्थ्य होही नाही । जैसे और वैष्णव सम्प्रदाय हैं । सो उनसों वेद मार्ग छूटि गये है । जहां वेद मार्ग छूट्यो । तहां जीव कृतार्थ कहाते होइ । ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू विवाह न करें । तो यहू मार्ग वेद रहित होइ जाते । और वेद रहित मार्ग में जीव कृतार्थ न होतो । ताते श्रीपांडुरंग विठ्ठलनाथजी आज्ञा दीनी जो । तुम विवाह करो मैं तिहारे घर जन्म लेऊंगो ।

बहां कोऊ सन्देह करे जो श्रीविठ्ठलनाथजी आज्ञा दीनी । तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा क्यों न दीनी । ताको कारन यह जो भगवन्स्वरूप को श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्पर्श करें । सो साक्षात् पूर्ण रूपोत्तम होइ जाइ ताते यह जानिये जो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी ही आज्ञा दीनी । और छीतस्वामी पद जो गाए हैं । तामें हू ऐसे ही गाए हैं । जो छीत स्वामी गिरधरन श्रीविठ्ठल । ताते श्रीगुसाईंजी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर हैं । आगरे में एक वैष्णव श्रीगुसाईंजी को पंखा करत हुतो । तिनको सन्देह भयो । सो उनको श्रीगुसाईंजी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर होइके दर्शन दिये । ऐसे दर्शन श्रीगुसाईंजी सबन को क्यों न देंहि जो ऐसे दर्शन सबन को देंहि । तो सब जगत कृतार्थ होइ जाइ । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू । और श्रीगुसाईंजी को प्रगट्य तो दैवी जीवन के उद्धार्य है । और आप सेवा मार्ग प्रगट कियो । सो आप सेवा करें तो । सेवा मार्ग प्रगट होइ । सो गोपालदासजी गाये हैं ।

आप सेवा करी सीखवे श्रीहरी भक्ति पद्म वैभव सुख कीयो ।

ताते आप साक्षात् ईश्वर हैं । परि सेवक भाव करिबे के लिये ।

मनुष्य देह को अनुकरण किये हैं ।

तब श्रीविठ्ठलनाथजी सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम विवाह कैसे करें । हमको कन्या कौन देइगो । हमारो ते कहें एकठौर वास नहीं । और ब्रह्मचर्य आश्रम कों हम अंगीकार कियो है और पृथ्वी परिक्रमा करत हैं । सो हम कौनसों कहें जो हमको कन्या देऊ । तब पांडुरंग विठ्ठलनाथजी कहे जो, में सब सिद्ध करि राख्यो हैं । आप कासी पधारो उहां एक ब्राह्मण तुम्हारो मार्ग देखे है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सब भगवदी संग लैके आप कासी कों पधारे । सो वह ब्राह्मण कैसे हुतो । वाके घर प्रजा न होत हुती और धृष्ट भयो, तब वाने श्रोटाकुरजी सों विनती करि प्रार्थना करी जो महाराज मेरे घर में प्रजा होइ तो मैं परमार्थ करूं जो बेटा होइ तो काहू महापुरुष की भेट करि देऊं और जो कन्या होय तो । ज्ञात में कोऊ अपूर्व निष्कंचन ब्राह्मण होइ ताको कन्या देऊं । सो भगवत् इच्छा ते वा ब्राह्मण के घर कन्या भई । सो कैसे कन्या भई । जिनको नाम श्रीमहालक्ष्मी धरे ।

भावप्रकाश—महालक्ष्मी काहेते जो जिनके पतिहू पुरुषोत्तम और पुत्रहू पुरुषोत्तम ।

सो वा ब्राह्मण के जब कन्या को विवाह काल आइ प्राप्ति भयो । तब वो नित्य कासी के द्वार पर जाइ ठाडो होइ । सो जो नगर में अपूर्व मनुष्य प्रवेश करे । वासों वो ज्ञात नाम पूछे सो नित्य ऐसे ही करे । सो ऐसे पूछत पूछत कितनेक दिन भये तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी पधारे । सो

सब भगवदी आपके संग हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कासी के द्वार विषे प्रवेश करत हुते । सो इतने में वह ब्राह्मण आई ठाडो भयो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सो पूछे जो आप कौन ज्ञाति हो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो हम तैलंग ब्राह्मण हैं पृथ्वी परिक्रमा करत हैं और हम ब्रह्मचर्याश्रम में हैं । तब वा ब्राह्मणने प्रसन्न होइके कही जो हमहूँ तैलंग ब्राह्मण हैं । और मेरे घर कन्या है सो में आपको दीनी । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो ईश्वर सब जानत हैं । और तापर पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजी की आज्ञा भई है । ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो बहुत अच्छो । तब वा ब्राह्मण ने आछो महर्त देखिके पूछिके श्रीआचार्यजी महाप्रभून को विवाह कियो ।

भावप्रकारा—सो जैसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पूर्णपुरुषोत्तम । तैसे वो साक्षात् महालक्ष्मी जी ।

सो वा ब्राह्मण के और तो प्रजा कछू हती नाहीं । एक श्रीमहालक्ष्मीजी बेटी भई सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को विवाह करि दीयो । और घर में जो कछू हुतो सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभून को समप्यो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो विवाह करिके पृथ्वी पावन को पधारे । तीसरी परिक्रमा श्रीआचार्यजी महाप्रभू विवाह भये पाछे कीनी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रज में पधारे ।

सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दर्शन कीये । श्रीआचार्यजी

महाप्रभू को विवाह भयो । तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत प्रसन्न भये । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू को आज्ञा दीनो जो । काहू स्थल सिद्ध करिकें आप बिराजो, आप गृहस्थाश्रम को अङ्गीकार कियो हैं । तातें उहाँतें श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा लैके श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप परासोली पधारे । तिनको नाम आदि बृन्दावन हैं सो उहाँ जाइके श्रीआचार्यजी महाप्रभू देखे । सो गोपालदासजी गाए हैं ।

त्यांथी श्रीबृन्दावन पाँठवारीया जहाँ मधुप करे मंकार ।
 कुसुम द्रुम नवमल्लिका, मकरन्दनो नहिं पार ॥ १ ॥
 तरु तमाल अति शोभिता, हेमयूथिका संजोड़ ।
 ललना ते सुभगा लटकतां, द्विडे ते मोदामोड़ ॥ २ ॥
 तान धुनि मुनि मयूर रूपे, सांभले धरि ध्यान ।
 नित्य लीला गान अवणै करते मधु पान ॥ ३ ॥
 कुंज सदन सोहामणु शोभा तणो नहीं पार ।
 विविधि रास मंडल रचना रची, खेलै श्रीनंदकुमार ॥४॥

ऐसे परासोली में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप रासलीला के दर्शन कीये । ताही तें श्रीगुसाईंजी आप सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभू को नाम कहे हैं जो ।

“ रासलीलैकतात्पर्य ”

भावप्रकाश—रासलीला जो हैं । सो जितनी श्रीठाकुरजी की लीला हैं । तिन सबन में फलरूप लीला है । याही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुबोधनी में रासलीला को नाम फलप्रकर्ण धरचो है ।

ऐसे दर्शन श्रीआचार्यजी महाप्रभू करिकें आप श्रीगोकुल पधारे ।

भावप्रकाश—सो जैसे आदि वृन्दावन में आप साक्षात् रासलीला के दर्शन कीये । जैसे ही श्रीगोकुल में साक्षात् बाललीला के दर्शन किये । श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो साक्षात् ईश्वर हैं । रासलीलाहू आपकी हैं । और बाललीलाहू आपकी है । और आप ही सब करत हैं । परि इतनों जो भगवदी न्यारो करिकें गाये हैं सो जो न्यारो करिकें न गावें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू मानुष्य देह को अङ्गीकार किये हैं । और श्रीआचार्यजी ठाकुरजी सेव्य रूप भये । श्री आचार्यजी महाप्रभू आप सेवा के भाव को अङ्गीकार कियो है याही तें भगवदी गाये हैं ।

✽ रागसारंग ✽

भक्ति श्रीगोकुलतें प्रगट भई ।

पहिले करि श्रीवल्लभनन्दन फिर औरन सिखई ॥ १ ॥

चारघो बरन सरन अपुने करि विधिनों बांढि दई ।

श्रीविठ्ठलनाथ प्रताप तेजतें सीनों ताप गई ॥ २ ॥

प्रगट हुते द्वै प्रेति अदिक्षित तिनहूँ मांगि लई ।

अब उदरे कहत अपुने मुख पत्री लिखि पठई ॥ ३ ॥

श्रीवल्लभ विठ्ठल श्रीगिरिधर सीनो एक सही ।

नव प्रकार आधार नारायण धोक लोक निवही ॥ ४ ॥

तारें श्रीआचार्यजी महाप्रभू । श्रीगुसांईजी । और श्रीगोवर्द्धन-नाथजी एक स्वरूप हैं । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू और श्रीगुसांईजी सेवा जो करे हैं सो जीवन के सिद्धार्य सो भगवदी गाये हैं ।

॥ रागदेवगंधार ॥

आपुनपे अपुनी सेवा करत ।

आपुन प्रभू आपुन सेवक जे अपुनों रूप उर धरत ॥ १ ॥

आपुन धर्म करत सब जानत मरजादा अनुसरत ।

छीतस्वामि गिरधरन श्रीविठ्ठल भक्त बखल नपु धरत ॥ २ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल पधारे सो गोकुल में श्रीबलदेवजी के संग कीडा करत श्रीठाकुरजी के दर्शन भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें कहे जो । श्रीठाकुरजी की इच्छा ऐसी दीसे है जो हम दोउ तुम्हारे घर प्रगट होइंगे । श्रीठाकुरजी की ऐसी इच्छा जानिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू के मन में बहुत आनन्द भयो ।

भावप्रकाश—बलदेवजी हैं तिनको नाम श्रीगोपीनाथजी धरेंगे । और श्रीनन्दराइ कुमार हैं तिनको नाम श्रीविठ्ठल धरेंगे और बलदेवजी साक्षात् वेद को स्वरूप हैं । सो वेद मार्ग को विस्तार करेंगे । और श्रीविठ्ठलनाथजी हैं । सो नन्दराय कुमार हैं । सो अपने जो दैवी शिव भगवदी हैं । तिनको परमानन्द को दान करेंगे । याको भाव गोपाल-दासजी कहें हैं ।

रगे ते रमतां दीठटां बलदेव श्रीगोविन्द ।

पुत्र भावे प्रगटशे, मन उपल्यो आनन्द ॥ १ ॥

बलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये श्रीविठ्ठल नंदा नन्द ।

ए वेद पंथ बिस्तारसे, जन आपशे आनन्द ॥ २ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी को पधारे । सो श्री-गोवर्द्धननाथजी आज्ञा दीनी है जो एकठौर आप विराजे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा मन में निर्द्धार करिके आप यह बिचारे जो कहैं स्वतंतर वास करना । जामें काहू की सत्ता न होइ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी तें श्रीमहालक्ष्मीजी को लैके आप अडेल को पधारे सो उहां स्थल करिके आप विराजे । सब भगवदी आज्ञा कारी

वेक आपके संग हैं । सो सब सेवा करत ही हैं और श्री-
 आचार्यजी महाप्रभू आप भगवत्सेवा करें । सो श्रीमदनमोहनजी
 तो अपने बडेन के ठाकुर हैं । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के माता
 गीइलम्मगारुजी दक्षिण तें पधराय न्याई हैं सो और श्रीगोकु-
 लनाथजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सासुरें ते पधारे । सो
 श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सुसर पंच पूजा करत हुते ।
 तनमें श्रीगोकुलनाथजी बिराजत हुते सो जब श्रीआचार्यजी
 हाप्रभू श्रीमहालक्ष्मीजी कों लैके पधारे । तब श्रीआचार्यजी
 हाप्रभून के सुसरनें पंच पूजा हती सो संग दीनी जो मेरे तो
 हू और प्रजा तो नाही जो इनकी पूजा करे । तार्ते आप ले
 पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबनकों लेके श्रीगंगाजी के
 तिर विषे पधराये सो च्यारकों तो श्रीगङ्गाजी में पधराये ।
 महादेव, भवानी, सूरज, गणेश, और जुगल श्रीस्वामिनीजी
 सहित श्रीगोकुलनाथजी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सेवा
 तें राखे । सो जब चारोंन कों श्रीगङ्गाजी में पधराये । तब
 तो चारों बोले जो आप ही हमकों न मानोंगे तो जगत में
 हमकों कौन मानेगो, और हमारी पूजा कौन करेगो, तब श्री-
 आचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम तुमकों प्रस्ताव में बुलावेंगे ।
 अब तुम्हारो समाधान करेगे । तब वो प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—सो श्रीगोकुलनाथजी तिनको नाम श्रीआचार्यजी
 हाप्रभू और श्रीमहालक्ष्मी ने गोवर्द्धननाथजी राखे काहेतें जो श्रीगोव-
 र्द्धन इनके श्रीहस्त में हैं और एक श्रीहस्त में संख है, सो संख काहेते
 ते हैं जो जल को आदिदेव है और दोह श्रीहस्त सों बेनुनाद करत हैं ।

सो वेनुनाद करिकें ब्रज भक्तन कों आनन्द देत हैं । यां भांति के श्रीगोकुलनाथजी को स्वरूप है ।

ऐसी रीति सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेल में बास करिकें सेवा करत हैं । अपने जे सेवक भगवदी हैं तिनको सुस देत हैं । वार्तादशम ॥ १० ॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ने ब्रज में श्रीबलदेवजी के और श्रीठाकुरजी के दर्सन कीए सो कैसे दर्सन किये जो रमय करत हैं । सो श्रीबलदेवजी प्रथम प्रगट भये ।

भावप्रकाश—सो काहेतें बलदेवजी हैं सो श्रीठाकुरजी को धाम हैं ? अक्षर ब्रह्म हैं और साक्षात् शेष महा नाम हैं प्रथम सिंघासन शैल्य सिद्ध होइ तब श्रीठाकुरजी सहित पधारे सो श्रीबलदेवजी श्रीठाकुरजी की सब भांतिसों सेवा करत हैं ।

सो श्रीबलदेवजी श्रीगोपीनाथजी होइकें अडेल में सम्बत १५६७ आश्विन कृष्ण १२ के दिन प्रगट भये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तीस वर्ष की वय को अंगीकार किये हते और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम तो नित्य लीला विनोदकृत है । सदा नित्य लीला अखंड विराजमान हैं सो श्रीगोपीनाथजी को प्रागत्य भयो ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कितनेक दिन लों अडेल ही में बिराजे । फिर एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमहालक्ष्मीजी सहित चरखाद्रि पधारे । सो श्रीगङ्गाजी के तीरे हैं । सो उहां साक्षात् भगवान के चरणारविन्द को चिन्ह हैं

तो उहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्थल करिकें चिराजे तो संवत् १५७२ के पौष कृष्ण ६ शुक्रवार के दिवस साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीगोबर्द्धननाथजी । श्रीमन्नन्दराय कुमार श्रीयशोदोत्संगलालित । श्रीब्रजभक्तनके प्राण आधार आप प्रगट भये । कस्तूरी के तिलक सहित । जा समें श्रीगुसाईजी प्रगट भये । ताही समें एक कोड ब्राह्मण श्रीविठ्ठलेश्वरायजी को पधराइ के ले आयो । सो बाही समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू को दीयो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू के घर दोइ रीतिसों श्रीठाकुरजी प्रगट भये । सेव्य सेवक भावसों सो सेव्य सेवक भाव श्रीठाकुरजी आप अंगीकार किये ।

भावप्रकाश—काहेतें जो आप श्रीठाकुरजी की सेवा न करें । तो दैवी जीव सेवा को स्वरूप कहा जानते ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू दैवी जीवन को सेवा करिकेहू बताई । और कहिकेहू बताई ।

सो जा समें श्रीगुसाईजी को प्रागट्य भयो । ता समें अलौकिक रीत को बडो उत्सव भयो । सो वा उत्सव को अनुभव दामोदरदासजी हरसानी । कृष्णदासजी मेघन प्रभृति भगवदीन को और गोपासदासजी गाए हैं जो ।

भावप्रकाश—सेरबिये वहेरे सुगन्ध । और फेरि गाए जो कोईक भागवत ते समें । दास नों दास जाइ वारनैं । वारनैं रखोरें उत्सव जुए ।

“फेरि मानिकचंदजी गाए हैं जो” ।

॥ रामदेवगंधार ॥

सुनि सुत को जसु लक्ष्मणनन्दन दाडी निकट बुलाबी ।

कंचन धार भरे मुक्ता फल भले बसन पहरायो ॥ १ ॥
मन बौद्धित फल सबदिन दीनों कीयो अजाचक दादी ।
मानिकचन्द बलि बलि बदरता प्रीति निरंतर बादी ॥ २ ॥

“और मानिकचन्दजी गाए हैं जो” ।

॥ रागदेवगंधार ॥

बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ हमारे ।
द्वार वसुधा भार हरयो हरि कलियुग जीव उद्वारे ॥ १ ॥
तब वसुदेव प्रह प्रगट होइके कंसादिक रिपु मारे ।
अब श्रीवल्लभ प्रह प्रगट होयके मायाबाद निवारे ॥ २ ॥
ऐसो को कवि है जुग महिवां बरनें गुनजु तिहारे ।
मानिकचन्द प्रभू को सिव खोजत गावत वेद पुकारे ॥ ३ ॥

॥ रागदेवगंधार ॥

शेष कृष्ण नौमी को सुभ दिन पूत अक्काजी जायो हो ।
निज जन मुनि मुनि सब आनन्दे हरखित करति बघायो ॥ १ ॥
नारदादि ऋषादिक हरखित सुक मुनि अति सचुपायो हो ।
भीभागवत विवेचन करिके गूढ अर्थ प्रगटायो हो ॥ २ ॥
कलिके जीव उद्वारन कारन द्विज बपु धरि भुव आयो हो ।
अति उदार भीलश्मशानंदन देत दान मन भायो हो ॥ ३ ॥
करत वेद धुनि विभ महामुनि जात करम करवायो हो ।
मानिकचन्द श्रीविठ्ठल प्रभूको विमलि विमलि जसु गायो हो ॥ ४ ॥

“और विष्णुदासजी गाए हैं” ।

॥ रागदेवगंधार ॥

भयो श्रीगोकुल में जै जैकार ।
भक्त मुधा प्रगटे श्रीविठ्ठल कलियुग जीव निस्तार ॥ १ ॥

महा अघोर कटे या कलिके प्रगट कृष्ण अवतार ।

विष्णुदास प्रभू पर न्यौछावरि तन मन धन बलिहार ॥ २ ॥

“और कृष्णदासजी गाये हैं” ।

॥ रागदेवगंधार ॥

गोकुल में आनन्द भयो है घर घर बजति बधाई ।

श्रीवल्लभ प्रह प्रगट भये हैं श्रीविट्ठल सुखदाई ॥ १ ॥

सब मिलि संग चलो मेरे तुम जो भावे सो लीजे ।

भये मनोरथ मन के भाये अपुनो चीत्यो कीजे ॥ २ ॥

लक्ष्म भयो गोकुल को चन्द्रमा पूजा मन की आस ।

भक्तन मन आनन्द भयो है दुःख हृद भयो नास ॥ ३ ॥

देश देश के भिन्नक गुनीजन रहसि बधावो गावें ।

एक नाचे एक करे कुलाहल जो भौंने सो पावें ॥ ४ ॥

काहे बिलंब करत भैयाहो बेगि चलो उठि धाई ।

श्रीवल्लभ सुतको दर्शन देखे जनम जनम दुःख जाई ॥ ५ ॥

अष्टसिद्ध नवनिध लक्ष्मी ठाडी रहति है द्वारे ।

ताकी ओर दृष्टि करि भरिबें कोव नाहि निहारे ॥ ६ ॥

श्रीवल्लभ करुणामय सागर बांह पकरि गहि लीनों ।

कृष्णदास अपुने दाडी को अमय पदारथ दीनों ॥ ७ ॥

“और छीतस्वामी गाये हैं” ।

॥ रागसारंग ॥

जे वसुदेव किये पूरन तप तेई फल फलित श्रीवल्लभ देइ ।

जे गोपाल हुते गोकुल में तेई अब आइ बसे करि गेइ ॥ १ ॥

जे सब गोप बधू ही जज में तेई अब वेदरुचामई येइ ।

छीतस्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल तेई येई येई तेई कबून संदेइ ॥ २ ॥

“और नन्ददासजी गाये हैं” ।

॥ रागदेवगंधार ॥

प्रागटित सबलसृष्टि आधार । श्रीमद्बल्लभ राजकुमार ॥ १ ॥

ध्येय सदां पद अबुंज-सार । अगनित गुण महिमाजु अपार ॥ २ ॥

धर्मादिक द्वारे प्रतिहार । पृष्टि भक्ति को अंगीकार ॥ ३ ॥

श्रीविद्वल गिरधर अवतार । नन्ददास कीर्तो बलिहार ॥ ४ ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक भगवदी । श्रीगुसाईंजी के जन्म उत्सव को दर्शन करिके । अनेक प्रकार को जस वर्णन किये ।

भावप्रकार—कोठ ऐसो सन्देह करे जो ऐ भगवदी तो सब गीछें आये हैं । और श्रीगुसाईंजी को प्रागटय तो पहलें हैं । तातें ये हिसें गाये । तहाँ कहत हैं जो ऐसो सन्देह न करनो । काहेतें जो, जो भगवत लीला । भगवज्जस और भगवदी नित्य हैं । काहेतें जो सुर-राजजी नन्दरायजी सों कहे हैं । और गाये हैं ।

॥ राममारु ॥

नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो सुनि गोवर्द्धन ते' आयो ।

तुम्हारे पुत्र भयो हो सुनिके' हो अति आतुर उठि धायो ॥ १ ॥

वंदीजन और भिच्छुक सुनि सुनि देश देशते' आये ।

एक पहिलेई आसा लागी बहुत दिनन के छापे ॥ २ ॥

तुम दीने कंचन मनिमुक्ता न्नसा बसन अनूप ।

मोहि मिले मारग में मानो जात कहुँ के भूप ॥ ३ ॥

दीजे मोह कृपा करि सोई जो हो आयो मांगन ।

जसुमति सुत अपने पाइन चलि खेलन आबें आंगन ॥ ४ ॥

कोटि देहु तो परचो रहूंगो विनु देखे नहीं जैहो ।

नन्दराइ सुनि निमती मेरी तब ही बिदा भले' लेहो ॥ ५ ॥

तुम तो परम उदार नन्दजू जो मान्यो सो दीनों ।
 ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सरसाखो कीनों ॥ ६ ॥
 मदनमोहन मैया कहि टेरे यह सुनिकें घर जाऊं ।
 होंतो तिहारे घर को बाढी सुरदास मेरो नाऊं ॥ ७ ॥

भावप्रकाश—सो सुरदासजी तो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू को प्रागट्य भयो है । तब इनको जन्म हैं । और श्रीनन्दराइजी तो हापुर के अन्त में हुते । तब श्रीठाकुरजी प्रगटे पे ऐसैं जानिये जो । भगवदी नित्य हैं । जब जब भगवान अवतार लेत हैं । तब तब भगवदी हू । आवत हैं जश गाइये को । ताहीतें भगवदी गाये हैं जो—

“नित्य लीला नित्य नौतन भुति न पावें पार” ।

श्रीगुसाईजी के जश को वर्णन कोऊ कहां ताई करे ।

“सो छीतस्वामी गाये हैं” ।

॥ रागभैरव ॥

जै जै जै श्रीवल्लभ नन्द । कोटि कला भीवृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
 निगम विचारे न लहैं पार । सो ठाकुर श्रीअज्ञानी के द्वार ॥ २ ॥
 लीला करि गिर घरचो हाय । छीतस्वामी श्रीविह्वल नाथ ॥ ३ ॥

या भांतिसों श्रीगुसाईजी को प्रागट्य भयो । फेरि श्री-
 आचार्यजी महाप्रभू सब कुटुम्ब लैकें आप अडेल बिराजे । अत्र
 सेव्य स्वरूप तीनि भये । श्रीगोकुलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी,
 श्रीविह्वलनाथजी अत्र एक समें । श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रजमें
 पाउं धारे । सो श्रीगोकुल में बिराजत हते । और श्रीनवनीत-
 प्रियाजी गड्जन घावन कें घर आगरेमें बिराजत हुते । सो श्री-
 नवनीतप्रियाजी श्रीआचार्यजी महाप्रभू के मन की जानी,

कहा जानी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून ने यह विचारे जो ।
 सब स्वरूपन के अधिनाइक तो श्रीनवनीतप्रियाजी हैं । सो श्री-
 नवनीतप्रियाजी पधारें तो आछो । हमही नें श्रीनवनीतप्रियाजी
 गज्जन धावन कों पधराइ दीये हैं । और उनसों श्रीनवनीत-
 प्रियाजी लेहि सो वो कछु नांही । तो वो नांही तो कछु
 करत नांही । वो तो दे देहिगो । पर उनकों श्रीनवनीतप्रियाजी
 ऊपर आशक्ति बहुत हैं । श्रीनवनीतप्रियाजी बिना छिनहूँ उनसों
 न रह्यो जात । तातें जब भगवदइच्छा होइगी तब पधारेंगे ।
 सो यह श्रीआचार्य महाप्रभून के मन की जानिकें श्रीनवनीत-
 प्रियाजी गज्जन धावन कों कहे जो मोकों तू श्रीगोकुल लें चलि
 श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास । मोकों पधराउ । सो बाही
 समें गज्जन धावन श्रीनवनीतप्रियाजी कों पधराइके श्रीगोकुल
 आए । सो आइके गज्जन धामन श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों
 कहे जो महाराज श्रीनवनीतप्रियाजी पधारे हैं । तब श्रीआचार्य-
 जी महाप्रभू कहे जो कछु शैज्या सिंघासन सिद्ध नांही
 अकस्मात् कैसे पधराये हैं । तब गज्जन धामन नें कह्यो जो
 महाराज सो तो श्रीनवनीतप्रियाजी जानें, मोकों तो श्रीनवनीत-
 प्रियाजी जैसे आज्ञा कौनो तैसे में कीयो । सेवक कों तो आज्ञा
 ही मुख्य है । और आप मोकों प्रथम ऐसे ही आज्ञा दिये जो
 जैसे श्रीनवनीतप्रियाजी प्रसन्न होहि तैसे ही करियो । मोपे तो
 आपके अनुग्रह तें श्रीनवनीतप्रियाजी आज्ञा करत हैं, बोलत हैं ।
 तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये । गज्जन धावन

ही जैसी आसक्ति श्रीनवनीतप्रियाजी ऊपर हैं तैसी श्रीनवनीत-
प्रियाजी की आसक्ति गज्जन धावन पे हैं । सो श्रीठाकुरजी
गीता में कहे हैं जो—

श्लोक—“येयथामां प्रवद्यतेस्तांतयैवभजाम्यहं” ।

जैसी रीतियों कोउ मेरो भजन करे तैसी रीतियों । में
वाको भजन करत हैं । तार्ते ऐसी ही आशक्ति गज्जनधावन की
श्रीनवनीतप्रियाजी के ऊपर देखिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू
गज्जनधावन को अपुने चरखारविंद के निकट ही राखे । जैसे
दामोदरदासजी हरसानी कृष्णदास मेघन । आपके चरखारविंद
के संग ही सदैव रहत हैं । तैसें गज्जन धावन को हैं अपुने
चरखारविंद के समीप राखे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-
नवनीतप्रियाजी को पधराइ के आप अडेल को पधारे ।

तब श्रीनवनीतप्रियाजी सिंघासन ऊपर विराजे और श्री-
आचार्यजी महाप्रभू गज्जन धावन को आज्ञा दीनी जो तुम
मन्दिर के आगे सदां बैठे रहो । काहेते जो श्रीनवनीतप्रियाजी
इतसों हिले हैं । गज्जन धावन बिना श्रीनवनीतप्रियाजी छिनहूँ
नांही रहत श्रीनवनीतप्रियाजी अनेक भांतियों कीडा गज्जन-
धावन सों करत हैं । कवहुँक हाथी करत हैं, कवहुँक घोरा
करत हैं, कवहुँक गाइ करत हैं, कवहुँक बत्स करत हैं । सो
काहेते जब हाथी करत हैं, तब तो आप ग्रीवा ऊपर विराजत
हैं । जब घोड़ा करत हैं तब पीठ ऊपर विराजत हैं जब गाइ
करत हैं तब अपने पीतांबर सों गाइ को श्रीमुख पोछें । और

पछरा करें । तब इनको पकरि राखें । चलन न देंहि । ऐसे करत करत गज्जन धावन को ऐसो सुख दियो । अब श्री-आचार्यजी महाप्रभून के घर चारि स्वरूप विराजें श्रीनवनीत-प्रियाजी, श्रीविठ्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी, और दामोदरदास कचौज में रहते । सो श्रीद्वारिकानाथजी की सेवा करते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह तें दामोदरदास संभरवालेने भली भांति सेवा कीनी । जैसे राजान के घर सेवा होइ तैसें करें । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो जानें राजा अंवरीष न देख्यो होइ । सो दामोदरदास को देखे । परि वो भर्यादा मारगी हते । और ये पुष्टिमारगीय हैं । इतनों इनमें अधिक हैं । या भांति सों श्री-आचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीमुखतें दामोदरदासजी संभर वाले की सराहना करते, सो जब दामोदरदास संभर वाले श्रीठाकुरजी के चरणारविंद को प्राप्ति भये । तब श्रीद्वारिकानाथजी नाव में विराजिकें, अडेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभून के घर पधारे । अब सिंघासन पर स्वरूप पांच विराजत हैं । श्रीनवनीतप्रियाजी, श्रीविठ्ठलनाथजी, श्रीद्वारिकानाथजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्री-मदनमोहनजी, ये पांचो स्वरूप सिंघासन पर विराजत हैं । भगवदी सब दर्शन करत हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभून के । श्री-गोपीनाथजी के । श्रीगुसाईजी के । या भांतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजत हैं । आप अडेल में विराजत हैं । इति ।

इति श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी की निजवार्ता भावप्रकाश सहित समाप्तम्

❀ अथ ❀

श्रीआचार्यजी महाप्रभून के-

❀ घर की वार्ता लिख्यते ❀



वस्तुनिका—श्रीआचार्यजी महाप्रभून के परम कृपापात्र चौरासी, सेवक परम भगवदी तिनकी वार्ता लिखी । और सेवक तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सहश्रावधि हैं काहेते जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तीनि बेर पृथ्वी पावन करी । और श्रीगुसांईजी जब भगवानदास श्रीगोबर्द्धननाथजी के बालभोगिया तिनसों सामिपी दाम्नी । तब त्याग किए । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास श्रीगुसांईजी सों कहे जो श्रीठाकुरजी ने दैवी जीवन के उद्धार के लिए । श्रीआचार्यजी महाप्रभून को आज्ञा दीनी । तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में अवतार लिये । और दैवी जीवन को अङ्गीकर किए । और दैवी जीव तो बहुत सब सवाहास्य जीव को अङ्गीकार करनो । श्रीआचार्यजी महाप्रभू ने तो तुमको सोंपे और आप तो जीवको अपराध विचारो हो । और जीव तो दोष भरघो है यह बात श्रीगुसांईजी आप अच्युतदास के मुखते सुनिकें श्रीगुसांईजी आप संकल्प किए जो आजु पीछे काहू सों खीजनो नहीं और भगवानदास को हाथ पकरिकें श्रीगुसांईजी आप से आपे और श्रीमुखते कहे जो । सेवा सावधानतासों करियो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक तो बहुत हैं, और श्रीगोकुलनाथजी महाराज आप श्रीमुखते चौरासी सेवकन की वार्ता कही ताको हेत यह जो ये चौरासी सेवक हैं ते मुख्य हैं । जिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप प्रेमलक्षणाभक्ति को दान किए हैं सो कैसे जानिए जो ।

“गोविंद स्वामी गाए हैं” ।

“भक्ति मुक्ति देत सबदिनकों निज जनपर कृपा प्रेम बरसत अधिकाई” ।

सो कृपा प्रेम को कहा स्वरूप है जो । जिनमें भीठाकुरजी साक्षात् याही देहमें बोलत हैं बात करत हैं चहिए सो मांगि लेत हैं और श्रीगोकुलनाथजी सर्वोत्तम की टीका में पद्मनाभदासजी को स्वरूप लिखे हैं । ताते ये चौरासी भगवदी कैसे हैं जैसे भगवान के गुन गायेते कृतार्थ होत हैं तैसे भगवदीन को जसु गायेते जीव कृतार्थ होत हैं । याहीते श्रीशुकदेवजी नवम स्कंध में सब राजान की कथा कही है । सो वो सब राजा भगवदीय हते । ताहीसे प्रथम भगवदी की कथा कहिये तो भगवत्कथा को अधिकार होइ । ताहीते श्रीशुकदेवजी नवमस्कंध में भगवदीन को चरित्र कहिकें, पाछें दशमस्कंध में भगवत् नाम को चरित्र कहे हैं, ताहीते श्रीगोकुलनाथजी चौरासी वैष्णव भगवदीन की वार्ता प्रगट कीनी । और श्रीगोकुलनाथजी नित्य कथा कहते । सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी आप शमोदरदास संभरवाले की वार्ता कहत हते । तब एक वैष्णव ने पूछी जो महाराज आज कथा न कहोगे । तब श्रीगोकुलनाथजी आप श्रीमुखते कहे जो । आजु तो कथा को फल कहत हैं । ताते भगवदीन को अवश्य चौरासी वार्ता कहनी सुननी । जाते भगवद भक्ति होइ । और भीठाकुरजी के चरणारविंद पर स्नेह होइ, श्रीजी सदां प्रसन्न हैं ।

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समे अजुध्या को पधारे । श्रीरामजी के मन्दिर में सो श्रीरामजी, श्रीलक्ष्मणजी श्रीसीताजी और हनुमानजी ए च्यारो हुते ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो मर्यादा पुरुषोत्तमायनमः तब श्रीरामचन्द्रजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभू को अति सनमान भली भांति कोये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू जाने और कोउ

नहीं समझ्यो । ताहींते हनुमानजी कों बुरो लाग्यो जो श्री-
आचार्यजी महाप्रभू श्रीरामचन्द्रजी को मर्यादा पुरुषोत्तमायनमः
ऐसे क्यो कहे डंडोत नहीं प्रणाम नहीं ।

भावप्रकारा—सो हनुमानजी के मन में ऐसे काहे कों आई जो
श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को हनुमानजी को ज्ञान नाही हैं ।
तहां कोउ ऐसे कहे जो हनुमानजी तो श्रीरामचन्द्रजी के अत्यन्त कृपापात्र
हैं । इनको श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को ज्ञान नाही सो कैसे
संभवे ताको हेत यह है जो, श्रीगुसांईजी के सर्वोत्तम में । श्रीआचार्यजी
महाप्रभून को नाम कहे हैं जो ।

श्लोक—“सर्वाज्ञात लीलोऽति मोहन” ।

ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभून की लीला अति गोप्य है । जाकों
आप कृपा करिकें जनावें सोई जानें ।

“ ताहींते भगवदी गाए हैं ” ।

* रागकान्हरो *

जोलों हरि आपन पोन जनावे ।

तोलों सकल सिद्धान्व सुसृति बल पढे गुनें नहीं आवे ॥ १ ॥

सुनि बिरंचि नारायण मुखते नारद को सिख दीनी ।

नारद कही वेदव्यास सों आपुन सो धन कीनी ॥ २ ॥

वेदव्यास ओखध की नाई पठि तन ताप मिटावे ।

ताते पढे सुनि श्रीशुकदेव परीक्षित कों जु सुनावे ॥ ३ ॥

जदपि नृपति सुनि ब्रजकी लीला दसम कही मु शुकदेवा ।

पे सरबातमभाव न उपज्यो ताते करी न सेवा ॥ ४ ॥

श्रीभागवत अमृत दधि मधिकें श्रीवल्हभ सर्वोत्तम ।

करि आवरन दूर निजजन के हाथ दिऐ पुरुषोत्तम ॥५॥

साज सिंगार भोजन नानाविध सेवा रस प्रगटाए।
बुन्दावन निज लीला जनि हरि जीवन स्वाद चखाये ॥ ६ ॥

“और गोपालदासजी गाए हैं जो” ।

मित्व लीला नित्य नौतन भ्रति न पामें पार ।
और कहे जो गाव भ्रति गुणरूप अहर्निशधरें ध्यान विचार ॥
आनन्दरूप अनूप सुन्दर पामें नहीं को पार ।

वेद की भ्रति ऐसैं कहत हैं जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को पार कोऊ नहीं पावे । तो हनुमानजी कहा जाने ।

तातें हनुमानजी कों ईर्षा आई ताही समें श्रीरामचन्द्रजी ।
हनुमानजी के अन्तःकरण की जानी जो हनुमानजी के मन में दोष आयो है । और यह तो मेरो सेवक है, तातें हनुमानजी को दोष दूर करिबे के लिए श्रीरामचन्द्रजी उपाय कीयो कहा उपाय कीनो जो हनुमानजी सों यह कहे जो तुम श्री-आचार्यजी महाप्रभून पास जाउ देखो तो कहाँ विराजे हैं । सो देखि आओ ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरयू गंगा में स्नान करिकें तट पे विराजे हैं । और सन्भया वन्दन करत हैं और सब भगवदी पास बैठे हैं । रसोई को सामिग्री सिद्ध करत हैं । ता समें हनुमानजी आये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन हनुमानजी कों कैसे भये जो । साक्षात् श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप धरिकें बैठे हैं तब हनुमानजी कों सन्देह भयो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप कैसे धरयो । और हनुमानजी दंडौत करिकें अपने श्रीरामचन्द्रजी

के मन्दिर में आये। तब श्रीरामचन्द्रजी ने हनुमानजी से पूछे जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभू के दर्शन करि आयो तब हनुमानजी ने कही जो महाराज दर्शन करि आयो। परि श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आपको स्वरूप धरि बैठे हैं। तब श्रीरामचन्द्रजी हनुमानजी से कहे जो। उनमें इतनी सामर्थ्य है, जो मेरो स्वरूप धरि लेंइ। और हममें इतनी सामर्थ्य नाहीं। जो उनको स्वरूप धरें।

भावप्रकाश—सो याको कारण कहा जो श्रीरामचन्द्रजी से श्रीआचार्यजी महाप्रभू को स्वरूप न धरयो जाय याको हेत यह है। जो द्वितीय स्कंध श्रीभागवत की श्रीसुबोधनी में जहां चौबीस अवतार को श्रीआचार्यजी महाप्रभू निरणव कीये हैं। तहां सब अवतारन के स्वरूप लिखे हैं? कोठ अंस हैं, कोठ कला हैं, कोठ आभरण हैं, कोठ वस्त्र हैं, और श्रीरामचन्द्रजी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। हास्य को स्वरूप हैं। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू को स्वरूप तो, श्रीगुसांईजी आप श्रीसर्वोत्तम में कहे जो। “ श्रीकृष्णस्य ” सो साक्षात् श्रीपूर्णापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तिनके मुखारविंद रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभू को स्वरूप है। सो श्रीकृष्ण के मुखारविंद में तें हास्य प्रगट होत है। और हास्य में ते तो मुखारविंद नाहीं प्रगट होत। ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप धरिलें। और श्रीरामचन्द्रजी ते श्रीआचार्यजी महाप्रभू को स्वरूप न धरयो जाइ। याही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबते अधेक हैं। और सबके मूल रूप हैं, सवनको प्रागट्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनते हैं। और सब रस के भोक्ता हैं और वाकषीस हैं, वाणीहूँ श्रीमुख में रहत है और सब पदार्थ को भोगहूँ श्रीमुखते हैं।

“तार्तों भगवदी विष्णुदासजी गाए हें” ।

वागीशङ्क रराङ्क वरुणपुनि अनुभव उभय एक गुणसं ।

अखिल धरापद् परसि पूतकृत ब्रज यमुना बहरत रुचिरासं ॥१॥

तार्तों श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप अगाध है सो श्रीराम-चन्द्रजी ही जानत हें और परम कृपापात्र देवी जीव तिनकों श्रीआचार्य-जी महाप्रभू अपुनों स्वरूप जनावत हें सर्व लीला सहित साक्षात् श्रीगोव-र्द्धनधर के दर्शन करत हें ।

✽ वार्ता प्रथम समाप्त ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रज में पधारे । सो ब्रज श्रीआचार्यजी महाप्रभून को सर्वस्व है । आपको धाम है । आप सब लीला ब्रज में करी हें तार्तों ब्रज बहुत प्रिय है । सो श्रीगुसाईजी सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम कहे हें जो “ ब्रजप्रियः ” और दूसरो नाम कहे हें जो “ प्रिय-ब्रजस्थितिः ” ब्रज ही जिनकों प्रिय हें । सो एक दिवस श्री-गोवर्द्धननाथजी को सिंगार करिके राजभोग की आरती करि अनौसर करिके आपको स्थल हें । श्रीगोवर्द्धन पूजा के साम्हें लोकर है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विराजे । उहां ही आपकी बैठक है सो ता समें एक वाई वैष्णव हुती सो आन्यौर मं रहती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास आई सो वा वाई कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऊपर बहुत आसक्त हुती सो वा वाई नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती करी जो महाराज मोकों कोई भगवत् स्वरूप पधराइ देऊ । विना सेवा मेरो दिन नांही कटेगो आपके अनुग्रह तें श्रीगोवर्द्धननाथजी दर्शन देत हें ।

तो हूँ करतिहू पे, आप मोकों श्रीठाकुरजी पधराइ देऊ तो हों सेवा करूँ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक स्वरूप श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी को पधराइ दीये । और वार्ई सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो ये बालक हूँ इनको तू सदां जतन राखियो । कभूँ अकेले छिनहूँ मति छोडियो जो अकेले छोडेगी तो ऐ डरपेंगे श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वार्ई सो ऐसैं कही । जो वा वार्ई को मन अहनिंश श्रीठाकुरजी में लग्यो रहे । काहेते जो मन को निरोध मुख है सो वा वार्ई को मन श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप धरयो । सो वा वार्ई को मन एक छिनहूँ श्रीठाकुरजी में ते न निकसे ऐसी वा वार्ई को श्रीठाकुरजी में आशक्ति भई, जो एक छिनहूँ वह वार्ई दूरि जाइ तो श्रीठाकुरजी वाको पुकारे । जो वह वार्ई न होइ तो जैसे लौकिक बालक अपनी माता बिनु दुख पावे । ऐसैं श्रीठाकुरजी करें । सो वा वार्ई के स्नेह बढाइवे के लिये । और जो वह वार्ई घर को काम काज करे तो मन्दिर के आगे बैठिके करे । रंचहू दूरि न जाइ, ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वार्ई को स्नेह दान किये ।

भावप्रकाश—काहेते जो कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों प्रथम पूछो है जो महाराज श्रीठाकुरजी को प्रियवस्तु कहा है, और अप्रियवस्तु कहा है । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभू कृष्णदास सों कहे । सो बोले में बहुत अर्थ कहे सो । जे भगवदीय होहगे ते सब समुझेंगे । सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो श्रीठाकुरजी को दो भगवदीन को स्नेह अति प्रिय है । और गोरस अति प्रिय है, सो

गोरस में दूध इही मात्रान घृत सब आयो प्रथम तो श्रीमुखतें स्नेह काये ता पाछें गोरस कहे सो याकां यह हेत है जो स्नेह बिना सब कछु श्रीठाकुर जी कां समर्थो । ये कछु अङ्गीकार न होइ श्रीआचार्यजी के मारग में स्नेह ही मुख्य है । स्नेह सो रंचकहू बहुत करिकें माने हैं । सो सुरदासजी कहे हैं जो-“ गोपी प्रेम की ध्वजा ” तातें स्नेह सब तें अधिक है और श्रीठाकुरजी कां अप्रिय कहा है । सो आप श्रीमुखतें कहे जो क्लेश श्रीठाकुरजी कां बहुत अप्रिय है काहेतें जो जहां क्लेश रहे । तहां श्रीठाकुरजी कभू न पधारे । काहेते जो आप अनन्दरूप हैं । ताते आनन्द को और क्लेश को परस्पर विरोध है । जहां क्लेश होइ तहां आनन्द न रहे । जहां आनन्द होइ तहां क्लेश न रहे तातें भगवदी अर्हनिश भगवद् जश को यर्णन करे हैं । और भगवान के गुन को गाव करत हैं भगवान को गुन है सो मंगलरूप है सो सदा भगवदी गाये हैं सो क्लेश हमारे निकट न आवे । यह क्लेश ऐसो है जो श्रीठाकुरजी के बहिमुख करत है । जहां क्लेश होइ ताके हृदय में श्रीठाकुरजी कभू न आवे और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे हैं जो श्रीठाकुरजी को धूआं अप्रिय है धूआं बालक कां बहुत असह्य है । तातें वैष्णव कां जहां धूआं होइ तहां श्रीठाकुरजी को न पधरावे । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे हैं जो श्रीठाकुरजी कां भगवदान को द्रोही अत्यन्त अप्रिय है । श्रीठाकुरजी की प्रतिज्ञा है जो मेरो द्रोह करेगो ताकी तो क्षमा करुंगो और मेरे भगवदीन को द्रोह करेगो ताकी तो क्षमा मोसां न होइ । सो आप दुर्वासा के प्रसंग में कहे हैं जो-“अहंभक्त पराधीन” मैं तो भगवदीन के आधीन हूँ । तातें भगवदीन को द्रोही श्रीठाकुरजी कां अत्यन्त अप्रिय है ।

सो या बार्द कां आप दान कीये सो वो बार्द भला भाति सां श्रीठाकुरजी की सेवा करे । रात्रिकां सोवे तो श्रीठाकुरजी के निकट ही सोवे और छिनमें कहे जो महाराज मे बैठीहूँ आप

डरपो मति, और जो रंचकहूँ वा चाई की आंखि लगे । तब श्रीठाकुरजी कहे जो अरी में डरपतहूँ ऐसो श्रीठाकुरजी वा चाई पे अनुग्रह कीनो जो वाको निरोध सिद्ध भयो । अब एक दिवस रात्रिकों श्रीगोवर्द्धननाथजी वा चाई के घर कों पधारे । और वासों कहे जो अरी चाई किवार खोलि तब वानें कही जो में तो उहूँ नहीं । में उहूँ तो मेरो लरिका डरपे । तब कही जो में देवदमन हूँ । मोहूँ किवार खोलि । तब वा चाईनें कहे जो । महाराज आप सवारें पधारियो । में उहूँ तो मेरो लरिका डरपे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ही भीतर पधारे । तब चाईनें उठिकें दंडवत कीनी और कक्षो जो महाराज आप इतनो श्रम काहे कों कीयो । में सवारें आपके दर्शनकूँ आउं हूँ । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होइकें कहे जो हों तोपरि प्रसन्न हूँ । तू कछू मांगि जो मांगे सो देऊं । तब वा चाईनें कक्षो महाराज आप श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह सों, सब कछू दीयो है । और आप जो मोपे प्रसन्न भये हो तो में एक वस्तु मांगू हूँ, इहां श्रीगोवर्द्धन पे न्यारी बहुत हैं सो यह लरिकान पकरि ले जात हैं । सो मेरो लरिका निपट बालक है सो यह मांगत हूँ जो याकों कभूँ ले न जाइ सो यह बात सुनिकें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों रोमांच भयो जो धन्य ए हैं । जिन पर ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को अनुग्रह है जो मो पर इनकों ऐसो स्नेह है इनकों में कहा देउं ऐ मेरी ऐसी सेवा करे हैं ।

जो इनसों उरिण कभू न होऊं । वह बाई श्रीआचार्यजी महा-
प्रभून की सेवक ऐसी भगवदी हती ।

* बार्ता द्वितीय समाप्त *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समें थानेश्वर पधारे ।
सो थानेश्वर के निकट सरस्वतीजी हैं । सो उहां ताई श्री-
आचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिकें पधारते, श्रीआचार्यजी
महाप्रभू सरस्वती के पार न उतरते सिंहनन्द के वैष्णव सब
श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों थानेश्वर आवते, जाको
सेवक होनों हीतो, सो थानेश्वर में आइके हीतो । जाको
ब्रह्मसंबन्ध लेनो होइ, सो ब्रह्मसंबन्ध लेय । सो सासु बहू की
बार्ता में प्रसिद्ध लिख्यो है सो सासु बहू पर ऐसी कृपा हुती
जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखें कहते जो कहा करूं ।
सरस्वती उलंघनी नाही । नाही तो उनको घर जाइके दर्शन
देतो । ऐसी कृपा उन पर करते । जो एक समें श्रीआचार्यजी
महाप्रभू सरस्वती के तीर ऊपर बिराजे हते । वा ठौर मृत्तिका
बहुत सुन्दर हती सो मृत्तिका जलसों भीजी सो श्रीआचार्यजी
महाप्रभू आप वो मृत्तिका लेके वा मृत्तिका को एक स्वरूप
निरमाण कीऐ, सो श्रीबालकृष्णजी उनको नाम धरयो । ता
समें एक वैष्णव सिंहनंद को पास ठाढो हतो । सो वानें श्री-
आचार्यजी महाप्रभून सों बिनती करी जो महाराज मोको एक
स्वरूप पधराइ दीजिये । में सेवा करूं तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू वो जो श्रीहस्त में श्रीबालकृष्णजी को स्वरूप हुतो सो

श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप प्रसन्न होइके वा वैष्णव कों पधराइ दीये । और जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्वरूप को निरमाण कीये, तब वो वैष्णव देखत हुतो । सो ताहीने वाको सन्देह उत्पन्न भयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों वा वैष्णवने चिनती करी जो महाराज इन स्वरूप कों स्नान अभ्यंग कैसे करबाउंगो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो अरे तू ऐसे सन्देह मति करे । जो तेरो मनोर्थ होइ सो सब करियो । सो श्रीबालकृष्णजी कों वह वैष्णव घर पधराइ कें पाट बैठाए । अभ्यंग शृङ्गार भोग सामित्री सब सिद्ध कीयो । बडो वा वैष्णव कों उत्साह भयो । श्रीठाकुरजी वापर अनुग्रह करे सानुभाव जनावें । जो चाहिये सो मांगि लें और श्रीबालकृष्णजी वाके घर में ऐसे क्रीडा करे । जैसे कोउ प्रकृत बालक करे सो वो ऐसे परम कृपापात्र भगवदी हुते । जिनके भाग्य सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीहस्त सों स्वरूप निरमाण कीये, सो वो वैष्णव सेवा भली भांति सों करे ।

✽ वार्ता तृतीय समाप्त ✽

तब एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल पधारे । सो आप श्रीगोकुल में विराजे । और सब भगवदी संग हते । एक दिवस पूरब तें कोउ वैष्णव मिश्री भेट ले आयो । सो आइके श्रीआचार्यजी महाप्रभून कें आगे धरी, सो मिश्री बहुत हुती । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी कूं कृष्णदास मेघन कों और सब वैष्णवन कों आज्ञा दीनी जो मिश्री बेगि

सिद्ध करो । छोटे छोटे टुक । जैसे श्रीमुख में धरे जाई । प्रभू
 को अरोगत में भ्रम न होई । तब सब वैष्णव मिश्री सम्हारन
 बैठे । सो कितने कटोकरा मिश्री सिद्ध भई, सो जितनीक सिद्ध
 भई, सो सब मिश्री श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी को
 समरपी और बहुत बची सो आप श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-
 ठाकुरजी को राजभोग समरपिकें श्रीजमुनाजी स्नान को पधारे ।
 सो वो मिश्री बची हती । सो सब संग लिवाइके आप पधारे ।
 सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू । वो सब मिश्री श्रीजमुनाजी कूं
 समरपी, सो वो वैष्णव जो मिश्री लायो हुतो । सो बाके
 चित्त को स्वेद भयो जो में तो जानी हती जो बहुत दिना ताई
 वह मिश्री थोड़ी थोड़ी चलेगी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो
 सब मिश्री जल में पधराइ दीनी । जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू
 करत हैं । सो आछो ही करत होइगे । जो अंगीकार भई सोउ
 आछी । जो जल में पधराइ दीनी सोउ आछी । ऐसे वो वैष्णव
 विचारे मनमें, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तत्काल बाके मन को
 जानी । श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो साक्षात् ईश्वर हैं ।

सो बा वैष्णव को बुलाए, और बासों श्रीआचार्यजी
 महाप्रभू आप श्रीमुखमें कहे जो ऐसे सन्देह तोकों काहेको
 आयो यह तो सब मिश्री श्रीठाकुरजी अंगीकार कीए तब वो
 वैष्णव बोले जो महाराज जीव बुद्धि जैसे देखे तैसे मनमें आवे,
 आप मिश्री सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजी का भाग समरप साउ
 देख्यो । और श्रीजमुनाजी में पधराई सोउ देख्यो । ततो ऐसे

सन्देह आयो । आप तो साक्षात् ईश्वर हो । हमारे तो श्री-
ठाकुरजी और सर्वस्व आप ही हो और हमने तो सब आपको
समर्प्यो है श्रीठाकुरजी अनुग्रह करेंगे ; सो तो आपके अनुग्रहते
करेंगे । श्रीठाकुरजी हमको कहा जाने । हम सारिखे तो कोटा-
निकोटि जीव परे हैं । आपके अनुग्रहते मेरो भागि सिद्ध भयो
है । ऐसो दैन्य या वैष्णव को देखिके श्रीआचार्यजी महाप्रभून
को बहुत दया आई ।

भावप्रकाश—काहेते जो आप कृपासिधु हैं जो वस्तु काहूसो न
हीनी जाइ सो अनुग्रह करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू वाको हीने काहेते
जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम । सर्वोत्तम में श्रीगुसाईजी
कहे हैं जो—

श्लोक—“ अदेयदानदचरच महोदार चरित्रवान् ” ।

सो ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वैष्णव सो कही जो
देखि या तेरी सामिग्री को कहा उपभोग भयो है सो वा वैष्णव
को श्रीआचार्यजी महाप्रभू कैसे दर्शन करवाये जो श्रीयमुनाष्टक
में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप वर्णन किये हैं जो—

श्लोक—“ सकलगोपगोपीव्रते ” ।

सो श्रीजमुनाजी सकल गोपन सो और गोपीन सो भरे हैं
ऐसे दर्शन श्रीआचार्यजी महाप्रभूने वा वैष्णव को करवाये ।
ऐसी ठौर वाकी सामिग्री को उपयोग भयो । सो वैष्णव दर्शन
करिके बहुत प्रसन्न भयो । श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसो अनुग्रह

वा वैष्णव ऊपर कीये । और श्रीयमुनाजी को स्वरूप प्रगट कीये । जो भगवदी होइ सो श्रीयमुनाजी को ऐसे जानियो ताहीते गोविंद स्वामी श्रीजमुनाजी में पाउ न वोरते श्रीगुसाईजी गोविंदस्वामी को अनुग्रह करिके ऐसे दर्शन करवाये सो श्री-आचार्यजी महाप्रभू की ऐसी अनेक वार्ता हैं । और वैरागको स्वरूप प्रगट किये जो संग्रह न राखनों जगतमें यह सिद्ध भयो ।

* वार्ता चतुर्थ समाप्त *

एक समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू उज्जैन पधारे । सो उहां क्षिप्रानदी है ताके तीर श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजे हते । सो वह स्थल बहुत सुन्दर हतो सो तहां पास सब भगवदी बैठे हैं । श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्ध्या वंदन आप करत हैं । सो ऐसे में बयारि चली । सो कहेंते एक पीपर को पतौवा उड़तो चल्यो आयो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीहस्त सों वा पतौवा को उठाइ लियो और आप सन्ध्या कीये हुते ताको जल उहां परयो हतो सो वह धरती भीजी हती सो वामें वा पीपर के पतौवा की डांडी श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुने श्रीहस्त सों रोपी । सो तत्काल बाही में ते नवपल्लव पतौवा निकसन लागे सो देखत देखत तत्काल एक बडो पीपल को बृद्ध भयो । सो इन दैवी जीवन ऊपर अनुग्रह करिके । अपनी ईश्वरयता प्रगट करी । और जब जगत में अपुनो महात्म्य प्रगट कीनों जो देखो इनमें यह सामर्थ्य हैं । ऐ साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हैं । सब कोऊ ऐसे कहे जो यह कारज मनुष्य सों न बनि आवे

और श्रीआचार्यजी महाप्रभून की जहां बैठक है । तहां छोंकर को वृक्ष है । और उज्जैन में याई पीपर के नीचे आपकी बैठक सिद्ध भई है सो श्रीआचार्यजो महाप्रभू आप उज्जैन पधारे । तब उहां ही विराजे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीहस्त को लगायो पीपल नित्य हैं ।

* वार्ता पंचम समाप्त *

अब एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेल में विराजे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बडे वैभव सों भगवत्सेवा करें । सो लोग बहुत उहां आइके वसे श्रीठाकुरजी के वैभव सों । सेवक वैष्णव जलधरिया टहलुवा । सो तिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ज्ञाति की एक तैलंग ब्राह्मणी आइ रही । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के प्रताप सों वाको निर्वाह तहां आछे चले । जो कोउ वैष्णव आवे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की ज्ञाति जानिकें कछू दे जाइ ! और श्रीआचार्यजी महाप्रभून के घर में प्रस्ताव, विवाह, जनेऊ, छठी, बघाई, जो आवे, तामें वाको सनमान करें । और वाको ऐसो सुभाव है जो । श्रीआचार्यजी महाप्रभून को उत्कर्ष देखके मनमें कुटे । वैष्णव देशतें विदेशतें आवें । सो सब बहू बेटीन को दंडवत करें । सो देखिकें बहू कुटे जो मोकों तो कोउ पूछतहू नाहीं । यह जानिकें बहू ब्राह्मणी अपने मनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों द्वेष माळ्यो । परि कछू बनि न आवे । परि मनमें विचारे जो काहू रीतिसों इनको दुस्त देउं तो आछो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के जलधरिया

श्रीयमुना जल लेवे को जाते । सो एक दिवस वा ब्राह्मणी ने अपने लोटा को जल गागरि पर डारि दीयो । सो वह जलधरिया कुब्जो बहुत सो वो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक हैं कोउ और दुःख देतो आप सहन करें । परि आप बाको दुःख न दें । और वो ज्ञात की ब्राह्मणी हुती । तासो श्रीआचार्यजी महाप्रभून सो जाइके जलधरिया ने कही जो महाराज ! देखो आपकी ज्ञाति की ब्राह्मणी है सो हमारी गागरि पर जानिके अपने लोटा को जल डारि दियो है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो बासो बोलो मति और गागरि ले जाइके भरिण्याओ सो जलधरिया फेरि स्नान करिके दूसरी गागरि भरिण्यायो । ऐसे ही नित्य जाइ जल भरिण्यावे, परि वा बाई की दृष्टि परे तो एकाध गागरि नित्य छुवावे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे वो जलधरिया नित्य पुकारत जाहि । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते एही कहे जो बोलो मति और गागरि भरिण्याओ काहेते जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को एही मिद्वान्त है । आप विवेकधैर्याश्रय में लिखे हैं जो ।

श्लोक—“त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृतम्” ।

परि वो जलधरिया बहुत काहे भये, कहा करें कळू बसाइ नहीं और दूसरो कोउ मारग नहीं जो वापेंडे जल ले आवें तब वो जलधरिया ने श्रीआचार्यजी महाप्रभून सो बिनती कीनी जो महाराज यह बाई बहुत दुःख देति हैं । आप तो बाको वरजत

हीं और आपकी आज्ञा बिना हमसों कछू कखो न जाइ सो महाराज हम कहा करें । भंडार को तो द्रव्य को जान होत है और हमकों न्हानो पडे सो यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दया आई । और आप कहे जो बाकी वस्तु तुम में आओ तब जलघरिया कहे । जो महाराज वह बाई तो मारो मोहडो देखे है । तब ऊपर पानी डारे है सो वो हमकों हछू कैसे देइगी । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तुम जाउ सो आपते तुमकों देइगी । ऐसे में जलघरिया श्रीपमुनाजी जल ही गागरि भरिकें आवत हतो । और वह बाई अपने घर में पोतना करति हती । सो बाकों सुधि आई जो आज में काहू जलघरिया की गागरि छुवाई नाहीं । सो उठिकें बाहर आई जो देखे तो जलघरिया तो आगे निकसि गयो । इतने में पोतना लैके गागरि पर मारयो । सो पोतना गागरि सों चिपटि गयो, सो वो जलघरिया वैसेई लिएं छिएं गागरि श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे धरी और कहे जो देखो महाराज हमकों नित्य वो ऐसो दुःख देत हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप आज्ञा दीनी जो । या पोतना थोइके आछो करिन्याउ सो जलघरिया वह पोतना थोइ लायो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ताके काकड़ा सिद्ध करवाये सो पिछली रात्रि उन काकडान सों, रसोई सब देखी पोती । वा ब्राह्मणी की सत्ता को अंगीकार भयो । और वो ब्राह्मणी ताही समे घर सोइ उठी और बाको ज्ञान भयो जो देखो में कितनों श्रीआचार्यजी महा-

प्रभून को अपराध कियो है । और देखो वो कैसे कृपाल हैं । जो मोसों कझू नहीं कझो और वो सर्वसामर्थ्यवान हैं, इनको ही सब गाम हैं जो ए आज्ञा करें तो मोकों इहाँ ते चाही समे काहि देहिं परि ऐतो साक्षात् ईश्वर हैं । ईश्वर ही इतनों सहनि करे जीव को दोष न देखें होइतो में इनसों जाइके अपराध क्षमा करवाऊँ । तब वो ब्राह्मणी चाही समे श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों जाइके बहुत प्रणपति कीनी जो महाराज में आपको बहुत अपराध कियो है । सों क्षमा करो में आपको स्वरूप नहीं जान्यो । आप तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो । अपना स्वरूप जब आप जीवकों जनावो तब जीव जानें । जीव तो संसार रूपी अंधकूप में परयो है । आप जाको अनुग्रह करिके काढोगे सोई निकसेगो ताते मोकों आप अनुग्रह करिके सेवक करो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ईपरम उदार धापर अनुग्रह करिके बाकों अंगीकार किये । ताहीते सरदासजी गाये हैं जो ।

“ विमुक्त भरे करुणाया मुक्तकी जब देखो तब तैसे ” ।

और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो ।

✽ रागविहागरो ✽

श्रीवल्लभ महासिधु समान ।

सदा सेवत होत सबको अभय पद को दान ॥ १ ॥

कृपाबल भरिपूर हो जहाँ उठत भाव तरंग ।

रतन चौदह सब पदारथ भक्ति दसविधि संग ॥२॥

पुष्टि मारग बडी नौका तरत नहीं अयास ।
 द्विग न आप द्विविध आसुर मरे भीम निरास ॥३॥
 जहां सेत बंध्यो प्रगट करि सुत विद्वलेश कृपाल ।
 मयो मारग सुगम सबको चलत नैकु न आल ॥४॥
 पुष्टि रसमय सुधा प्रकटी दई सुर निज दास ।
 असुर धंचे मतुज माया मोह मुख विधु हास ॥५॥
 छांडि सागर कौन मूरख भजे झीलर नीर ।
 रसिक मनतें मिटी इच्छा परसि चरण समीर ॥६॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किये जो जीव की सत्ता को भीठाकुरजी अंगीकार करें । तब जीवको मन फिरे यह अङ्गीकार की परिचा है । ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगुसाईजी जीव की सत्ता को उपयोग भीठाकुरजी बिपे करवायें । तब तत्काल याको मन फिरि जाइ । और मक्ति होइ और या जीवको ममता महादोष रूप है । सो दोष निवर्त्त जे जाइ सो या जीवमें दोष बड़े दोष हैं । एक अहंता, और ममता, अहंता सो तो में, और ममता सो मेरो, सो में और मेरो, यही दोष बड़े बाधक रूप हैं । सो यह जीव जब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के शरण आवे । तब ये दोष छूटिजाइ । तब ही जानिये जो यह जीव शरण आयो । यह सरन आपे की परिचा है । जीव को यह धर्म हैं जो में और मेरो कादेतें जो यह जीव संसार में परयो है । भीठाकुरजी तो भूलि गये हैं । तातें में और मेरो सूके है । ऐसे जीव महा दोषवंत देखिकें । श्रीआचार्यजी महाप्रभून को दया आई सो तिनके लिये आप प्रगट भये, सो जीव की अहंता और ममता दूरि कीनी । नाम देके तो अहंता दूरि कीनी । और ब्रह्मसंबन्ध करवाइके जीव को ममता दूरि कीनी अहंता सो कहा कहत हुतो जो में सो नामते यह सिद्ध भयो जो में तुम्हारी शरण हूँ, रश्चो ब्रह्मसम्बन्धते यह सिद्ध भयो, जो कछु है सो तिहारो है । मेरो कछु नहीं, में तुम्हारी दास हूँ । सो नपरतन में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप

श्रीमुख्तें कहे जो—“साचितोभवत्ताखिला” साचीवन् होइके रहनों । तो संसार की पीडा याकों बाधित न करे । ताहीते भगवदी सब श्रीठाकुरजी की सत्ता मानत हैं और आप साक्षात् होइके रहत हैं ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मारग है । जाको बडो भाग्य होइगो । सोई सरख आवेगो ।

श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम में ज्ञान और वैराग दोउ अपुने भगवदीन कों सिद्ध करि दिये हैं । ज्ञान तो यह जो एक भगवत् सेवाही कों परम पुरुषार्थ ही जानत हैं । और गृहस्थाश्रम में । श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने भगवदीन कों ऐसो दान कियो है जो घर में स्त्री है, पुत्र भाई हैं, कुटुम्ब हैं, ये श्रीठाकुरजी के चरणारविंद विना काहू सों स्नेह नांही । एक श्रीठाकुरजी सों स्नेह है । सो प्रतिच हीसत हैं घर में तो कोऊ मनुष्य जात रहत हैं । कालवसते तो ताहू समें भगवदी कों श्रीठाकुरजी की सेवाही की चिंता होत है । जो मति मेरें श्रीठाकुरजी कों अवार होइ । भगवदीन को मन श्रीठाकुरजी की सेवा ही में अहर्निश रहत हैं । ताहीते संसार को फ्लेरा भगवदीन कों बाधक नांही करत । ताहीते श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम में ज्ञान वैराग दोउ भगवदीन कों सिद्ध करि दिये हैं । यह परम पुरुषार्थ रूप हैं । यह ज्ञान और वैराग्य दोउ भगवान की प्राप्त के साधन रूप हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनेक दैवी जीवन कों सुगम करि दिये हैं । ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू परम दयाल हैं । अटेल में बिराजे भगवदीन कों अनेक प्रकार सों आनन्द को दान करत हैं ।

✽ वार्ता छठवीं समाप्त ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समें गंगासागर पधारे तब श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी जो तुम अब मेरे पास आओ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विचारे जो श्रीठाकुरजी तो आज्ञा कीनी जो तुम मेरे पास आओ । और हमने तो मनोर्थ

बहुत विचारयो है जो कार्य बहुत करनों हैं। श्रीठाकुरजी की इच्छा तो ऐसी भई है तातें अब कहा करनों। ता मने श्री-आचार्यजी महाप्रभू तृतीयस्कंध की सुवोधनी समाप्त कीनी। और चतुर्थस्कंध की सुवोधनी को आरंभ करिवे को विचार करत हुते। तैसेमें आज्ञा भई, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू चतुर्थस्कंध, पंचमस्कंध, षष्ठमस्कंध, ऐ छै स्कंध छोडिकें दशमस्कंध की सुवोधनी को आरम्भ कीऐ।

भावप्रकाश—यह जानिकें जो दशमस्कंध बडो पदार्थ है। निरोध लीला है। सब को फन है, भगवदीन को बिलास है। लीला समुद्र है। और सब स्कन्ध श्रीशुकदेवजी कहे हैं। और राजा परीक्षित सुने हैं। और दशमस्कन्ध भीठाकुरजी आप कहे हैं। और श्रीठाकुरजी आप ही सुने हैं दशमस्कन्ध की सुवोधनी के आरम्भ में।

पवंभिराम्य भृगुनंदन साधुवादं वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम् ।
प्रत्यर्च्चा कृष्णचरितं, कलिकम्पघ्नं व्याहृत्तुमारभत भागवतप्रधानः॥१॥

या श्लोक की सुवोधनी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप लिखे हैं जो 'वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातं' जो आप ही श्रीठाकुरजी कहे। और आप ही सुने और दसमस्कन्ध में। जन्म प्रकरण में सब ब्रज की कथा श्रीनन्दराहजी, श्रीयसोदाजी, और सब ब्रज भक्तन की कथा है। सो तिनको ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू मारग प्रगट कियो है सो वह मारग सो ब्रज भक्तन को है। श्रीआचार्यजी महाप्रभू ईवी जीवन के लिये प्रगट कियो है। ताहीतें यह विचारकें बीच में षष्ठमस्कन्ध छोडिकें दशमस्कन्ध की सुवोधनी करिवे को आप आरम्भ कीऐ।

सो आप कौन प्रकार सुवोधनी कीऐ श्रीआचार्यजी महा-प्रभू आप कहत जाइ और माधवभट्ट काश्मीरी लिखत जाइ।

सो जहां माधवभट्ट न समझें, तहां लेखनि धरि राखें । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू उतमों ममुझाइकें कहें । तब माधवभट्ट लिखें सो मारग चलत ही ग्रन्थ सिद्ध होइ । भोजन करिकें आप विराजें । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहें सो ऐसैं कितनेक ग्रन्थ सिद्ध भये ।

✽ वार्ता सातवीं समाप्त ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमथुरा पधारे । सो मथुरा में फिरि श्रीठाकुरजी की आज्ञा भई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून को दूसरी आज्ञा दीनी जो तुम बेगि पधारो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने मन में विचारे जो श्रीठाकुरजी तो बहुत उतावल करत हैं । और इहां तो अभी कारज रह्यो है, तातें यह आज्ञा श्रीठाकुरजी की बनि न आवेगी । तातें जैसे बनें तैसे दशमस्कंध निरोध लीला सम्पूर्ण होइ तो आछो याहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो ।

“ भक्तकृपार्थकृतकृष्ण आज्ञाद्वयोल्लंघनायनमः ”

सो अपने भगवदी दैवी जीवन ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को ऐसो अनुग्रह है जो श्रीठाकुरजी की दोइ आज्ञा न मानी ।

भावप्रकाश—और याच्यो दूसरो अर्थ और है जो श्रीठाकुरजी रूप और नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभून को प्रगट करनो हैं सो रूप तो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट कीरे । और नाम तो तब प्रगट कीरे होइ जो

श्रीसुबोधनी प्रगट होइ वो । तातें सुबोधनी प्रगट करिबे के लिये श्री-
ठाकुरजी की दोइ आज्ञा श्रीआचार्यजी महाप्रभून उलंघन कीनी ।

श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून को बेनि बुलावत हैं ताको
कारण कहा श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून को आप ही तो आज्ञा
दीनी जो दैवी जीवन को उद्धार करो । वो मोतें बहुत दिनन के विछुरे
हैं । ऐसी दैवी जीवन के उपर श्रीठाकुरजी को दया आई । सो श्री-
गुसाईंजी सर्वोत्तम के आरंभ में लिखे हैं । और कहे हैं जो ।

श्लोक—“दययानिन महात्म्यं करिष्यन्प्रकटं हरिः” ।

सो श्रीठाकुरजी दैवी जीवन के ऊपर अनुग्रह करिकें । श्री-
आचार्यजी महाप्रभून को भूतल में प्रगट किये । श्रीठाकुरजी की आज्ञातें
श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे । अब श्रीठाकुरजी आज्ञा कीये जो बेनि
पधारे तुम ताको हेत यह है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम
श्रीबल्लभ हैं । सो श्रीठाकुरजी को बहुत प्रिय हैं । ताईतें श्रीआचार्यजी
महाप्रभून को नाम श्रीसर्वोत्तम में श्रीगुसाईंजी “बल्लभाख्यः” ऐसो नाम
कहो है । तातें श्रीठाकुरजी को श्रीआचार्यजी महाप्रभू अति बल्लभ हैं
और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को श्रीठाकुरजी अति प्रिय हैं । परस्पर
ऐसो अनिरवचनीय स्नेह है । ऐसो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को
स्नेह । श्रीठाकुरजी ऊपर हैं । तो श्रीठाकुरजी को छोडिकें श्रीआचार्यजी
महाप्रभू भूतल ऊपर कैसे पधारे ।

याको हेत यह जो स्नेह जो कोउ पदार्थ है ताको यही स्वरूप है
जो आज्ञा उलंघन न करनी । आपुन को दुःख होइ सो सब सहन
करनों, ऐसो स्नेह को रूप है जबतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी सां
पहुँचिके विछुरिके भूतल में पधारे हैं । तबतें सदा विरह को अनुभव
ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू करत हैं सो श्रीगुसाईंजी श्रीसर्वोत्तम में
कहे हैं जो—“विरहानुभवैकार्यं सर्वं त्यागोपदेशकः” तातें श्रीआचार्यजी
महाप्रभू अहर्निश विरह को अनुभव करत हैं । और श्रीआचार्यजी

महाप्रभू आप तो पूर्ण पुरुषोत्तम हैं । और श्रीगुसांईजी बल्लभाष्टक में लिखे हैं जो—“ वस्तुतः कृष्णाएव ” । तार्ते श्रीकृष्णहू श्रीआचार्यज महाप्रभू आप हैं । श्रीगोवर्द्धनधर आप हैं, और पूर्णपुरुषोत्तमहू श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही हैं ।

“ ठौर ठौर भगवदी गाये हैं जो ” ।

* रागगोरी *

श्री लक्ष्मणनन्दन जै जै जै ।

भक्त हेत भगटे पुरुषोत्तम मन बांझित फल निज जन दे ॥ १ ॥

सुख सुखद्वित सुधारस मधिकें गूह भाव दसविध करिले ।

मायावाद कलिद दर्प दल दैवी जीवन दान अये ॥ २ ॥

परिक्रमा मिस परसि पूतकृत भूतल तीरथ राज सवे ।

बसो निरंतर मेरे हिय में दासगुपाल पदांजुज द्वे ॥ ३ ॥

अब जो काहू कों संदेह होइ तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही श्रीठाकुरजी हैं तो आज्ञा कौन कीये, और कौन पे कीये ताको हेत श्रीगुरुदेवजी पंचाभ्याई में लिखे हैं ।

श्लोक—अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमास्थितः ।

मज्जते तादृसीक्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥ १ ॥

तार्ते श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही अपुने दैवी जीवन ऊपर अनुग्रह कीये । साक्षात् पुरुषोत्तम रूप धरिकें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में पवारते सो । सब जगत शरण आवे । सो सब जगत को तो उद्धार श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों करनां नांही । श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो केवल भगवदी दैवी जीवन के किये भूतलमें पधारे । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हैं श्रीगोवर्द्धनधर हैं भगवदीन कों ऐसे ही दर्शन देत हैं और सब जगत तो ऐसे जानत हैं जो ऐ कोड बड़े महा-पुरुष हैं, बड़े तेजस्वी हैं, महापरिबृत हैं, दिग्विजे कीनी हैं, उनकों

श्रीआचार्यजी महाप्रभू को इतनों ही ज्ञान हैं । ये श्रीठाकुरजी को स्वरूप । श्रीआचार्यजी महाप्रभू को है । सो ज्ञान नांही । सो श्री-गुसाईंजी श्रीसर्वोत्तम में लिखे हैं जो—

रसोक—प्राकृतानुकृतिव्याज मोहितासुरमानुषः ।

“ और भगवदी कीर्त्तन में गाये हैं जो ” ।

“ असुर वंचे मनुज माया मोह मुख मृदुहास ” ।

ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू के मृदुहास सों सब आसुरी जीव तो मोहित होत हैं । और दैवी जीवन कों तो सकल लीलाविसिष्ट के दर्शन होत हैं जैसे जैसे भगवदी मनोर्थ करत हैं । ताही प्रकार सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू दर्शन देत हैं ।

✽ वार्ता आठवीं समाप्त ✽

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अडेल में विराजत हते । दशमस्कंध की सुवोधनी संपूर्ण भई । और एकादसस्कंध के चारि अध्याय की सुवोधनी संपूर्ण भई सो वामे नवयोगीन को प्रसङ्ग है । सो श्रीठाकुरजी आप उद्भव के आगे कहे हैं । सो आठयोगीन के ऊपर तो श्रीसुवोधनी भई और नवमो योगी करिभाजन ताके प्रसङ्ग के सुवोधनी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू विचार किये जो ता समे श्रीआचार्यजी महाप्रभू कों श्रीठाकुरजी की तीसरी आज्ञा भई । सो कैसी आज्ञा श्रीठाकुरजी की भई जो—“ तृतीयालोकगोचरः ” सो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभू सों कहे जो । तुम सब जगतते अगोचर रहो । जैसे सब कोई तिहारो दरसन न करे । और जे भगवदी हैं तुम्हारे हैं

तिनकों तो तुम्हारे दरसन नित्य हैं वो एक छिनहूँ दर्सन बिना रहि न सकें वो ऐसे कृपापात्र हैं । सो आगे भगवानदासजी की वार्ता में लिखेंगे अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दरसन नहीं देते ।

भावप्रकाश—ताको हेत कहा । जैसे श्रीठाकुरजी श्रीकृष्णाश्वतार में सब जगत को दर्सन देते । तामें असुरहूँ दर्सन करते, ये भक्त बिना दर्सन को फल न होइ । सो सूरदासजी कहे हैं जो—“भक्त बिना भगवंत सुदुर्लभ कहन निगम पुकारि” जिनको श्रीठाकुरजी ऊपर स्नेह है, और भक्त हैं, और श्रीठाकुरजी के स्वरूप को ज्ञान है, ते अनावतार दसामें हूँ सदैव दर्सन करत हैं । और भगवान की लीला नित्य है । नित्य ब्रज में विहार करत हैं ।

“ सो भगवदी गाए हैं जो ” ।

“ सदां ब्रज ही में करत विहार ” ।

और भगवदी श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक और सब दैवी जीव तिनकों जब जब आरति होत है । तब ही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दर्सन देत हैं ।

“ सो गोपालदासजी गाए हैं जो ” ।

“ आरति हरन चरन अंबुज पद बलि बलि दास गोपाल ” ।

श्रीआचार्यजी महाप्रभून की नित्य अखण्ड लीला हैं ।

सो जब श्रीठाकुरजी तीसरी आज्ञा दीनी, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विचार किये जो कौन रीतिसों पधारनों । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह विचारे जो सन्यास ग्रहण करें । काहेतें जो ब्रह्मण को स्वरूप जो धरे तो ब्रह्मण को च्यारो

आश्रम को अंगीकार करने। सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मचर्याश्रम को अंगीकार किये। ता पाछे श्रीठाकुरजी की आज्ञाते विवाह भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम को अंगीकार किये। सो जब श्रीगोपीनाथजी और श्रीगुसाईजी को प्रागट्य भये। तबलो गृहस्थाश्रम को अंगीकार किये। ता उपरान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभू वानप्रस्थाश्रम को अंगीकार किये। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मचर्य कीये सोउ अलौकिक कीये जो मनुष्य सों न बनि आवे। ईश्वर सों ही बनि आवे, तैसो ही गृहस्थाश्रम कीये आप साक्षात् पुरुषोत्तम के घर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम को प्रागट्य भयो।

“ सो गोपालदासजी गाये हैं ”।

पूर्ण ब्रह्म श्रीलक्ष्मण सुत पुरुषोत्तम श्रीविद्वत्समाथ ।

श्रीगोकुलमां प्रगट पधारचा स्वजन कीधा सनाथ ॥ १ ॥

तैसो ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू वानप्रस्थाश्रम कीये जो साक्षात् ईश्वरसों ही बने। सब पदार्थ विद्यमान हैं। और तिनसों वैराग हैं। और ता उपरान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्यास ग्रहणहू ऐसैं ही कीये जो। तीनों वस्तु त्याग कीये। अन्न जल और संभाषण। सो यह त्रिचारिके सन्यास ग्रहण की आज्ञा श्रीमहालक्ष्मजीते मांगी। काहेते जो स्त्री की आज्ञा बिना सन्यास ग्रहण न होइ सो वो तो आज्ञा दीये नाही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तैसैं ही करत भये। तैसैं कृष्णावतार

में आप कीयो है जो जब पधारिचे को समें भयो, तब च्यारो आढी अग्नि को आब्रत् करि लिए । ताको नाम आब्रताअग्नि हैं । जैसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू कृष्ण अवतार में कीये तैसे ही अब कीये । तब श्रीमहालक्ष्मीजी अग्नि कों देखिकें कहे जो आप निकसो अग्नि को उपद्रव बहुत भयो है, सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों तो इतनों कहवावनों ही हुतो जो निकसो, सो इतनों सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सन्यास ग्रहण करिकें कासी पधारे ।

* वार्ता नववीं समाप्त *

ताको कारण कहा जो कासी है । तहां अभक्तन को वास है । आसुरी जीव बहुत हैं, और श्रीआचार्यजी महाप्रभू जितनी लीला किये । सो सब ताको कारण हैं । तातें अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू । आसुरव्यामोह लीला की इच्छा कीनी हैं । सो आसुरव्यामोह लीला तो तहां होइ जहां आसुर होइ भगवदीन में तो आसुरव्यामोह लीला होइ नहीं काहेतें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भगवदीन कों तो नित्य दर्सन देत हैं । पुरुषोत्तमदास सेठ के घर में बैठक हैं । तहां नित्य दैवी जीव दर्शन करत हैं ! श्रीआचार्यजी महाप्रभू आसुर जीव कों व्यामोह करत हैं ताको कारण कहा ।

भावप्रकार—जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आसुरव्यामोह लीला न दिखावें तो वो आसुर कृतार्थ होइ जाइ तातें वो ऐसे जानत हैं जो जैसे और जीव को जन्म और अंतकाल होत हैं कैसे इन्हें को भयो ।

आसुर जीव ऐसों जानत हैं । जैसे श्रीदेवकीजी के घर भगवान प्रगटे फेरि ब्रज में मय लीला करी डेरि विवाहदिक सख कीने पुत्र पौत्र भये तहां उपरान्त प्रभाम लीला श्रीठाकुरजी कीनी । वोहू आसुरज्यामोह लीला है । और भगवदीन कों तो श्रीठाकुरजी सदैव दर्शन देत हैं । अखंड विराजमान हैं ।

“ ताहीतें भगवदी गाये हैं जो ” ।

नित्य लीला नित्य नौवन श्रुति न पामें पार ” ।

तैसे ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू नित्य विराजमान हैं । भगवदीन कों सर्वत्र दर्शन देत हैं । श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास श्रीआचार्यजी महाप्रभू सदैव दर्शन देत हैं । और अपने घर में भीनवनीतप्रियाजी के पास श्रीआचार्यजी महाप्रभू सदैव विराजत हैं । और ब्रज में श्रीआचार्यजी महाप्रभू सदैव विराजत हैं । और श्रीगुसाईंजी सर्वोत्तम में लिखें हैं जो—

“ गोवर्द्धनस्थित्युत्साहस्तन्लीलाप्रेमपूरितः ” ।

श्रीगोवर्द्धन में ही सदा प्रमन्न विराजत हैं । और श्रीगोवर्द्धनघर की लीला में जिनको आसक्ति है । और जहां तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है । तहां तहां सदैव भगवदीन कों दर्शन देत हैं ।

✽ वार्ता दसवीं समाप्त ✽

अब ता उपरान्त श्रीगुसाईंजी सकुडुम्ब लेकर कासी पधारे । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों । और भगवदीहू संग हते । तब एक समें श्रीगुसाईंजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों प्रार्थना करी जो हमकू कहा आज्ञा होत है । सो श्रीआचार्यजा महाप्रभू तो जा समें सन्यास कों अंगीकार कीये तबतें संभाषण

को त्याग कीये । सन्यासी कों बोलवो उचित नाहीं तब श्री-
आचार्यजी महाप्रभू श्रीगुसाईंजी कों साढे तीन श्लोक सिद्धा
के लिखिकें दीने जो तुमकों यह कर्तव्य है । सो साढे तीन

श्लोक—यदा वहिमुस्ता युवं भविष्यथ कथंचन ।

तदा कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोऽप्युत ॥ १ ॥

सर्वथा भक्षयिष्यंति शुष्मानिति मतिर्मम ।

न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम् ॥ २ ॥

भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्व चैहिकरचसः ।

परलोकश्च तेनायं सर्वभावेन सर्वथा ॥ ३ ॥

सेव्यः स एव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः ।

जो ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभू पहलें प्रगट किये तिन
सबको जो सार पदार्थ हतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अब
प्रगट किये सो कहा प्रगट किये यह प्रगट किये जो अपुनो
स्वरूप हतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप जनाए जो मेरे
ऊपर विस्वास राखोगे । तो सब कार्य सिद्ध होइगो । काल-
बाधा न करेगो । और मेरे चरणारविंद की प्राप्ति शीघ्र होइगी ।
ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू या ग्रन्थ में कहे, सो कहिकें श्री-
आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगङ्गाजी के प्रवाह के भीतर पधारे
श्रीगुसाईंजी बल्लमाष्टक में आप लिखे हैं जो, “ स्वामिन्
श्रीबल्लमाग्ने ” श्रीगुसाईंजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप
अग्नि करिकें कहे हैं ।

भावप्रकाश—सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कैसी अग्नि हैं साचान् पुरुषोत्तम के श्रीमुखतें जो आधि दैविक अग्नि हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक । विष्णुदास द्वार-गल हुते । सो तिननें यह पद गावो है जो ।

* रागगोरी *

धरेई तं विमलहुतासं ।

जातें प्रगट प्रदीप श्रीविट्ठल अमरअमृत तिमर भवनासं ॥ १ ॥
 उठत स्फुलिंग विराट् निज सेवक बचनमूदुधेर मरुत वलिखानसं ।
 अन्न भजन दाधानल चहुँदिस मायावाद मनुज मृगत्रासं ॥ २ ॥
 पित समीप दूरिजन तार्प अनुभव उभय एक गुणभानसं ।
 देधानन जडि अमित समीर बस पुरुषोत्तममुखपद्मविकासं ॥ ३ ॥
 वागीशज्ञ रसज्ञ वरन पुनि अतुल सुभावप्रहत रुचिमानसं ।
 अखिलधरा पद परसिपूत कृत व्रज जमुनां बहरत रुचिरासं ॥ ४ ॥
 श्रीवल्लभ बल्लभ सुत गिरधर नरभूषणमति गूढ प्रकारसं ।
 श्रीलक्ष्मणकुल विष्णुस्थामीपथ्य भुक्ति बचेमंडल कहें विष्णुदासं ॥ ५ ॥

“ और छीतस्वामी गाये हैं ” ।

* रागगोरी *

हरिमुख अनिल सकल सुरफुनि मुख तिन तनवार धर्मधुर लीनी ।
 लेराख्यो सुरलोक भोगफल निज मरजाद भक्ति भलि कीनी ॥ १ ॥
 सुबहित भजन उपासन सेवा भलो मति विमल दोष दुख हीनी ।
 छीतस्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल सब सुख निधि आपनेनको दीनी ॥ २ ॥

ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को आदिदैविक अग्नि को स्वरूप हतो सो वा सभें प्रगट कीऐं जैसे कृष्णावतार में श्रीठाकुरजी तेजोमय रूप धरे । सब ब्रह्मादिक पधराइवे कैं

आए हुते परि वा तेजपुंज के आगें काहू को कछू खबरि न पडी श्रीठाकुरजी अपने सधाम पधारे । तैसें ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू कीऐ श्रीआचार्यजी महाप्रभून की अब ऐसी इच्छा भई है जो अब मेरें सबनको दर्सन न देनों, सो आप अंतःकरण प्रबोध में लिखे हैं जो “ तृतीयोलोकगोचरः ” अगोचर कहा जो यह श्रीठाकुरजी ने आज्ञा करी जो सब जगत को दर्शन मति देऊ जैसे कृष्णावतार में सब कोउ दर्शन करत हते । और थव तो जाकें ज्ञान भक्ति और भगवद अनुग्रह होइ । सो दर्शन सदैव करें । और श्रीठाकुरजी तो न कहूँ आवत हैं । न कहूँ जात हैं । माया को टेरा जब दूरि करत हैं । तब दर्शन होत हैं । और माया को टेरा आडो आवत है । तब दर्शन नांही होत । ताते आविरभाव तिरोभाव सदैव हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास ब्राह्मण कडा-मानिकपुर के । तिनकी वार्ता में लिखे हैं । जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सङ्ग कासी में वैष्णव हते । तिनमें तें एक वैष्णव कडा मानिकपुर में आए । सो उनको अच्युतदास सों बहुत स्नेह हतो । सो वो यह जाने जो अच्युतदास सों मिलें तो यह क्लेश निवर्त होइ । यह कैसी क्लेश है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू दुःख के समुद्र में डारि दोने हैं ।

भावप्रकाश—जैसें श्रीठाकुरजी मथुरा पधारे तब जज भक्तन कं विरहरूपी क्लेश के समुद्र में डारे तैसें ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने भगवदोन कूं ऐसी विरह को दान किये सो काहेतें कीऐ जो । विरह है

सो मुख्य है याहीतें विरह को नाम उतरदल है सो विरह मुख्य है तारें और दुख काहेतें कहत हैं सो याको हेत सूरदासजी कहे हैं जो—

“ हृदयतें यह मदन मूरति छिन न इत उत जात ” ।

और याही की पिछली तुक में कहे हैं जो—

“ सूर ऐसे दर्श कारण मरत लोचन प्यास ” ।

सो नेत्र की प्यास तो श्रीमुख देखे ही सों मिटे ।

“ सो कृष्णदासजी गाए हैं जो ” ।

✽ रागसारंग ✽

गिरधर देखें ही सुख होइ ।

नैनवंतन को यही परम फल बंदन द्वैतिहूलोइ ॥ १ ॥

मरकतमणि और नीलकमल को सर्वमु लियो है निचोइ ।

कृष्णदास प्रभू गिरिधर नागर मिलि विरह दुःख खोइ ॥ २ ॥

सो कृष्णदासहू विरह को दुःख कहे हैं ।

तारें यह वैष्णव यह विचारे जो । अच्युतदास को मिलिए तो यह दुःख निवर्त होइ । जो बड़े भगवदीय हैं । उन परि श्रीआचार्यजी महाप्रभून को बडो अनुग्रह है अपनो स्वरूप उनको पधराइके दीनो हैं । तारें उनसों मिले यह विचारिके कडा मानिकपुर में आये अच्युतदास को मिले तब अच्युतदास इनको अंतःकरण बहुत शुष्क देख्यो । और मुख मुरम्भाइ गयो है । तब अच्युतदास इन वैष्णवन सों पूछे जो । तुम्हारी ऐसी दशा काहेते है ।

✽ वार्ता ग्यारहवीं समाप्त ✽

तब उन कहे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी के पास पधारे ।

भावप्रकाश—सो काहेतें कहे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनको ऐसैं ही दर्शन दीये । जैसे श्रीभागवत महात्म्य में श्रीठाकुरजी की सब रानी द्वारिकातें ब्रज में आईं सो श्रीठाकुरजी को बैकुण्ठ पधारे सुनिकें अति खेद भयो । सो सब ब्रज में आईं सो आगे श्रीयमुनाजी के तीर बिसैं श्रीकालिन्दीजी को दर्शन भयो । सो वो कालिन्दीजी श्रीयमुनाजी के तीर बिसैं बहुत प्रसन्न पैठे हुते । सो उनकों देखिकें यह जो सोलह हजार जो भक्त हैं श्रीठाकुरजी की नायिका सों श्रीकालिन्दीजी सों पूछे जो हमारो तुम्हारो सम्बन्ध तो समान हैं श्रीठाकुरजी सथ के पति हैं । सो बैकुण्ठ पधारे हैं । और तुम तो प्रसन्न हो । और हमको तो क्लेश ने बाधा कीयो है । ताको हेत कहा । तब श्रीकालिन्दीजी कहे, जो ऐसो श्रीठाकुरजी कबहूँ न करे । यह तो आसुरव्यामोहलीला है । श्रीठाकुरजी तो सदां श्रीयमुनाजी के पुलिन बिसैं विहार करत हैं । ताते तुम सब श्रीठाकुरजी के गुन गाव करो तुमकोहू श्रीठाकुरजी दर्शन देखिगे । श्रीठाकुरजी तो नित्य लीला करत हैं ।

ताते तैसे ही अच्युतदास इन वैष्णवन सों कहे जो । श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसी कबहूँ न करे । भगवदीन कों तो नित्य दर्शन देत हैं जिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अङ्गीकार कियो है सो सदैव लीला सहित श्रीठाकुरजी के श्रीआचार्यजी महाप्रभू के दर्शन नित्य करत हैं ।

“ सो गोपालदासजी गाए हैं जो ” ।

जहां नित्य रास बहु परें रे, मध्य नायक नृत्यत घेरें रे ।

जहाँ रत्न नाटत तट सरिता रे, जहां नव पल्लव भूमिहरतारे ।

जहां रत्न धातु गिरि राजेरे ।
 वाजिष्व विविध पेरे बाजेरे ॥
 जहां युवति युथ बहु मांयेरे ।
 श्रीजी श्यामल वर्ण सुहावे रे ॥
 एषी पेरे श्रीगुसांईजी ने जाणोरे ।
 जाणी अहर्निश गाय बसाणोरे ॥
 जे जीव जात होइ कोई रे ।
 तेने तत्क्षण सर्व सुख होई रे ॥
 सेवक जन दास तुम्हारो रे ।
 तेनो रूप बियोग निवारो रे ॥

ताते ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मारग है जो जीव कोउ जाति होइ ताको श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीगुसांईजी के चरणारविंद की प्राप्त होइ । और इहजे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक हैं । इनको कहा कहनों तब अच्युतदाम वा वैष्णव को हाथ पकरिके मन्दिर के किवार खोलि के टेरा सरकायो सो वो वैष्णवने देख्यो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-सुबोधनीजी को पाठ करत हैं । सो दर्शन करत सब दुःख मिटिगयो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों पूछे जो महाराज उहां तो ऐसे दिखाये हो और इहां तो आप ऐसे विराजत हो । याको कारण कहा तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीसुखते कहे जो तुम ऐसो सन्देह मति करो तुमको तो दर्शन सदैव हैं । और वह तो हमने सवन सों टेरा आडो करि दीयो है । अब